# कल्पभाष्य

अर्थात्

# भाषा कल्पसूत्र

श्रील श्रीयुत राजा डालचन्दजी की आज्ञानुसार
कवि रायचन्द ने बनाया उनके प्रपौत्र
राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द ३
की आज्ञानुसार छापा गया ॥

"धर्मं कुरु धर्मं कुरु धर्मं कुरु अपूर्व धर्मं संचयम् प्रचारय धर्मं
...म् प्रताडय धर्मं दुन्दुभिम्" ॥

"घड़ी न लखे जगत की । ... बीर । हम जानी जित धर्म
करि । जौ लग सकल सरीर" ॥

**KALPA SÚTRA**

Translated into Bháshá by Kavi Ráychand under the patronnage
OF RÁJÁ DALCHAND.
Printed and published for his great grandson
RÁJÁ SIVAPRASÁD C. S. I.


लखनऊ
मुंशी नवलकिशोर के छापेख़ाने में
१८७५ ई०
(जिसको चाहिये लखनऊ लिखकर मुंशी नवलकिशोर से मंगाले)

# कल्पभाष्य

अर्थात्

# भाषा कल्पसूत्र

श्रील श्रीयुत राजाडालचन्दजी की आज्ञानुसार
कवि रायचन्द ने बनाया उनके प्रपौत्र
राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द ३
की आज्ञानुसार छापा गया ॥

"धर्म्मंकुरु धर्म्मंकुरु धर्म्मंकुरु प्रपूरय धर्म्म शंखम् प्रसारय धर्म्म ध्वजाम् प्रताडय धर्म्म दुन्दुभिम्" ॥

"घड़ी न लब्भै अग्गली । इंदह अरके बीर ॥ इम जाणी जिउ धम्म करि । जां लग वहइ सरीर" ॥

KALPA SÚTRA

Translated into Bháshá by Kavi Ráychand under the patronnage

OF RÁJÁ ḌÁLCHAND.

Printed and published for his great grandson

RÁJÁ S'IVAPRASÁD C. S. I.


लखनऊ

मुंशीनवलकिशोर के छापेख़ाने में

१८७५ ई०

(जिसको चाहिये लखनऊ लिखकर मुंशीनवलकिशोर से मंगाले)

## कुछ बयान अपने खानदान का और

## कारण इस ग्रंथ के छपने का॥

पुराने काग़ज़ों से मालूम होता है कि जयपुर की अमलदारी में रणथंभौर के बीच जो एक बड़ा मशहूर क़िला है संवत् १०४५ के दर्मियान परमार वंशी शाखेश्वरी श्रेष्ठि धांधल हुआ। उसके कोई लड़का न था जैन धर्म पालक पूज्य श्रीजय प्रभु सूरि गुरु के प्रतिबोध से अछुप्ता देवी की आराधना की देवी ने स्वप्न में वरदिया देवी के हस्तपुट में पच पुष्प और गोखरू था इसी से जब लड़का हुआ उसका नाम गोखरू रक्खा और उसी से गोखरू गोत्र चला। सम्वत् १०९१ में देहरा बनाया जयप्रभु सूरिने प्रतिष्ठा कराई श्रीशेत्रुञ्जय का संघ निकाला। उस का लड़का धर्मण उसका कर्मण उसका पुहपा उसका भग्गा उसका अक्का उसका तोला उसका मेहका उसका हीरा उसका मेघा उसका भाणा। जब संवत् १३३५ में सुलतानअलाउद्दीन खिलजी ने रणथंभौर का क़िला तोड़ा भाणा अपने लड़के नायक समेत बादशाह के साथ चंपानेर चलाआया। नायक का बेटा खीमा उस का जयवन्त उसका बीरा उस का गोरा संवत् १४८५ में अहमदाबाद में आ बसा। उसका बेटा अभयड़ उसका बासा उसका बस्ता उसका वहला उसका शिवसी उसका कर्मसी उसका रांका उसका श्रीवन्त उसका पदमसी। सम्वत् १६८४ में पदमसी साह खंभात में आबसा। वहां उसने श्री कल्याणसागर सूरि से श्रीपार्श्वनाथ स्वामी का स्फटिकमय विम्ब प्रतिष्ठित कराया पांच सोने की कल्पसूत्र और चार मोती के पूठे भेट किये श्रीशेत्रुञ्जय का संघ निकाला पुस्तक भंडार भरा। उसके दो बेटे थे श्रीपति और अमरदत्त। अमरदत्त ने शाह जहां बादशाह को एक ऐसा हीरा नज़र दिया कि बाद

शाह ने प्रसन्न होकर राइ की पदवी बख़्शी और दिल्ली ले गया। उस के दो लड़के ऊए राइ उदयचन्द और केसरी सिंह। राइ उदयचन्द के चार लड़के राइ जगत् मित्रसेन सभाचन्द फ़तहचन्द और रायसिंह। फ़तहचन्द ने क़हत्साली में ग़ल्ला सस्ता करने के कारण मुहम्मदशाह से जगतसेठ की पदवी पाई लेकिन अपनी बहू बेटे समेत मुर्शिदाबाद में अपने मामू सेठ माणिकचन्द नागौर वाले हीरानन्दसाह के बेटे की गोद जाबैठे। हीरानन्दसाह की बेटी धनबाई राइ उदयचन्द को व्याही थी। राइ सभाचन्द के राइ अमरचन्द और राइ अमरचन्द के राइ मुहकमसिंह और राजा डालचन्द। नादिरशाही में घरके दो आदमी क़तल होने के कारण राइ मुहकमसिंह और राजा डालचन्द दिल्ली छोड़कर मुर्शिदाबाद आ बसे। निदान शाहजहां से लेकर मुहम्मद शाहतक बल्कि नामको शाहआलम और नव्वाब वज़ीर आसिफ़ुद्दौला तक बादशाही जवाहिरख़ाने की मुक़ीमी तो ख़ानदानी उहदा रहा लेकिन और भी बऊत से काम भाई बेटे भतीजों के सपुर्द थे कोई मंसबदार था कोई सूबेकी सादर का हज़ारदार था-कोठियां जाबजा जारीथीं ख़ज़ाने हाथमें थे चैनसे गुज़रतीथी धनदौलत रखने को मानो जगह बाक़ी न रहीथी। इस अर्से में बंगाले के सूबदार नव्वाब नाज़िम क़ासिमअली ख़ांने ज़ुल्म पर कमर बांधी रअय्यत तंगआई ज़नाने में हरदम ख़ौफ़ लगारहताथा कि नव्वाब बेइज़्ज़त न करडाले नाचार अंगरेज़ों से जामिले रुपये की मदद दी नव्वाब पर चढ़ालाये नव्वाब को ख़बर होगई राइ मुहकमसिंह का परलोक होचुकाथा राजा डालचन्द और जगतसेठ फ़तहचन्द के पोते जगतसेठ महताबरायको पकड़ मंगाया और क़ैद किया। घरमें सलाह ऊईकि राजा डालचन्द अपने बाप के अकेले हैं और जगतसेठ फ़तहचन्द की औलाद बऊत पस पहरेवालों को मिलाकर राजा डालचन्द के बदल जगतसेठ महताबराय के चचेरे भाई सरूपचन्द तो क़ैदख़ाने में चलेआये (क्या समय था!) और राजा डालचन्द वहांसे

भागकर बनारस में नव्वाब वज़ीर सूबदार अवध की हिमायत में आबसे। क़ासिमअलीख़ां इतनाही जानताथा की दो भाई जगतसेठ क़ैद हैं जब भागा तो दोनों को साथ लेलिया मुंगेर पहुंचकर तीरों से मारडाला। चुन्नीनाम एक खिदमतगार साथ था जुदा होने को बहुत समझाया न माना जब नव्वाब तीर मारता था सामने आ खड़ा होताथा मानो दोनों भाइयों की ढाल बनताथा जब चुन्नी मरकर गिरलियाहै तब दोनों भाइयोंके तीर लगाहै (कैसे नौकर थे!) हमारी दादी कहतीथीं कि उस काल जनाने में सबलोग बारूत बिछाकर बैठेथे कि जो नव्वाब के आदमी बेइज़्ज़त करने को आवें आग लगाकर उड़जावें परन्तु भगवान की कृपा से जल्दही शहरमें अंगरेजों की डौंड़ी पिटी लोगों के जी में जी आया सुखाधान फिर लहलहाया। यह राजा डालचन्द हमारे घराने के मानो भूषण होगये अजब पुरुष थे तत्वज्ञान और योगाभ्यास के प्रभाव से कहते हैं कि उनके पांव के नीचे चींटी नहीं मरती थी खेचरी सिद्ध हुईथी जिह्वा भृकुटी के मध्य तक पहुंचतीथी आसनादिक और धोती नेती वज्रोली की क्या बातहै सब सिद्धथी और खेचरी ही मुद्रा करके देह त्याग किया संस्कृत पारसी अरबी बङ्गला ब्रजभाषा अच्छी तरह जानतेथे ज्योतिष और वैद्यक में भी निपुण थे बहुतेरे ग्रन्थ नये रचे बहुतेरे तर्जुमा अर्थात् भाषान्तर हुए हाथी घोड़े की सवारी लकड़ी बांक पटा तीरंदाज़ी गाना बजाना तैरना सब में पूरे थे घड़ीसाज़ की क्रिया बढ़ई की सुनार की लुहार की जड़िये की पटुए की बेगड़ी की दर्जी की चाटोंज की मुलम्मासाज़ की मुसव्विर की सारी क्रिया अपने हाथ से कर सकते थे और फिर वैसेही उदार और शूर भी थे जिस समय राजा चेतसिंह और वारन् हेस्टिंग्ज़का बखेड़ा हुआ नव्वाब इबराहीम अलीख़ां ने कहला भेजा कि हम वारन् हेस्टिंग्ज़ की रिफ़ाक़त के बाइस नाहक़ मारेजाते हैं उसी दम जनानी डोली भेजकर चुपचाप बुलवा लिया और अपने मकान में छुपा रक्खा ऐसे समय

में कौन किस के साथ दोस्ती निभाता हैं और साहस करके अपनी जान खतरे में डालता है। उनके बेटे राजा उत्तमचन्द ने जिन्होंने लखनऊ वाले राजा बछराज की बेटी ब्याही थी पुत्रहीन होने के कारण अपनी बहिन बीबी रत्नकुंअर के बेटे बाबू गोपीचन्द को गोद लिया और उन्हीं के बेटे राजा शिवप्रसाद सितारैहिन्द (३) ने अपने दोनों पुत्र कुंवर सच्चित्प्रसाद और कुंवर आनन्दप्रसाद की बहुएं और अपनी बहिन बीबी गोविन्दकुंवर के खातिर जो जैनधर्म की निरन्तर अवलम्बी हैं इस ग्रन्थ को कि जबसे राजा डालचन्द ने भाषा में बनवाया था एकही प्रति घर में रहा था उद्धार करके अर्थात् छपवाके अमर किया जो पढ़ें सुनें दया करके असीस दें कि धर्म में रति रहे परलोक सुधरे और कुबुद्धि कभी पास न फटकने पावे शुभंभूयात् ॥

श्री वीतरागायनमः ॥

# अथ कल्प भाष्य लिख्यते ॥

चौपाई ॥

जै जै जैन धर्म हितकारी । संघ चतुर्विधि जिहि अधिकारी ॥
साध्वी साधु श्राविका श्रावक । यही चतुर्विधि संघ प्रभावक ॥
नराकार सो धर्म बखाना । जाके बारह अंग प्रधाना ॥
वदन पंच प्रानरु है हाथा । बुधि चित आतम है पद साथा ॥

दो० रत्नत्रय जासौं कहैं । ज्ञान दरस चारित्र ॥
धर्म भूप नर रूप कौ । कहिये वदन पवित्र ॥
हिंसा मिथ्या वाद अरु । चोरी मैथुन बाध ॥
और परिग्रह कौ तजन । पंच महाव्रत साध ॥
ये कहिये ता पुरुष के । पांचौं प्रान प्रमान ॥
दान सीलतप भावना । दोनौं हाथ बखान ॥
दान दया तीजौ दमन । ये जे तीन दकार ॥
बुद्धि चित्त आतम लहौ । ता नर कौ आधार ॥
बिनयबिवेकविचारजुत । अरु निश्चयबिवहार ॥
येई ता नर धरम के । चरन बरन सुखसार ॥
धर्मसिरोमनि सुभसमय । पर्व पजूसन जान ॥
ताकी मिति विस्तार सौं । भाखौं सुनौं सुजान ॥

चारि मास चौमास के । दिवस एकसौ बीस ॥
उत्तम मध्यम सत्तरह । अधम पचास बुधीस ॥
अधिकमासजोहोंयतौ । ताकी गिनती नाहिं ॥
आसाढ़ी पून्योहितें । दिनगिनगिनतीमाहिं ॥
सुथलस्वच्छ पांकलरहित । थंढ ली बिनु होय ॥
सूछम जीव न ऊपजै । निर्जन थंढिल सोय ॥
औरसुरालसुभिच्छजहं । भिच्छा सुलभाहोय ॥
बैद भलौ औखद सुलभ । जहां पाइये सोय ॥
गृहपतिसधनसअन्नजहं । सुजन समागम जान ॥
स्वाध्याय गोरस सुलभ । और रहित अपमान ॥
ऐसे तेरह गुन सहित । औगुन रहित सुदेस ॥
भूमि पाय सुख बास है । बसै साध धर्मेस ॥
भादौं असित तिरोदसी । आदिआठदिनजोय ॥
सुदी पंचमी अंत दिन । पर्व पजूसन सोय ॥
इन आठौं दिन मैं भतो । जिनजनसनसुखहोय ॥
कल्पसूत्रकौ अर्थ सत्र । बरनि बखानै सोय ॥
आठदिवस विस्तारकरि । येई अरथ निदान ॥
सुभइतिहास समेत अरु । सह दृष्टांत बखान ॥
आठ दिना मैं पंचव्रत । करैं करावैं संत ॥
जैन चतुर्विधि संघ के । परंपरा कौ तंत ॥
मनके थिर परनामकरि । दान सील तपभाव ॥
अष्टम तपआचरन करि । यथाशक्ति चितचाव ॥
अठयें दिन के अंत मैं । कलपसूत्र सिद्धांत ॥
बारह सै बारह सहित । हितकरिसुनैनितांत ॥
मुनिवरसोपड़कमनकरि । आपुसमैं सब लोक ॥
खिमैं खिमावैं परसपर । वरसदोष तजिसोक ॥
जैसे पूरब काल मैं । नागकेत इतिहास ॥
व्रतप्रभाव तैं जिनलह्यो । अचल परम पद बास ॥

## अथ नागकेत कथा ॥

### चौपाई ॥

चन्द्रकांति नगरी इक राजै । विजयसेन जह नृपति विराजै ॥
शांत दांत श्रीकांत सेठ जहं । धर्म सील गुनवंत बसे तहं ॥
जाको सुभ श्री सखी सिठानी । गुन वय रूप सील जन मानी ॥
ताके गर्भ अर्भ इक भयो । पूरब पुन्य आय फल दयो ॥
आनद मुदमय सेठ सिठानी । पर्व पजूसन नियरौ जानो ॥
आपुस में मिलि भाखन लागे । पूरब पुन्य जगत के जागे ॥
हमहूं अब अष्टम तप धारैं । जन्ममरन कौ दुखनिरवारैं ॥
यहधुनिसुनिसिसुहूं चितधास्यो । जातिस्मरितपकरनविचास्यो ॥
पर्व पजूसन दिन आयो जब । सेठ सिठानी व्रत कीनौ तब ॥
तज्यो माय कौ पय बालकहूं । लखिदुखपायोपितुपालकहूं ॥
सिसुकोमलतन तप ताप न सहिसकैं । मुरछिपस्योधरनीपरगिरिकैं ॥
सेठ विकल ह्वै बैद बुलायो । चल्यो नहिं उपचार करायो ॥
तब निरास ह्वै बालहि छाड्यो । पितादुखित ह्वै मरनौ माड्यो ॥
सो निपुत्र घर भयो जानि नृप । अर्थ लैनकौ छांडि दई छप ॥
क्रूर दूत धन लैन पठाये । ते सब सेठ द्वार पर आये ॥
सिसु तप बल इन्द्रासन चाल्यो । अवधिज्ञान तबइन्द्रसभाल्यो ॥
सिसु पूरब भव की सब जानी । सभा प्रमुख सो सबै बखानी ॥
वनिक पुत्र हो यह पूरब भव । अपरमात के दुःख दह्योदव ॥
सोदुख तिन निजमित्र सुहृद सौं । कह्योसह्यौनहिंतिनभाखीयौं ॥
पूरब सुकृत न संचित तातैं । यह दुख लहत अपरमातातैं ॥
यह सुनि तिन तपकारन विचास्यो । अतिसुभध्यानहियैमें धास्यो ॥
पर्व पजूसन नियरैं आयो । ताकौंव्रतकारिहौं मनभायो ॥
धारिध्यान नृप गृह में सोयो । द्वेषदृष्टि तिहि माता जोयो ॥
दीपक बारन के मिस आई । ता त्रन गृहमें आगि लगाई ॥
सो जरि मरि श्रीकांत सेठ घर । पुत्र होय जनम्यौ सो नरवर ॥
यह कहि सुरपति निजजन प्रेरे । राजदूत तिन किये अनेरे ॥

सुरपति हू नरपति ढिग आये। आय कही क्यों दूत पठाये ॥
राजनीति की नृप है साखी। सुरपतिसौं यह भाखा भाखी ॥
जागृहस्थ को जियै न बालक। ताके धन कौ राजा मालक ॥
सुनि सुरपति सिसु कथा सुनाई। पूरब भवकी सब बतलाई ॥
यों कहि ताबालकहिं जिवायो। नागकेत तिहि नाम बतायो ॥
पुनि सुरपति निज धामसिधारे। नृप हू अपने जन निरवारे ॥
उत्तर क्रिय पितुकी सुतकीनी। धरममरनविधिसिरधरिलीनी ॥
आठै चौदस ब्रत प्रति मासा। षट ब्रत चातुर मास निवासा ॥
पंच महा ब्रत पालन लाग्यो। धर्म प्रभाव तासु जसजाग्यो ॥
इक दिन राजा इक जन मारयो। सिर कलंक चोरीकौ धारयो ॥
सो दुर्गति लहि ब्यंतर भयो। अपनौ बैर नृपति सौं लयो ॥
दीठ अगोचर तिन निस चारी। लात एक राजा कौं मारी ॥
रुधिर वमन करि नृप भू गिरयो। सभासदनलखिअचरजकरयो ॥
पुनि तिन व्यंतर सिला संवारी। नगर मान लांबी बिस्तारी ॥
ताहि हाथ लै नभदिसि भाग्यो। नगर लोगपर पटकनलाग्यो ॥
नागकेत अंगुरी पर लीनी। तपबलदूरिफेंकितिहि दीनी ॥
दूरि दुःख नृपहू कौ कीनौ। व्यंतर भाजि भयो बल हीनौ ॥
यह प्रताप सब तप कौ लहियै। निश्चयकरि तपकौपथ गहियै ॥

दो० यह संबत्सर पंचमी। अन्य मती हू लोक ॥
ऋषिपंचम कहिब्रत करत जगमैं होय असोक ॥
आसाढ़ी पून्यौंहि तैं। दिन पचास वौं जोय ॥
बढ़ै न तामैं एक दिन। घटै तु घटती होय ॥

अथ ऋषि पंचमी कथा ॥

दो० धम्मिल सुतद्विज एकबर। पुष्पवती यत पाय ॥
रहनलग्यौसुखसौंसमय। पास तात अरु माय ॥
मरिजनमैं सुत सदन मैं। एक सुनो एक बैल ॥
बरस भयो पूरन सुअन। गही श्राद्धकी गैल ॥
ब्रह्म भोजके हित सुत। स्वच्छ बनाई खीर ॥

ताहि मुंघि अहि विषबमन । करि सरक्यौ धरि धीर ॥
सो निहारि तिहि क्रूर करी । विपुल अनर्थ बिचारि ॥
दौरि जुठाई खीर सो । लखि द्विज दोनौं मारि ॥
मारि तोरि ताको कमर । गोसाला मैं बांधि ॥
विप्र जिवाये प्रीति करि । खीर दूसरी रांधि ॥
ताही दिन ता बैल कौं । तिहि द्विज तेली ऐन ॥
वहन हेत भाड़ै दयो । सब दिन तिहि दुखदैन ॥
मुख मैं छींका बांधि कै । फेर्यो कोल्हू साय ॥
सांझ भये आयो सदन । बदन मलीन अनाय ॥
आपुस मैं मिलि वृषशुनी । निज निज विथा सुनाय ॥
कथा सकल दुखकी कही । बेदन विपुल बलाय ॥
कटि टूटनकी उन कही । सहन भूख इन प्यास ॥
लहि निरासता अन्न तैं । दोऊ भये उदास ॥
सुन्यो सकल संवाद यह । ता द्विज ने धरि कान ॥
जान आपने मात पितु । अति पछताय निदान ॥
भोजन दै तिन दुहुनकौं । ऋषिन पास द्विज जाय ॥
कह्यो सकल वृत्तान्त जो । सुन्यो सुअन समुभाय ॥
अरु पूछी कर जोरि प्रभु । जेहि विधि कुगति नसाय ॥
मात पिता सदगति लहैं । सो भाषिये उपाय ॥
सुनि बेदन रिषि गन सकल । अनुकंपे लखि दीन ॥
दया दीठ हग भरि कहे । बचन सुधा रस लीन ॥
पूरबभव इन दुहुन मिलि । कीनी केलि अकाल ॥
ताते पायो जनम इन । वृषभ शुनी कौ हाल ॥
अब भादौं सुदि पंचमी । ऋषि पंचमि जिहि नाम ॥
ता दिन सयम सनेम ह्वै । ब्रत करि आठौ जाम ॥
अनखेडो हलकी धरा । तामैं अन्न जु होय ॥
आपहिं तैं उपजै बिपन । ता दिन खैये सोय ॥
तातैं इनकी कुगति मिटि । संगति लहि है जान ॥

सुनि द्विज त्यौंही करि पितर। पठये सुरग निदान ॥
ऐसैं या सुभ दिवस मैं। और मति के लोक ॥
तप करि जगत्रय ताप हरि। सुकत लहत तजि सोक ॥
यातैं जे जिन धरम रत। साधु साधवी जोय ॥
हित करि श्रावक श्राविका। व्रत करि निरमल होय ॥
कल्पसूत्र कौ पाठ अरु। अर्थ समझि सुनि कान ॥
मरम धरम को पायपद। परम लहै निरवान ॥

दृष्टांत कथा ॥

दो० तृतिय रसायन गुन सकल। कलपसूत्र त्यौं जान ॥
ताहू की बिस्तार सौं। कहैं कथा सुनि कान ॥
भओ लाख अभिलाख करि। इक न्टप कैं सुत आय ॥
चही तासु आरोगता। न्टप त्रय बैद बुलाय ॥
तिन मैं तैं इक बैद नैं। निज औषध गुन भाखि ॥
कह्यौ मातरा एक मैं। हरैं रोग यह राखि ॥
पै अरोग नर जो भखै। यह भेषज तिहि काल ॥
नखसिख तैं सो नर सकल। होय रोग मैं हाल ॥
सुनि राजा ता बैद कौं। तुरतैं कियो बिदाय ॥
सोयौ सिंह जगावनो। भलो न यह है राय ॥
बैद दूसरै पुनि कह्यो। निज औषध गुन आय ॥
रोग हरै रोगीनु कौ। बिन रुज कछुन बसाय ॥
ताहू कौ कीनौ बिदा। दृथा समझि नर राय ॥
अग्नि मांहि हबि होमिक्यौं। करनौ भसम सुभाय ॥
तब पूछ्यो न्टप निज निकट। तीजौ बैद बुलाय ॥
तिन निज औषध कौ सुगुन। ऐसैं दियौ बताय ॥
रोग हरै आरोग कौं। अधिक पुष्ट करि देय ॥
रीझि न्टपति बहु धन दियो। बैदहि औषध लेय ॥
जैसो औषधि तीसरी। कल्प सूत्र त्यौं मानि ॥
पाप हरै दुखक्षय करै। पुन्य बढावै ज्ञान ॥

तीरथ श्रत्रुञ्जय सकल। तीरथ मैं ज्यों सार ॥
अभय दान ज्यों दान मैं। मंत्रन मैं नवकार ॥
ब्रह्मचर्य ज्यों ब्रतनमैं। बिनय गुनन के माहिं ॥
नियमन मैं संतोष तप। छमा सरीखो नाहिं ॥
तत्वन मै सम्यक्त त्यों। पर्व्व पजूसन जान ॥
चिन्तामणि सुरधेनु ज्यों। धेनु रत्न मैं मान ॥
सीतासतियनमाहिंअरु। गीताग्यानन माहिं ॥
छायाधर तरुमांहि ज्यों। कल्पवृच्छकी छांहि ॥
त्योंहीं सब सिद्धांत मैं। कल्प सूत्र सिद्धांत ॥
सब आगम के सारकौ। सार निहारि नितांत ॥
महा बीर निरवान तैं। छठैं पाठ सुख सार ॥
भए बाहु स्वामी सुखद। चौदह पूरब धार ॥
नवमैं पूरव माहिं तैं। कीनौ यह उद्धार ॥
वर अठयौं अध्यैन सुभ। दस स्रुत कंध मझार ॥

अथ दस कल्प वर्णन ॥

दो॰ कल्पअर्थ आचार है। सो दसविधिको जान ॥
प्रथम अचैल उदेस है। सय्या तर त्रय मान ॥
राजपिण्ड क्रतिकर्म ब्रत। जेष्ट प्रतिक्रम आठ ॥
मास कल्प पजूशना। यहै कल्प दस पाठ ॥
आदि अंत जिनसाधकौं। दसौं नियत ये कल्प ॥
चारिनियतजिनमध्यकौं। छहअनियत वै कल्प ॥
ते छह कहे अचेल अरु। प्रति क्रमन उद्देश ॥
राज पिंड पर्जूसना। मास कल्प तजि शेष ॥
शय्या तर ब्रतआचरन। ज्येष्टत्व क्रति कर्म्म ॥
बाइस जिनके साध को चारि। नियत यह धर्म्म ॥

अचेल ॥

दो॰ देव दूष पट इन्द्र जो। जिन कांधै धरि देय ॥
सो गिरिपरैअचैल तब। वस्त्र रहितकहि तेय ॥

यातैं जीरन चैल लहि । आदिअंत जिन साध ॥
सेतवस्त्र लैं तन धरैं । सोऊ साध अवाध ॥

अथ उद्देश का ॥

दो० साधु हेतु उद्देश करि । करै गृही अहार ॥
आदिअंतजिनसाध कौं । उचितन सोनिरधार ॥
एकै साध विशेष हित । जो उद्देश आहार ॥
सो न लेयसब साधु लैं । बाइस जिन बिवहार ॥

अथ शय्या तर ॥

दो० जो श्रावक चौमास मैं । साधु रहन हितवास ॥
देय ताहि आगम कहै । शय्या तर परकाश ॥
ता शय्या तर सदन को । लेय न साधु अहार ॥
थितियकल्पआचारयह । चौविसजिनबिवहार ॥

अथ राज पिण्ड ॥

दो० नृप देशाधिप सदन कौं । लेब न साध अहार ॥
आदिअंतजिनसाधकौं । अतिअनुचितनिरधार ॥

अथ कृति कर्म ॥

दो० गुरु वंदन अरु पडिकमन । नित्यकर्मयह होय ॥
गुरुलघुता सब साधुकी । दिक्षा क्रम तैं जोय ॥
करैं परस्पर वंदना । गुरु कौं लघु सब साध ॥
गुरु लघु साधहिं साधबो । यह कृत कर्म अवाध ॥

अथ ब्रत ॥

दो० पंच महाब्रत आचरन । आदि अंत जिन साध ॥
मध्य जिनेसर साधके । चारै भेद अवाध ॥
मानत मैथुन कौं सकल । ते परिग्रहके मांह ॥
चारै ब्रतही मैं गिनत । ते मैथुन की छांह ॥

अथ ज्येष्ट ॥

दो० आदि अंत जिननायके । साध सदिक्षा होय ॥
मांस खिमन करि पंच ब्रत । पालैं जानौ सोय ॥

मध्य जिनेसर साध सब । दीच्छा ही लै फेर ॥
पंच महा व्रत आचरैं । जैनागम विधि हेर ॥

अथ प्रतिक्रमण ॥

दो० आदि नाथ जिन वीरके । साधसांझ अरु भोर ॥
दुहुंकाल पडिकमन करि । ध्यावैं आतम ओर ॥
मध्य जिनेसर साध कौं । जब कछु लागे दोष ॥
ताकौ संभव जानि कैं । करैं पडिकमन पोष ॥

पर्य्यूषणा ॥

दसवौं पर्व पजूसना । प्रथम कह्यौ विस्तार ॥
कल्प सूत्र जामैं पढ़ै । सुनै सकल सुख सार ॥
आदि अंत जिननाथ के । साध यथा विधि याहि ॥
करैं तथा विधि आज लौं । साध आचरन ताहि ॥
आदि अंत जिननाथ के । साध दोयविधि जान ॥
सरल मूढ़ अरु बक्रजड़ । होय सुभाव निदान ॥
बाकी जे बाईस जिन । तिन के साध सुछंद ॥
सरल प्रग्य ते होय सब । तिन कौ ग्यान अमंद ॥

अथ सरल मूढ़ दृष्टांत ॥

तहां प्रथम दृष्टांत सुनि । सरल मूढ़ कौं एह ॥
समझिन सरल सुभाव तैं । तिनकौं बिनु संदेह ॥
कौकण देशीसाध इक । काउसग्ग तप लीन ॥
गुरु पूछी तिहि विमल की । बोल्यो साध अधीन ॥
दया चिन्तवन करत हो । जब हौ गृह को बास ॥
सब कारज हौं करत हो । अब तौ भयो निरास ॥
कृषि करि तब हौं भरत हौ । सब कुटुम्ब को पेट ॥
अब कैसें कै जियत है । सो मन बड़ो खखेट ॥
गुरु तब बोले साधु सौं । [illegible] चिन्तौ न अयोग ॥
गृही कर्म कौ [illegible] । साधु जनन कौ रोग ॥
मिथ्या दुष्कृत दी[illegible]ये । कीजै शुभ परनाम ॥

तहत मानि तैसैं कियो । पायो मन बिश्राम ॥
सरल मूढ़ अरु बक्र जड़ । दोउन कौ दृष्टान्त ॥
अब भाषौं बिस्तारकरि । तिन कौ भेद नितान्त ॥

अथ सरल मूढ़ जड़ बक्र दृष्टांत ॥

सरल मूढ़ जड़ बक्र है । साध गोचरी हेत ॥
गये बिहरि फिरि राहमें । बिरमि गये निज खेत ॥
गुरु पूछी जब बिलम की । कही राह मैं आज ॥
नट नाटक देखत भयो । एतो बिलम समाज ॥
गुरु सुनि भाषी साध को । जोग न लखिबो नाच ॥
सरल मूढ़ सुनि अबन यह । ह्वै है बोल्यो सांच ॥
पै भाषी जड़ बक्र यों । यह तो गुरु की चूक ॥
नट नर्तन पहिलै न क्यौ । तुम बर्ज्यौ करि कूक ॥
फेर नटी के नाच मैं । इक दिन रह्यो लुभाय ॥
गुरु सुनि दोषे तब लगे । भाषन अपनी राय ॥
सरल मूढ़ बोल्यो तबै । सकुचि जोरि द्वै हाथ ॥
फेर चूक हम तें भई । कीजै नाथ सनाथ ॥
दूजै बोल्यो बक्र जड़ । अपनी लखत न चूक ॥
नट नाटक बर्ज्यौ हमैं । नटी कही कब कूक ॥

अथ जड़ बक्र दृष्टान्त ॥

पुनि केवल जड़ बक्र पर । औरौ इक संवाद ॥
पिता पुत्र कौ सीष दै । कह्यो याहि रखि याद ॥
बड़े कहैं सो कीजिये । फेर न दीजै ज्वाब ॥
बोल्यो सुत सुनि समभिकै । योहीं करिहौं बाब ॥
घर तें निकसत एक दिन । सुत सौं कह्यो सुनाय ॥
तात बंद करि राखियो । द्वार कपाट लगाय ॥
सुनि लगाय दीने तुरत । घर के द्वार किवार ॥
सोय रह्यो सुख सदन मैं । जब आयो पितु द्वार ॥
रह्यो पुकारि पुकारि अति । गरौ फारि हिय हार ॥

सुनो तदपि बोल्यो न सुत । खोले नाहिं किंवार ॥
तब सो पितु चढ़ि भीत पर । चढ़ि कूद्यो घर माहि ॥
बैठ्यो लखि सुत क्रोध की । छई द्दगन मैं छांह ॥
सुत बोल्यो तुम हो न तब । भाषी सन्मुख होय ॥
गुरु कौं ज्वाब न दीजिये । रिस क्यों कीजत लोय ॥
चौथे आरे मांहि जे । बाइस जिनके साध ॥
सरल प्रग्य ते होत हैं । काल सुभाव अबाध ॥
समझि करैं सिगरी क्रिया । ज्ञानवन्त ते होय ॥
विनयवन्त बलवन्त सब । धीरजवन्ते सोय ॥
रहैं दिगंबर विनय मैं । तन मैं नेक न नेह ॥
आतम सौं तनमैं रहैं । बहैं भार लौं देह ॥

रुजु प्रग्य दृष्टान्त ॥

तिनहूं पै दृष्टान्त यह । नट नाटक कौ सांच ॥
गुरु मुखतैं जब उन सुनी । लोग न लखिबो नांच ॥
नटनाटक हू तिन तज्यो । नटी नाच्य हू फेर ॥
नाच साच सब तजि दयो । गुरुबच सुमिरि सुहेर ॥
उत्तम मध्यम अधम ये । भाव काल बस चक्र ॥
सरल मूढ़ रुजु प्रग्य अरु । तीजौ है जड़ बक्र ॥

अथ ग्रन्थानुक्रमण ॥

॥१० प्रथम मंत्र नवकार । अर्थ सहित या ग्रन्थमैं ॥
ता पाछै अधिकार । महावीर कल्यान कौ ॥
पुनि श्रीपारस नाथ । नेमनाथ अधिकार अरु ॥
कीन्हैं ग्रन्थ सनाथ । आदिनाथ अधिकार कहि ॥
अन्तराल बिस्तार । ता पाछैं थबिरावली ॥
कही जैन मतसार । साध समाचारी बहुर ॥
कल्प सूत्र सिद्धान्त । ताकी ह्यां लौं पीठिका ॥
कारन बखान नितान्त । अब निज ग्रन्थारंभ भनि ॥

इति पीठिका समाप्तः ॥

ओं नमो रिहंताणम् । नमो सिद्धाणम् ॥
नमो आयरियाणम् । नमो उज्झायाणम् ॥
नमो लोए सव्व साहूणम् । एसो पंच नमुक्कारो ॥
सव्व पावप्पणासणो । मंगलाणंच सव्वेसिं ॥

पढमंहवय मंगलम् ।

सो० मंगलीक नवकार । चौदह पूरब सार यह ॥
हरन अमंगल भार । बरन मंगलाचरन अब ॥
नमो प्रथम अरिहंत । भागवंत भगवंत प्रभु ॥
आठ कर्म्म जयवंत । अष्टादश दूषण रहित ॥
चौतिस अतिसय साथ । चौंसठ सुरपति सेव्य जो ॥
ऐसे जिन जननाथ । हाथ जोरि वंदन करौं ॥
दूजै सिद्ध प्रसिद्ध । ज्ञान प्रबुद्ध प्रबोध कर ॥
देत ऋद्धि नव निद्ध । तिनहिं बन्दना कीजिये ॥
जिनलहि पन्द्रह भेद । और आठ गुनही बऊरि ॥
आठ करम कौ खेद । तजि दीनै तिनकौं नमौं ॥
तीजैं जे आचार्य्य । त्रिकालग्य त्रय ताप हर ॥
छत्तिस गुण के कार्य्य । कारण तारण कौ नमौं ॥
चौथैं रहित उपाधि । उपाध्याइ जप तप क्रिया ॥
सकल असाधहिं साधि । सावधान तिनकौं नमौं ॥
ग्यारह अंग उपंग । बारह जे सब शास्त्र के ॥
पढ़ैं पढ़ावैं संग । द्वादश अंग अभंग वर ॥
पुनि पंचम नौकार । नमस्कार जासौं कहैं ॥
सकल साधु सुखसार । जिन कल्पी कल्पी थविर ॥
सत्ताइस गुनवान । जेते ढाई द्वीप मैं ॥
चारित लै सुज्ञान । भये तिन्हैं वंदन करौं ॥
परमेष्टी नव कार । येई जिन जन शास्त्रके ॥
सकल पाप संघार । होत जाप जाकौ कियैं ॥

अथ पंच कल्यानक ॥

अब पांचों कल्यान । कहि बरनो चितदै सुनौ ॥
परम धरम की खान । भरम मिटत भवभवनु को ॥
पंच कल्यानक सार । च्यवन जनम चारित्र पुनि ॥
ज्ञान मुक्ति आधार । चौबिस तीरथ नाथ के ॥
महाबीर तिहि मांह । चरम तिर्थंकर को अधिक ॥
इक कल्यानक छांह । गर्भाकर्षण इन्द्र कृत ॥

अथ काल प्रमाण ॥

चौपाई छंद ॥

काल विभाग जैन मत जानौ । छह आरे करि भेद बखानौ ॥
पहिलौ सुखम सुखम कहि नाम । ताकी अवधि सहु बिश्राम ॥
कोड़ा कोड़ चारि जे सागर । ताकी उपमा जोग उजागर ॥

अथ सागर प्रमाण ॥

दो० पल्योपम कौ मान अब । पहिलै करौं बखान ॥
लांबी चौड़ी भूमि खनि । इक इक जोजन जान ॥
तितनी हीं औंड़ी खनौ । ऐसी खात बनाय ॥
ठांसि भरौ तिहिं जुगलिया । बाल बाल कतराय ॥
चक्रवर्त के कटक तें । दाबैं दबैं न सोय ॥
सरित सलिल तापर बहैं । स्रवै न जलकण जोय ॥
बाल अग्र को परम अनु । प्रति सौ बरस निकाल ॥
होवै रीतौ खात जब । सो पल्योपम काल ॥
पल्यु जु कोड़ाकोड़ दस । सागर मान बखान ॥
जैनागम परमान कहु । एतौ सागर मान ॥
सागर कोड़ाकोड़ जब । बीस गुनौ मिति होय ॥
काल चक्र तब होय सो । पूरौ जानौ सोय ॥

चौपाई ॥

पहिलै सुखम सुखम आरे के । कहौ सकल गुण ता वारे के ॥
जनैं जुगलिया तहं सब नारी । सायहिं इक बारौ इक बारी ॥

यद्यपि एक कूष तैं उपजैं । पैते दूलह दुलहनि निपजैं ॥
तीन कोस की तिन की काया । पल्योपम त्रय आयु बताया ॥
भूख लगै तीजैं दिन तिनकों । भरै पेट इक अरहर जिनकों ॥
उनंचास दिन पितु अरु माता । तिनके पालन लालन राता ॥
कल्प वृक्ष फिर तिनकों पोषैं । यथा इच्छ तिनकों संतोषैं ॥
इक सत छप्पन पसुरी तनमैं । पहिलै आरे मैं यों जनमैं ॥
दूजौ आरौ सुखमा नाम । कोड़ा कोड़ तीन को धाम ॥
सागर ओपम ता सौ भाषैं । तिनके युगलिन की सुनि साषैं ॥
कोस दोय तन द्वै पल्यायू । दोय दिवस पाछैं ते खायू ॥
बेर मान आहार सभालैं । मात पिता चौंसठ दिन पालैं ॥
कल्प वृक्ष पुनि तिनकौं लालैं । तिनकी पसुली की सुनि चालैं ॥
इकसत अट्ठाइस ते राखैं । अब तीजौ आरौ सुनि साखैं ॥
सुखमा दुखमा नाम अनूपं । कोड़ कोड़ द्वै सागर ओपं ॥
कोससमान तन जासु युगलिया । पल्योपम इक आयु सुबलिया ॥
इक दिन अंतर करैं अहारा । मान आंवले के तिहिं आरा ॥
उन्निस दिवस मातुपितु पालैं । कल्प वृक्ष फिर तिनकौं लालैं ॥
चौंसठ पसुली तनमैं जानौ । यों तीजौ आरौ परमानौ ॥
दुखमा सुखमा चौथौ साधौ । काल मान तीजौ को आधौ ॥
पै तामैं इतनौं कम चहिये । सहस बयालिस बरसैं कहिये ॥
जुगल धर्म्म इहि आरे नाहीं । नित्य भूख व्यापै तिहि माहीं ॥
कल्प वृक्ष दैवे ते रहैं । कर्महि तैं जीवन निरवहैं ॥
पंचम आरा दुखमा नामा । जामैं नेक न सुख बिस्रामा ॥
सहस इकीस बरस जाकी मिति । बरस एक सौ बीस आयु गति ॥
साढ़े तीन हाथ तन माना । दिन द्वै बेर भूष दुख नाना ॥
अंत समय इहि आरे माहो । जैन धर्म्म थोरौ रहि जाहो ॥
दुख सह आचारज गच्छेसा । नाम फाल्गुनी साध्वो बेसा ॥
नागिल सावक और स्राविका । नाम सत्य श्रीबर प्रभाविका ॥
चरम काल इहि आरे लहिये । चतुर संघ याही सौं कहिये ॥

छठवौं दुखम दुःखमा नामा । सहस इकीस बरस मिति तामा ॥
एक हाथ तन मित अरु जामैं । सोरह बरस सरस वय तामैं ॥
लोक कुरूप कुधर्म कुकामी । अगति अलज्ज अचैल अदामी ॥
नव बरसी तिय गर्भप्रकासी । घर बिन जन गिरिगुहा निवासी ॥
मत्स्यासी जन कुत्सित कर्मी । छठवैं आरे को यह धर्मी ॥
छठवें पहलै दूजै आरैं । जैन धर्म नहिं तिनकैं वारैं ॥
इकतैं छहलौं क्रम करि चहिये । उत्सर्प्पिनी काल तिहि कहिये ॥
फिरि छहतै इकलौं उलटो क्रम । अवसर्प्पिनी काल कौ आगम ॥
दुहू काल मिलि बारह आरे । सागर बीस कोड़ को डारे ॥
काल चक्र इक याको कहिये । जैनागम मत ऐसे लहिये ॥
चरम काल तीजे आरे मैं । अरु चैाथे पूरे वारे मैं ॥
चैावीसौं जिनवर अवतरे । ज्ञान योग तप बपु गुण भरे ॥
कुल इच्छाक गोत कास्सप जे । इकइस जिनवर तामैं निपजे ॥
अरु हरिबंश बंश के माहीं । गैातम गोत मांहिं तिहि ठाहीं ॥
दोय तिर्थंकर औरो भये । मुनि श्री सुव्रत नेम छबि छये ॥
बरस पछत्तर याके जबै । आठ मास साढ़े पुनि सबै ॥
चैाथे आरे के जब रहे । तेईसौं जिनवर निरबहे ॥
चरम तिर्थंकर तब अवतरे । महावीर स्वामी गुण भरे ॥
इनहीं कौं कछु करि बिस्तारा । प्रथम चवन अब कहैां सुढारा ॥

अथ श्रीमहावीर स्वामी चवन कल्यानक ॥

चैापाई ॥

ग्रीषम ऋतु सित मास असाढ़ैं । छठ तिथि निशि निशीथ नहिं बाढ़ैं ॥
देवलोक तैं च्यवन बिचास्यो । देव योनि तजिबो निरधास्यो ॥
बीस सागरोपम वय सजिकै । शुभ बिमान पुष्पोत्तर तजिकै ॥
देवस्थित भव पूरण करिकैं । मनुष योनि कौ हित चित धरिकैं ॥
जम्बूद्वीप भरथ छिति माहीं । ब्राह्मणकुण्ड ग्राम तिहिं ठाहीं ॥
ऋषभ दत्त द्विजबर की घरनी । देवा नंदा सुबरन बरनी ॥
मति श्रुति अवधि ज्ञान संग लैकै । ताके गर्भ चवे सुखदैकै ॥

सूछम चवन समय नहिं जान्यो । करिके चवन सबै पहिचान्यो
ताही निशि तिनि देवा नंदा । चौदह सुपन लखे सुख कंदा
अति उदार अति आनदकारी । अद्भुत मंगलीक हित धारी ॥
सो लखि लहि अति मोदित भई । आनद युत ह्वै पति पै गई ॥
प्रथम जोरि कर बिनय सुनायो । पुनि अंजुलि सौं सीस छुवायो ॥
पाछै सबै बिवस्था कही । जो कछु सुपन मांह छन लही ॥
कहि ताको फल पूछन लागी । भागवंत सुहि करौ सभागी ॥
तबपतिनिजमतिगतिअनुमितकरि । तिनसुपननकोआशैचितधरि ॥
अति हर्षित आनंदित ह्वैकै । मोद भई ह्वै सुख सरसै कै
प्राणप्रिये कहि तियसौं भाख्यो । दई दयो चितको अभिलाख्यो ॥
बड़ो अलभ्य लाभ तुहि ह्वैहै । सुद मंगल आनद हित पैहै ॥
चार्‍यो बेद गनित गुण जेते । जोतिष के सब लहिहै तेते ॥
अरु इतिहास पुराण ग्यान गुन । बैदक काव्य छंद सिच्छा पुन ॥
आगम अगम निगम गुण ग्यानी । तेरैं गर्भ अर्भ मैं जानी ॥
पियजिय की तिय जबयों सुनी । मुदित भई इकतैं सतगुनी ॥
आस पाय पति पास न छंड्यो । हास बिलास भोग ह्त मंड्यो ॥

अथ इन्द्र वैभव वर्णन ॥

चौपाई ॥

तेहीं समय सुखद तिहि काला । इन्द्र देव तन कौ भूपाला ॥
बज्र जासु को आयुध कहिये । ऐराबत गज बाहन लहिये ॥
जाकी सभा सुधर्मा नामा । लाख बतीस बिमान सुधामा ॥
मुख्य धरम अवतंस बिमाना । तेंतिस सहस देवगण नाना ॥
सात अनीक सैन सैनापति । असुर गंध्रप गण अगनित अति ॥
लोक पाल सब आगे ठाढ़े । बैठ्यो राज सिंहासन गाढ़े ॥
कुण्डल मुकुट कटक उर माला । अंगदादि भूषण मणिजाला ॥
चामर छत्र बीजना राजै । नाटक गीत बाद्य धुनि छाजै ॥
जिहि तप करि यह वैभव पाई । सो मैं तोकौं देऊं बताई ॥

अथ कार्त्तिक सेठ कथा ॥

मुनि सुव्रत्ति स्वामी के वारैं। पृथ्वी भूषण नगर मझारैं ॥
प्रजापाल नृप ताको राजा। प्रजा सीस पर सुखद विराजा ॥
तापस एक तहां चलि आयो। तिन तप बल सब कौं बिरमायो ॥
राजा प्रजा सबै तापस घर। दरस हेत आवैं नित उठ कर ॥
कार्तिक सेठ एक व्रत धारी। सुबस बसैं तिहि नगर मझारी ॥
सो श्रावक नहिं ताके गयो। ताते तापस द्वेषित भयो ॥
पारन दिन नृपसौं तिन कह्यो। कार्तिक सेठहि हम नहिं लह्यो ॥
सेठ पीठ पायस की थारी। तो हम पारन करैं तुम्हारी ॥
सुनि नृप सेठहि बेग बुलायो। कीनो जो तापस मन भायो ॥
सेठ पीठ पायस की थारी। गरमा गरम लाय कै धारी ॥
लाग्यो तापस पारन करने। लागी पीठ सेठ की जरने ॥
तापस निज कर नाकहि छ्वैकै। सेठहि सैन नैन की दैकै ॥
अति अपमान ठानि मुद ठायो। जानि सेठ मन अति पछितायो ॥
जो पहिले मैं चारित लहतो। तो इतनो दुख काहे सहतो ॥
ऐसे बार बार चित माहीं। सोचि सेठ जग जानि वृथाहीं ॥
निज अपमान सेठ लहि मनमैं। चारित तुरत लियो जिनजनमैं ॥
तिहिसंग सहस अठोतर श्रावक। भये जती अति परम प्रभावक ॥
संथारा लैकै तन तज्यो। सेठ सुधर्म इन्द्र पद भज्यो ॥
मरि तापस ऐरावत भयो। सुरपति निज वाहन करि लयो ॥
तब तिन गज द्वै मस्तक कीने। इन्द्रौ दोय रूप धरि लीने ॥
ऐसे जेते सिर गज करै। सुरपतिहु तेते वपु धरै ॥
यों गज गर्ब हीन करि दीनो। बिबस होय तब भयो अधीनो ॥
सुइ इन्द्र यह वहु भव जाको। सुर नर मुनि भय मानत ताको ॥
अवधिज्ञान करि तिन जब जान्यो। जिनवर चव मनु जोनि प्रमान्यो ॥
मुदित होय आनंद अति पायो। आसनते उठि तिहि दिस धायो ॥
सात पैंड चलि कियो प्रनामा। नमोर्हंत यों कहि सिर नामा ॥

अथ इन्द्रस्तुति ॥

तुमहो ज्ञान जोग के स्वामी। तप विराग करि परम कामी ॥

पुरुष प्रधान लोक हित कारी। दया धर्म समकित परभारी
भुक्ति मुक्ति दायक भगवाना। सरनद अभयद मगद सुजाना॥

अथ मेघ कुमार कथा॥

मेघ कुमारहि ज्यों जिन स्वामी। सुमग दिखायो पूरन कामी॥
ताकी कथा कहौं अति प्यारी। जिनजन गन की आनद कारी॥
श्री जिनवर स्वामी भगवन्ता। एक समय विहरत वनसन्ता॥
विचरत स्रेनक सुत सौं भेटे। बोधि ताहि भव दुःख खखेटे॥
अंत द्वारपर थल तिहि दीनौ। रहन लग्यो गुरु वचन अधीनौ।
तहां साधु बहु आवैं जावैं। गमना गम संघट्ट बढ़ावैं।
मेघकुमार राज स्रेनक सुत। भयो गमन आगम तैं दुख युत
तब उन अपनो बिभव बिचारी। सदन सेज सुख ससि सुख नारी।
हाव भाव भर भुज भरि भेटनि। सब बिधि कौ सुख सार समेटनि।
एतैं सुख तब नींद न आवत। सो अब ज्यां इतनौ दुख पावत।
यातैं फिरि अपनौ घर लहिये। साधुपनौ दुख असह न सहिये॥
यहमति चित धरि गुरु पै आये। गुरु बिन भाखैं मन की पाये॥
कह्योवत्सयहदुख नहिं सहिकैं। चहतरह्योफिरिगृहसुखलहिकैं॥
ऐसी मति कबहूं नहिं कीजै। यह केतौ दुख जाहि न धीजै॥
पूरब भव जेते दुख सहे। धरम मरम हित जात न कहे॥
अब बिस्तारि कहौं सुनु मोसौं। पूरब जनम करम गुन तोसौं॥
गिरि बैताढमाहिं करिवर तूं। भयो हजार करिन कौ बरतूं।
छह रदवारौ मत मद वारौ। मेरु मान अति ऊंचौ भारौ॥
आयो ग्रीषम भीषम काला। बन मैं लगी दवानल ज्वाला॥
दव डर तैं तब तूं तहं नस्यो। निर्जल सर पंकिल मैं फस्यो॥
तहां एक अरि करिवर आयो। तिन तुहि करि आघात दुखायो॥
सहन कियो तैं अति दुख ताकौ। सातदिवस नहिं लहि साताकौ॥
इक सत बीस बरस वय भरिकैं। बिंध्या चल मैं जनम्यो मरिकैं॥
चारि दांत कौं हाथी सरज्यो। अरुन बरन जातैं गिरि लरज्यो॥
ताके और सात सै हाथी। अनुचर ह्वै विचरैं तिहि साथी॥
पूरब भव दव दुख जो पायो। जातस्मर तैं सो सुधि आयो॥

सोविचारिचितधरितिनवरकरि। भूमि एकराखी विनुत्टनकरि॥
इकदिन बनघन फिरि दव लागी। जन्तु श्रेणि बन की डरि भागी॥
भागि कहूं जब ठौर न पाई। तिहि अचिन भुव जाइ समाई॥
गजवरहूं तिहि थल भजिआयो। ज्यों त्यों करि तहं जायसमायो॥
फस्यो अनेक जीव संघट मैं। हलि चलि सक्यो न ता संकट मैं॥
ता गज कौ जब तन खुजलायो। खुजलावन कौ चरन उठायो॥
सो पग थल सूनौ नहिं पायो। ससा एक भजि तिहि थल आयो॥
ताहि देखि गज अति अनुकंप्यो। चरन धरन मैं जैहै चंप्यो॥
जीव दया ब्रत चित प्रतिपास्यो। फेरि न चरन धरनि पै धास्यो॥
ढाई दिन लौं त्योंहीं रह्यो। जब लगि सो दावानल दह्यो॥
दव के शांत जबै सस सरक्यो। पद पीडा तैं गज हिय दरक्यो॥
भूख प्यास दुख तापर बाढ्यो। गिस्यो भूमि गज दव दुख डाढ्यो॥
पूरन करि सौ बरसी आयू। त्यागि दयो तन अति सतभायू॥
तिहि तप स्रेनिक राज सदन मैं। मेघकुमार आय तुम जनमैं॥
तेही पुन्य साध पद पायो। अब क्यों कातर ह्वै अकुलायो॥
एकै जीव हेतु तब तैसे। भूख प्यास दुख सहे अनैसे॥
सो अब जगत पूज्य साधन तैं। दुखी गमन आगम बाधन तैं॥
ऐसौ तोहि वत्स नहिं चहिये। जौ तुहि चहत परम पद लहिये॥
यों गुरु बच सुनि मेघकुमारा। निहचल ज्ञान लह्यो निरधारा॥
हाथ जोरि गुरु पद सिरनायो। प्रभु बूड़त तुम मोहिं बचायो॥
अब जिहि मांहिं चित्त ब्रतमेरो। रहै साधु सेवा मैं घेरो॥
दरस परस नित उनको पाऊं। निसि दिन चरन साधु के ध्याऊं॥
साधु चरन रज सिर पर राखौं। उनके बदन सुधारस चाखौं॥
ऐसी मति मोहिं देहु दयाला। सुनि तोषे गुरु परम कृपाला॥
एव मस्तु तासों गुरु भाख्यो। तबतें तिन तप ब्रत दृढ़ राख्यो॥
तप प्रभाव तन तजि तिहि थाना। भयो देव लहि विजय बिमाना॥
पुनिविदेह थल चढ़ि छबि छायो। तप प्रताप तें मुक्ति सिधायो॥
श्रीगुरु कुंवरहि पन्थ दिढ़ायो। कुपथ कूपमैं गिरन न पायो॥
यातैं जीव दया ब्रत नीकौ। पालै सफल जनमता जीकौ॥

ऐसे गुरु जन के हितकारी । तारन तरन भरन भयहारी
काम क्रोध लोभादिक जितने । राग द्वेष ममतादिक तितने
जिन जीते जिन वर तुम सोई । तुम जोई चाहो सोइ होई
ऐसे कहि फिरि सीस नवायो । अपने मन संकल्प बढ़ायो
भूत भविष्यत अरु अब तबहीं । ऐसो अचरज भयो न कबहीं
जो अरहंत और बलदेवा । चक्रवर्त आदिक वसुदेवा
भिच्छुक कुल नहिं उपजे कबहीं । राजादिक कुल मिले न जबहीं
यातै बड़ो अचम्भौ नामी । जो द्विज कुल जनमैं जिन स्वामी
काल चक्र अनगिनत वितीतैं । उत सर्पनि अव सर्पनि बीतैं
हुंडक नाम काल इक आवै । जो ऐसे अचरज उपजावै
ताही काल माहिं हम हेरे । उपजत ऐसे दसौं अछेरे
सो यहि काल आय दरसाने । अति अद्भुत रस करि सरसाने
आदि नाथ जिन आदि सुदैकैं । महावीर स्वामी लौ लैकैं
जिन जिन जिन वार मैं जोजो । भयो अछेरौ बरनौं सोसो

अथ प्रथम अछेरा ॥

एक काल इक छिनमें सोई । बहु जीवन की मुक्ति न होई
होव कदापि तु अचरज जानौ । ऋषभ देव कै वारैं मानौ
एक ऊन सत जिनके साधू । आठ भरत सुत रहित उपाधू
आप सहित इकसत अरु आठा । इक छिन मुक्ति गये सुनि पाठा
प्रथम अछेरौ यह जिय जानौ । अब दूजे कौ सुनौ बखानौ

अथ दूजौ अछेरा ॥

जैन धर्म चौथे आरे मैं । जब विच्छेदै ता वारेमैं
असंजती पूजैं तब जन सब । पूछैं धर्मविवस्था ते तब
कहैं कि सब जिन जन कौ दीजै । अन धन कन्या पूजा कीजै
साधु बुद्धि तब उनकी पूजा । होन लगी कोउ और न दूजा
दूजौ यह अति अचरज भयो । सुबुधि नाथ कै वारैं भयो

अथ तीजौ अछेरा ॥

नरक न जाइ जुगलिया कबहूं । जाय तु अचरज अबहूं तबहूं
कौसंबी नगरी कौ राजा । सुमुख नाम अति सुभग बिराजा

बीरा कोली इक तहं बसै । बनमाला ताकी तिय लसै ॥
इक दिन नृप ताकौ लखि लई । रूप देखि सब सुधि बुधि गई ॥
काम अन्ध ह्वै कछू न जानी । छल करि ताहि महल में आनी ॥
भोग विषय तासौं नृप मंड्यो । बीरा कोली धीरज छंड्यो ॥
ढूंढत जहं तहं दुखित बिसाला । हा बनमाला हा बनमाला ॥
बिरह दुखित तिहिं नृप लखि लीनौ । बड़ो खेद पछितावौ कीनौ ॥
दैव जोग नृप अरु तिय ऊपर । गाज परी ताही छिन दूपर ॥
दूजै भव मरि युगली भयो । ते हरिवर्ष खेत सुख छयो ॥
बीरा कष्ट साधि मरि भयो । किल्बिख नाम देवता भयो ॥
तब तिन युगलिहि लखि दुख पायो । पूरब जनम बैर सुधि आयो ॥
तिन युगलिहिं ह्वांतै लै चल्यो । चम्पा नगर प्रजा तैं मिल्यो ॥
नृप हरिभद्र नाम कहि थाप्यो । रानी सहित ताहि सुख व्याप्यो ॥
नगर प्रजाकौ तिन सिखरायो । नृपहिं मास मद भोग खवायो ॥
ताही पाप युगलिया मरिकै । नरक गये अचरज जग करिकै ॥
कुल हरिबंस भयो तिनहीं तैं । है प्रसिद्ध जगमें जिनहीतैं ॥
यह है तीजाभया अछेरा । जिन स्वामी सीतल की बेरा ॥

अथ चौथा अछेरा ॥

चौथौ अचरज अब सुनि कहिये । अद्भुत रस ताकौ पय गहिये ॥
तीर्थंकर नहिं तिय ह्वै उपजै । जौ उपजै तौ अचरज निपजै ॥
मल्लिनाथ तिय ह्वै औतरे । जिन बर बपु अद्भुत रस भरे ॥
पूरब जनम करम यह बांध्यो । तातैं तिय तन सौं जिय साध्यो ॥
तिहि भव महा विदेह नगरमैं । शतबल नृपके सुखद नगरमें ॥
कुंवर महाबल नामा जनमें । मात पिता अति मोदित मनमें ॥
मित्त किये छह राज कुमारा । वय गुन सील रूप सम सारा ॥
अचल धर्म पूरन अभिचन्दा । वसु वैश्रम छह नाम नरिन्दा ॥
सातौं बाल मित्र मिलि पूरे । सम पदवी प्रापत हित रूरे ॥
लैचारित सब तप कौ लागे । महाबली पै छिपि कछु जागे ॥
छहतैं अधि ककपट तप कीना । तिहि प्रभावतैं तिय तन लीना ॥
मिथला नगर कुंभ नृप जाकैं । प्रभावती तिय गर्भ सुताकैं ॥

मल्लिकुमारी इहि सुभ नामा । रूप सील गुन परम ललाम
अगहन सुदि एकादस दिना । जनमो जिन वर ह्वै तिहि छिन
छहौं मित्र हूं तब मरि गये । देसान्तर मैं राजा भये
सुनि गुन रूप सील मल्लीकौ । भये भंवर सुनि गुन बल्लीकै
आये तजि निज २ रजधानी । मल्लिकुमारी जिहि दिस जानी
मल्ली अवधि ग्यान करि जाने । परम सनेही मीत पुराने
तिन्हैं देखि निज रूप लुभाने । बिवस काम बस बिकल पिछाने
मल्लि स्वर्न पुतली सज कीनी । तामैं निज छवि सब धरि दीनी
रत्न भूषनन भूषित कीनी । कंचन मै पुतली रस भीनी
नित प्रति ताके मुख के माहीं । अन्न कौर इक २ धरिजाहीं
सोसड़ि अन्न अधिक जब बिगस्यो । अति दुर्गंध भयो घर सिगस्यो
छहौं जनन तब सोलहि लीनी । अतिविगन्ध घनतै घिनकीनी
तब मल्ली ते सब समझाये । अन मय तनके भेद बताये
अस्थि चर्म नस बस मज्जा मय । रुधिरक मास मूत्र मल आलय
ऐसोयह अनतन घन घिनघर । सुनौ सनेह जोग नहिं बरनर
बोधि छहन कौ चारित दीनै । जनम मरन दुखतैं करिछीनै
चौथौ अचरज यहै बखान्यौं । अति बिसमय अद्भुत रससान्यौं

अथ पंचम अछेरा ॥

मिलैं न वासुदेव द्वै जगमैं । जौपै मिलैं तु अचरज सगमैं
खंडधातुकी मैं इक नगरी । कंका अमर नाम गुन अगरी
वासुदेव इक कपिल सुनामा । तहां बसै सुभ लच्छन धामा
इक दिन किह्न हेत गुन भये । कृष्ण सुवासुदेव तहं गये
ताकौ हेत कहौं सुनि लीजै । एक समय नारद रस भीजै
पंचाली के अविनय खीजे । खंड धातुकी जाय पतीजै
पद्मोत्तर राजा पै गये । रूप द्रोपदी बरनत भये
तीन लोक मैं नाहीं ऐसी । सुन्दर तिया द्रोपदी कैसी
सुनि गुन राजा मोहित भयो । देव अराधि सिद्ध जप कियो
तिन सुर लाय द्रोपदी हरी । लाय नृपति के आगे धरी
मै द्रोपदी सील ब्रत साधै । निस दिन रहै धर्म आराधै

भोर भयो पांडव जब जान्यो । चकित थकितह्वै अति दुख मान्यो ॥
ढूंढ हारि जब कछु न बसाई । तब सुधि कीने यादव राई ॥
कुन्ती जाय कृष्ण कौ लाई । आय कृष्ण सब बिथा मिटाई ॥
नारद मुनि ताकी सुधि पाई । तब हंसि यौं पांडवन सुनाई ॥
कहा करी तुम मिलि पांचौपिय । राखिनसके पांच मैंइकतिय ॥
सोरह सहस अठोतरसै तिय । एकाकी राखत हम ज्यों जिय ॥
यौं हंसि रिपु पै करी चढ़ाई । सह पांडव चलि गये कन्हाई ॥
पद्मोत्तर राजा सौं लरे । जीति ताहि तिय लै फिर फिरे ॥
तब जय सङ्ख कृष्ण धुनि कीनौ । कपिल सुवासुदेव सुनिलीनौ ॥
कपिल तहां तब मिलन बिचारी । मुनि सुव्रत्ति जिन वर जे भारी ॥
कह्यो न वासुदेव द्वै मिलैं । मिलैं तु अचरज अति जग खिलैं ॥
जौलौ कपिल सिंधु तट आये । तौलौ कृष्ण सिन्धु मधि पाये ॥
सङ्खनाद तब दुहुं दिस भये । नादहिं तैं मिलि निज ग्रह गये ॥
यह पांचवौं अचंभौ भयो । नेम नाथ कै वारैं भयो ॥

अथ छठवौं अछेरा ॥

चमरेंदर धर्मेन्द्र लोक लौ । जाय नहीं जौ जाय अचंभौ ॥
पूरन नामा तापस एका । कियो घोर तप बरस अनेका ॥
सब बिधि साधि कष्ट मरि गयो । तप बलतैं चमरेंदर भयो ॥
अवधिज्ञान करि जब उनदेखा । धरमेंदर पद निज सिरलेखा ॥
लखि अति क्रोध अगिन तन जास्यो । धरमेंदर सौं लरन बिचास्यो ॥
जोजन लाख बदन विस्तास्यो । सुरन डरावन लाग्योभास्यो ॥
मनमैं महावीर की सरना । गहि धरि काहू को जिय डरना ॥
तब धरमेंदर बज्र चलाया । चमरेन्दर भाजा भय पाया ॥
प्रभुपदतर अनुतन धरि रह्यो । अवधिज्ञान करि सुरपति लह्यो ॥
महावीर की सरना लीना । तब धरमेन्द्र छांड़ि सो दीना ॥
कह्यो बच्यो जिन वरकी सरना । फेर न ऐसो कबहूं करना ॥
दुहूं परस्पर दोष छिमाये । अप अपने थल दुज सिधाये ॥
छठौ अछेरौ पूरन भयो । अब आगे सुनि अचरज नयो ॥

अथ सातवौं अछेरा ॥

सतवौं अचरज जिन देसना । निफल न होय एक पल छिन
अरु जो होयतु अचरज होई । यह जग में जानै सब कोई
महावीर भगवन्त सुजानी । जबै भये प्रभु केवल ज्ञानी
समो सरन सब सुरन रचायो । महावीर तब सब्द सुनाये
सो देसना न किनहूं मानी । यह अचरज सतयौं सुनि ज्ञानी

अथ अठवौं अछेरा ॥

भूत भविष्यत अरु अब तबहीं । ऐसो अचरज भयो न कबहीं
सो अष्टम उपसर्ग बखाना । गोसालक तैं जो भगवाना
सह्यो कह्यो सो सुनि चित लाई । सावस्ती नगरी सुखदाई
तहां बसै इक खल मन खलसुत । गोसालक तपसी इरषा युत
तिन जिन बरसों बाद मचायो । प्रभु पर तेजो लेस चलायो
सुनखत सरवनुभूत दोय जन । महावीर के मुख्य सिष्य तन
साधु दोय ते आड़े आये । ते जलेस ते तुरत जलाये
तिनहिं जारि वह तेजो लेसा । गयो जहां महबीर जिनेसा
दै प्रदच्छिना पाछे फिस्यो । गोसालकही तातैं जस्यो
पै जिनवर के तन के माहीं । अरुन चिन्ह इक भयो तहाहीं
काल पाइ सोऊ मिटि गयो । पै जगमें यह अचरज भयो
यह उप सर्ग जिनै नहिं होई । यातैं कह्यो अछेरो सोई

अथ नवौं अछेरा ॥

रबि ससिनिज विमानयुत आवै । जाहि न कितहूं कबहूं कावै
जोपै जाहिं तु अचरज होई । विदित बात जानत सबकोई
कौसंबी नगरी के माहीं । महाबीर स्वामी तिहि ठाहीं
समो सरन देवन तहं रच्यो । एको सुख जातै नहिं बच्यो
तहां सूर ससि अति छबि पाये । निज बिमान चढ़ि देखनआये
नवम अछेरो यहै बखानो । अब दसवों हूं सुनो सुजानो

अथ दसवौं अछेरा ॥

अब दसवौं अचरज सुनिसोऊ । द्विजकुल जिनै जनमैं नहिं कोऊ
देवानन्दा उदर मझारा । श्री भगवन्त लियो अवतारा

दस अचरज ये सुरपति कहे। सेनाधिपहि बोलि कहि रहे॥
अरहंतादिक जिनजन सबहूं। भिच्छुक कुल नहिं उपजैं कबहूं॥
सो श्रीमहावीर जिन ईसा। द्विज कुल गर्भ चवे जगदीसा॥
कुल अभिमान मान मन साध्यो। नीच गोत कुलयातैं बांध्यो॥
सो सब अब बिस्तार बखानौ। पिछले भव जिनवर के जानौ॥
सत्ताइस भव महावीरके। बरनौं सुनि गुन परम धीरके॥
जाभव तैं समकित भित जागी। मुक्त होनकी चित अनुरागी॥
ताहि आदि दै महावीर लौं। सत्ताइस भव भये सु बरनौं॥
प्रथम भये नयसार पलीसा। जिन आतिथ छिन चहै सुनीसा॥
भोजन समि मग जोवन लाग्यो। मुनि आये लखि मुद मन जाग्यो॥
सादर सनमाने बिहरायें। साध बिहरि अति आनंद पाये॥
मुनि तब कृपा पात्र जन जान्यो। ताके सनमुख धर्म बखान्यो॥
सो मुनि तिन समकित पद पायो। सुकृत जोग ताको भव भायो॥
यह पहिलो भव दूजो सुरको। तीजो सुनि अब बरनौं धुरको॥
भरत चक्कवै घर अवतरे। नाम मरीच सकल गुन भरे॥
इक दिन भरत आदि स्वामीतैं। पूछ्यो माथ नाभि नामीतैं॥
अहो जिनेसर अबहूं इहि काला। समोसरन यह परम बिसाला॥
यामैं और जीव कोउ तुमसों। तीर्थंकर है कहौ सो हमसों॥
सुनि बोले श्री आदि जिनेसा। समोसरन मैं तो नहिं ऐसा॥
पै तापस तुव सुअन मरीचा। लहि है पदवी परम अमीचा॥
चौबिसवौं जिनवर सो ह्वै है। महावीर नामा जस पैहै॥
चक्रवर्त्ति हूं ह्वै है सोई। नाम मित्रप्रिय ताकौ होई॥
महा विदेह खेत में उपजै। मूका नगरी मैं सो निपजै॥
अरु त्रिपृष्ट नामा बसु देवा। भरत खेत मैं ह्वै है एवा॥
ऐसे वचन भरत सुनि जिन तैं। सुत मरीच पै आये छिनतैं॥
दै पर दच्छन बन्दन कीन्हा। भागवन्त अपना सुत चीन्हा॥
पुनि सुत सौं उन ऐसे भाख्यो। दै भगवन्त बचन की साख्यो॥
तेरो जीव तिर्यङ्कर ह्वैहै। वासुदेव पद हूं सो पैहै॥
चक्रवर्त्ति हूं ह्वैहै सोई। कहो बात ऐसे मुद मोई॥

तोहि तिर्थङ्कर पद समुझायो। यातैं हौं तुहि बन्दन आयो
सुनि मरीच अति आनंद पाग्यो। विपुल हर्ष तैं नाचन लाग्यो
कुलकौ गर्भ भयो अति भारी। मोसों सुकुल न जगत मझारी
तेही गर्भ नीच कुल बांध्यो। तातैं भिच्छुक कुल भव साध्यो
कोड कोड़ सागर बय माहीं। सत्ताइस भव भयो तहाहीं॥
तामैं तीन प्रथम ये कहे। चौथे भव सुर तन धरि रहे॥
पुनिग्यारह भवमाहि इकन्तर। इक तपसी इक विबुध निरन्तर॥
पन्द्रह भव जब ऐसे गये। राज कुमार सोरहैं भये॥
सत्तरवैं सुर ठारह माहीं। वासुदेव पुनि भये तहाहीं॥
भव उनीसवैं नरक सिधारे। बीसैं जनम सिंह तन धारे॥
गये नरक पुनि भव इक ईसैं। धस्यो जनम नृप कौ बाईसैं॥
चक्रवर्त्त पुनि ह्वै तेईसैं। फेर देवता ह्वै चौबीसैं॥
राजा नन्द पचीसैं भये। पुनि छबीसवैं सुर गुन छये॥
सत्ताइसवैं भव भगवन्ता। देवा नन्दा उदर बसन्ता॥
यातैं इन्द्रहि योग सुगर्भै। नृप कुल मैं सरजावै अर्भै॥
हरिनगमेषिहि ऐसैं कहिकैं। फिरबोल्यो सुरपति सुखलहिकैं॥
अब तुम बेग जाउ तिहि नगरी। देवा नन्दा जहं गुन अगरी॥
ताके गर्भै बेग चुरावौ। छत्रियकुण्ड ग्राम मैं लावौ॥
सिद्धारथ राजा जहं राजै। त्रिसला रानी जहं छबि छाजै॥
ताके गर्भ माहिं है कन्या। ताहि तहां तैं लै गुनधन्या॥
[illegible]लिटेउ दुउगर्भ परस्पर। त्रिसला कूख माहिं जिनवर धर॥
जो[illegible]गमेसीयह आयुससुनि। करिप्रणामतिहिदिसचाल्योपुनि॥
[illegible]वइक्री रूप बिचास्यो। सब रतनन को सार निकास्यो॥
बउ जोजन मिति दण्डरूप धरि। समुद घात ताकौं पाछै करि॥
लोक उचित निज रूप बनायो। सुर उत्कृष्टी गति करि धायो॥
अमिति द्वीप सागर मधि ह्वैकै। जंबूद्वीर्प मध्य छित छैकै॥
भरत छेत्र छित पर जब आयो। ब्राह्मनकुंड ग्राम तब पायो॥
ऋषभ दत्त द्विज बर सुभ घरनी। देवा नंदा सुबरन बरनी॥
ताहि स्वापनी निद्रा दैकै। पुदगल अशुभ सबै हरि लैकै॥

अथ गर्भाकर्षण ॥

सुभ पुद्गल तहं दये मिलाई । गर्भ उदर तैं लियो कढ़ाई ॥
छत्रिय कुंड तुरत लैगयो । त्रिसिला कूख माहिं धर दयो ॥
क्वार कृष्ण तेरस ससि बासर । उत्तर फागुनि नखत सुखद बर ॥
निसि निसीथ बीतै तिहि बारा । कल्यानक यह गर्भ पहारा ॥
देवानंदा उदर सहायक । रहै बयासी निसि जिननायक ॥
तिही राति तिहि देवानन्दा । फेर सुपन देखे अति मन्दा ॥
चौदह सुपन प्रथम जे पाये । ते त्रिसला मनु लये छिनाये ॥
ऐसोसुपन देखिकै जागी । अति सचिन्त मन सोचन लागी ॥
तिही राति त्रिसला रानी ने । सिद्धारथ राजा मानी ने ॥
सोवत तेई चौदह सुपने । लखे समात बदन मैं अपने ॥
सुखद चित्रसाला जहं रानी । सरस सेज मैं रैन बिहानी ॥
ताकौं बरनन कछुक बखानैं । जहां सोय सुख सुपनैा जानैं ॥

कवित्त ॥

नवल धवल धाम ललित ललाम जिन कीनी काम छबि छपाकर की जो छाई है । रचित बिचित्र चित्र खचित जराय जाकी जगर मगर होत जोत चहुं धाई है ॥ छौनी पै बिछौना छबि छाये से बिछाये स्वच्छ छात चांदनी की चांदनी सी छटकाई है । कोमल कमल दल रचित बिचित्र सेज कमला सी तापै सोई त्रिसला सुहाई है ॥ १ ॥ जागत कछुक पल लागत झमक नींद पागत से दृग मृग छौना से छिपाये हैं । उदित उदार अद्भुत रस भार भरे मंगलीक सोभा सार सुखद सुहाये हैं ॥ चौदहौं भुवन ताकी रिद्धि औ समृद्धि सिद्धि साधन बिनाही पाई मोद मन छाये हैं । चौदहौं सुपन एक एक तें निपुन ऐसे अनुभव अपने श्री त्रिसला ने पाये हैं ॥ २ ॥

अथ चौदह सुपन——प्रथम गज बरनन ॥

देखि दिग दुरद बिगत मद होत जातैं चारि रदवारौ ऐसौ मत मदवारौ है । मंदर सो उच्च सुखकंदर सो जामै सुठ सुन्दर अमंद मंद गति अति भारौ है ॥ अमल कमलदल बिमल बरन

स्वच्छ मानौ जिनजस पुञ्ज मंजु उजियारौ है। ऐसौ गजरा
कौ राज सिरताज आज पहिलै सुपन रानी त्रिसला निहा
है ॥ ३ ॥

द्वितीय वृष वर्नन ॥

उन्नत विषान छबिखान कौ बखानि सकै कांधबंधु विंधि
प्रबल बलवारौ है। कोमल विमल रोम सोम के वरन तम
कौ हरनहार रूप निरधार्‍यौ है ॥ रुष्ट तन पुष्ट जामै
गुन दुष्ट नाहि तुष्टता मिलत लखि ललित सुढार्‍यौ है।
वृषराजन कौ राज सिरताज आज दूसरै सुपन रानी त्रि
निहार्‍यौ है ॥ ४ ॥

तृतीय सिंह बर्नन ॥

केसर सिरोख के सरीखे केस केसर के कोमल विमल बर
पियारौ है। तीछन तिरीछे नख तालू तल जीभ लाल दी
दिपत दृग दीह देहवारौ है ॥ दंतुरित दंतनि की पंति छबि
स्वच्छ तुच्छ कटि तटि पुच्छ उन्नत उधार्‍यौ है। ऐसौ मृगरा
कौ राज सिरताज आज तीसरै सुपन रानी त्रिसला निहा
है ॥ ५ ॥

चतुर्थ लक्ष्मी वर्नन ॥

हिमगिर मांहि सर सर में सरोज वन वन मैं जलज एक प
सुहायो है। वारिज मैं दिव्य गेह गेह मैं कनकवेल बेलमैं क
एक एक तैं सुहायो है ॥ सोहनै बदन नैन सोहनै चरन करन
उर उरज कमल व्यूह छायो है। कोमल कमल सुखी क
बिमल देवी ऐसौ चौथौ सुपनौ श्री त्रिसला ने पायो है ॥

पञ्चम फूलमाला वर्नन ॥

चंपक चमेली बेल मालती सुमिल मेलि परिमल मेल
गूंथी मन भाई है। सेवती गुलाब कुंद केतकी मदनबान
जोनजुही पुही सोही सुखदाई है ॥ मधु मकरन्द छके तुन्दिलमि
वृन्द गुंजिगुंजि रंजमन मंजुमुद लाई है। फूली फूल माल से
सौरभकी माल बाल त्रिसला कौ पांचवें सुपन दरसाई है ॥
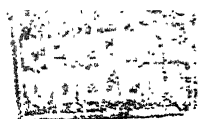
षष्ठम चन्द्र वर्नन ॥

राकापति रैनपति रतिपति अति मित्र उडपति औषधी कौ पति मन भायो है। रोहिणीरमनराट रूप कौं सुमन तीनौ ताप कौ समन सुमनन करि ध्यायो है। द्विजराज जाकौं पद कोविद कला कौ भलो भाई है रमा कौ मुद कुमुदन छायो है। पूरन अमंद चन्द आनद को कंद ऐसौ छठवौं सुपन रानी त्रिसला ने पायो है ॥ ८ ॥

सप्तम रवि वर्नन ॥

तेज पुंजरासी सुप्रकासी तमनासी देव वरस छमासी दिन छिन प्रगटायो है। कोमल कमल कुलकुल मोदकारी भारी कोक सोकहारी लोक लोचन सुहायो है। प्रबल प्रताप पै हरत तीनौं ताप तातैं तीन कालताकौं तीन रूप करि ध्यायो है। मारतंड मंडल अखंडित प्रचंड ऐसौ सातवौं सुपन रानी त्रिसला ने पायो है ॥ ९ ॥

अष्टम ध्वज वर्नन ॥

उन्नत अकास लों प्रकास दस दिस मांह छांह जाकी जोन्ह जैसी फैली छित छोर मैं। लहरत पौन फहरात फरहर जामैं चित्रित विचित्र सिंहचित्र बीच ठौर मैं॥ कंचन रचित दंड खचित अनेक नग जगमग होत जग मांहि जोति जोर मैं। दिव्य तेजमई ऐसौ ध्वज रानी त्रिसला ने आठवैं सुपन देखि लीनौ दृग दौर मैं ॥ १० ॥

नवम कलस वर्नन ॥

कंचन रचित मनि मानिक खचित मरकत पुषराग हीरा मोती जड़ि धास्यो है। फूलन की मालरैं बिसालरैं लपेटीं गरैं भौंर पुञ्ज गुंजन तैं लागै अति प्यास्यो है। मंगलीक द्रव्य जग जेते तेते तामैं सब सुखद सुभग मोद भाजन सुढास्यो है। ससर सरस परिपूरन कलस ऐसो नवमैं सुपन रानी त्रिसला निहास्यो है ॥ ११ ॥

दसम सरोवर वर्नन ॥

पूरन सलिल स्वच्छ अच्छ परतच्छ तामैं लच्छ मच्छ कच्छन कौ केलियल प्यारो है । कंजरुक मोदबन घन जामै फूलि रहे झूलि रहे भौंर भौर सोभा भरि ढास्यो है ॥ हंसराज हंसकुंज सारस बलाक कोक सोक तजि रमत चहूंघां सुक सास्यो है । ऐसो सरवर वर सर मानसर नाहिं दसवैं सुपन रानी चिसला निहास्यो है ॥ १२ ॥

ग्यारवैं छीरसागर वर्नन ॥

पूरन अपार पारावार जे उदार सिंधु तुच्छ से लगत ऐसो स्वच्छ सोभा भास्यो है । तरल तरंग अति तुंग के अभंग भंग भौंरन की भौर तें गंभीर नीर वारो है । तिमि से तिमिंगल से नक्रवक्रदन्त जामै दीसत दिगंत लौं न अंत पार पास्यो है । ऐसो छीरसागर उजागर अनन्त वन्त ग्यारवैं सुपन रानी चिसला निहास्यो है ॥ १३ ॥

बारवों विमान वर्नन ॥

मध्य दिन दिनमनि गन कौ सो तेज तेज मनि गन चित्र ते विचित्र चित्र कास्यो है । झझरी झरोखा गोख मोखा अगनित जामै दीपमान दीपमान ह्वंतें बिस्तास्यो है । विविधि विबुध ब नाटक निपुन गन गंध्रपन गान तान मन मोद भास्योहै । ऐस सो विमान कविमान कब जानि सकै बारवैं सुपन रानी चिसल निहास्यो है ॥ १४ ॥

तेरवैं रत्न रास वर्नन ॥

हीरन को हीर मानौ मानिक कौ मन पुषराग कै परा पानी पन्नन कौ गास्यो है । लील की लुनाई लालड़ी की लि ताई चन्द्रकान्ति की चमक लैकैं अतर निकास्यो है । ता को बनाव ढेर कञ्चन सुमेर को सो दृग न खुलत तीखे तेज प्रसास्यो है । ऐसो रत्नरास के उजास कौ प्रकास आज तेर सुपन रानी चिसला निहास्यो है ॥ १५ ॥

जो तुम भाख्यो अपनो सपनौ। ताकौ फल ऐसो सुत निपुनौ
गर्ज सौ धीर बली नृप जैसो। सिंह प्रताप धनी श्री कैसो
फूल मालसे सौरभ साली। ससि सम मन सुभ सुजसबिसाली
रबि प्रताप परसिद्ध ध्वजासौ। मंगल मंगल कमल प्रभासौ
सुन्दर बिमल कमल सरवरसौ। अति गंभीर छीर सागरसौ
रत्न रासि सम गुनगन साली। अमल अगिन समतेज बिसाली
यह संछेप सुपन गुन जानौ। यातैं सहस सहस गुन मानौ
यौं पिय पैंतिय जब सुनि पायौ। रोमरोम प्रति आनद छायौ
अम्ब कदम्ब फूल जिमि फूले। पुलकि रोमतन मुद अनुकूले
प्रनयबिनयकरिपियहिनिहोरयो। प्रनयकरनकौंकरसिरजोरयो
बिदाहोय रंग महल पधारी। गजगामिनि भामिनि पियप्यारी
बैठि कुसुम सुख सेज पियारी। अपने मन तब यहै बिचारी
मति फिर आवै नींद दृगनमै। मति मन लागै असुभ सुपनमै
यातैं अब जागत ही रहियै। गुरु पद देव ध्यान सुख लहियै
ह्यां रानी यौं रैन बिताई। ह्वां नृप अपने मनयौं ठाई
अधिकारी सब विधि के बोले। तिनसौं मधुर बचन नृपखोले

अथ सभा वर्नन ॥

सभासदन सद सज कर लीजै। सभा सदन कौं सजन कहीजै
प्रथम पुहुमि सब झारिबुहारौ। छौनि बिछौनबिछायसंवारौ
जे अतिम्टदुलमनोज्ञमनोहर। मोल अमोल बिचित्रविविधवर
दरदर पर दर परदा बांधौ। दिव्य कनक गुन गुनित सुनाधौ
कनक सलाका मीनाकारी। प्रति परदा चिक लेउ संवारी
छितनैं छात छाद्य पट रूरौ। मोलन महंगै मालन पूरौ
जाके चहूं किनार किनारी। चपला ज्यौं चमकै जरतारी
ताके चहूं कोर दुति दमकै। झीनी झुमड़ी झालर झमकै
मनिमय दिव्य सिंहासन लावौ। सभा सदन के मध्य बिछावौ
औरौ आठ स्वच्छ भद्रासन। दिस ईसान धरौ सम सासन
झीने चित्र ओट पट मांही। एक सिंहासन धरौ तहांहि
चन्दन अगर मलागिर गारौ। छिरकि छौनि सौरभ बिस्तारै

धूपदान भरि सुभग सुरूपै । विविधि सुगंधित धूपन धूपै ॥
सुरभिसुमन दस दिसनि बिखेरै । अलिअवली जहंलेहि बसेरै ॥
ऐसैं जब राजा फुरमायो । अधिकारिन कै मन मुद छायो ॥
अज्ञा सिरधरि तुरत सिधारे । अप अपने अधिकार सुधारे ॥
नृपजु कही सो सब बिधिकीनी । विविधिविचित्र सरस रस भीनी ॥
ऐसे मैं निसि निघटी सारी । प्रात पर्व महपोरो पारी ॥

अथ प्रभात वर्नन ॥

पुनि प्रभात की भांतिउज्यारी । फैलिपरी दसदिस दुतिवारी ॥
फिरि अरुनोदय समय सुहायो । भयो द्विजन मिलि सोर मचायो ॥
कमल खुले कुमुदिनि कुंभिलानी । सुरभि समोर मन्दसियरानी ॥
बन्दीजन बरदावन लागे । सुख सज्या तें नृप बर जागे ॥
प्रथम सरौं के सदन सिधारे । अमित होय फिर श्रम निरवारे ॥
कामल अमल कमल कर वारन । अंग अभंग करे सुकुमारन ॥
पुनिउष्णोदक मज्जन कीनै । मज्जन करि तन सज्जन कीनै ॥
कटि तट अरुन वरन पट धास्यो । उत्तर पट दुउ कंधन डास्यो ॥
चरन कटक कर चूरा रूरे । रहे रतन मय फबि छबि पूरे ॥
हार हमेल कण्ठ कण्ठी छबि । बाजूबन्द रहे बाजू फबि ॥
माथैं मुकुट जड़ित मनि राजै । कानन कुण्डल अति छबि छाजै ॥
सुन्दर सुंदरी अंगुरिन सोहै । पञ्चंचन पञ्चंची अति मन मोहै ॥
बसना भरन दिव्य सुर लायक । ते सब पहर फबे नर नायक ॥
जबै सबै सज सजि नर नाहर । रंगमहलतैं निकसे बाहर ॥
छत्र चमर गहि लये खवासन । बैठे आय जटित सिंघासन ॥
मंत्री सेनाधिप गन नायक । दूत भंडारी सब गुन लायक ॥
गनक चिकित्सक कबिजन रूरे । एकएक तैं सब गुन पूरे ॥
सब कर जोरैं सन्मुख ठाढ़े । सब अति प्रीत भीत भय गाढ़े ॥
तहं नृप सुग्यन अज्ञा दीनी । जे सुपनग्य प्रग्य अति भीनी ॥
लावौ बेगि सुग्य सुनि धाये । आठ चतुर पाये ते लाये ॥
श्रीफल करले नृपसों भेंटे । नृप दरसनतें सब दुख मेटे ॥
नृपहूं कौंते अति मन माने । सब सप्रीत सादर सनमाने ॥

प्रथम सजे वसुभद्रासन ते। आठौं बैठे नृप सासन ते॥
त्रिसला दिव्य ओट पट माहीं। बैठि वरासन ज्यौं छबि छाहीं॥
दोऊ कर फल फूलन भरिकै। द्विज सुप्यन कै आगे धरिकै॥
विनय प्रनय अतिसय चित धास्यो। फिर सिंघासन अंगीकास्यो॥
तब नृप सुपन विवस्था कही। फिर ताको फल पूछ्यो सही॥
चिन्तन करि तिन सबन परस्पर। यथा शास्त्र बोले सब द्विजवर॥
सुपनागम द्वासप्तति सुपने। तिनमें तीस कहे अति निपुने॥
ताहू मैं चौदह जे कहे। जिन माता बिन और न लहे॥
चक्रवर्त्ति माता हूं पेषै। पै अति मन्द बरन सो देषै॥
बासुदेव जो गर्भे आवै। सात सुपन तिहि जननी पावै॥
अरु बलदेव मंडलिक माता। चार एक देखै सुख दाता॥
तातैं यह निहचै हम जाने। जिन बर त्रिसला गर्भ प्रमाने॥
ऐसो सुत नहिं भयो न होई। दई देहगो तुम कौं सोई॥
गर्भ मास नव मास ब्यतीते। साढ़े सात दिवस पुनि बीते॥
अंग उपंग संग गुन पूरो। मान प्रमान सुभग अंग रूरो॥
मन रञ्जन व्यञ्जन लच्छन युत। तुम लहिहौ ऐसो अद्भुत सुत॥
चक्रवर्त्ति दस दिस मैं ह्वैहै। अन धन जन अवनी न समैहै॥
सुनि राजा रानी अति हर्षे। धन मन गन सुप्यन पर बर्षे॥
बहु बसु बास रासि तिहि दीने। आस पुराय विदा ते कीने॥
त्रिसलाहूं पति आयसु पाई। सुदमय अपने सदन सिधाई॥
जिन अवतार जानि सुरराई। धन अधिकारी लये बुलाई॥
तिर्यक जृम्भक देव सुनामा। तिनसौं कह्यौ इन्द्र सुख धामा॥
जहं जहं भूमै है धन भारो। स्वामी सत्ता रहित उज्यारो॥
सो सब महा निधान लियावौ। सिद्धारथ नृप घर पहुंचावौ॥
जो आज्ञा सुरपति ने दीनी। उन सिर धार यथा विधि कीनी॥
अनधनजनअनमादिसबैसिधि। विविधिभांतिकीरिद्धिनवौनिधि॥
गज हय रथ मय सेना भारी। सेनाधिप अगिनित अधिकारी॥
ऐसो सुख सम्पति अधिकाई। दम्पति नृप नृपतिय घरछाई॥
तब पिय तिय ऐसो जिय धारैं। जो अबकैं सुत होय हमारैं॥

वर्द्धमान धरि नाम बुलावैं। लखि अति मङ्गल आनंद पावैं॥
तब जिनवर मधि उदर विचारी। मति दुखपावै मात हमारी॥
जबसिसुफरकिदेतदुखमातहि।सुहिविशेषचहियतयहिभांतहि॥
यों चित चिन्त अचल ह्वै रहे। सोलहि मात अमित दुख सहे॥
गर्भ फरक जब मात न लह्यौ। रोय तबै यों अलिसौं कह्यौ॥
दई दई निधि सों कित गई। कहा करौं अब कैसी भई॥
किन हरि लीनौ गर्भ हमारौ। जीव प्रान कै जीवन प्यारौ॥
कौन क्रिया यह आड़ी भई। गर्भ चेतना जिन हरि लई॥
घोर कठोर विषय रस पागे। कर्म पाछले भवके जागे॥
ऐसें बिलपति तलफति रानी। छिन छिन कलप समान बितानी॥
अवधिज्ञान करि श्रीजिनजाना। जननी जनम मरन सममाना॥
तब भगवान अचल ब्रत तजिकै। फरकन लगे मात हित भजिकै॥
जब छह मास गर्भ के भये। पन्द्रह दिन ता ऊपर गये॥
जिन मन मैं तब निहचै कीनौ। मात पिता हित दृढ़ ब्रत लीनौ॥
गहैं नाहिं गुरु दिच्छा तौलौं। मात पिता जग जीवैं जौलौं॥
गर्भ चेत जब जननी जान्यौ। भयो मोद मङ्गल मन मान्यौ॥
सुख सोवत जागत हित पागी। रच्छा करन गर्भ की लागी॥
विषम अहार बिहार जितेका। सब तजि दये एक तें एका॥
जिन जिन वस्तन मन अभिलाषै। ते सब परिपूरन करि राषै॥
इकदिन मनसा उपजी ऐसैं। इन्द्रानी स्रुति कुण्डल जैसैं॥
दिव्य अलौकिक सुरमन गनमैं। जो पाऊं तो करौं करनमैं॥
सुरपति अवधिज्ञान करि जानी। जिन जननी हित यह मनठानी॥
छत्रियकुंड पास सुखदाई। इन्द्रपुरी इक इन्द्र बसाई॥
तहां बसे सुरपति सम्पति लै। सुरतरु गो मनि परिपूरन कै॥
नृप सिद्धारथ जब यह जान्यो। सेन साजि चढ़ि संगर ठान्यो॥
सुरपति नरपति सौं भय माना। दुसह युद्ध लहि प्रथम पराना॥
सब बैभव सेना भट लूटा। सुरपति तिय स्रुति भूषन छूटा॥
सो त्रिसला ढिग भट लै आये। ताहि पहिरि मनमोद बढ़ाये॥

अथ महावीर जन्म कल्यानक ॥

गर्भ बास बासर जब बीते। सुभ नव मास आय परतीते
साढ़े सात अधिक दिन तापै। चैत सुदी तेरस तिथ आपै
नखत उत्तरा सुभ फागुनी। मुद मङ्गल मैं सुरनर मुनी
सातोंगृह निज उच्चस्थाना। जनम समय जिहि सुभ फलनाना
दोष रहित सुभ समय सुहायो। जो जिन जन्म जोग जग जायो
जिन श्रीमहाबीर भगवाना। जनमलियो गुन रूप निधाना
जिहि निसि महाबीर जिन जनमे। देवी देव मुदित ह्वै मनमे
देव लोक तें भू पर आये। सब देवन के भये बधाये
दस दिस बिमल प्रकास प्रकास्यो। व्योम बिमानन तें तम नास्यो
आनंद मगन सकल सुर वृन्दा। व्यापक कहकह सबद अमन्दा
धनद निर्देसित अनुचर धाये। कनक रजित की रासैं लाये
बसन आभरन रतन अमोले। सुरभि फूल फल अमल अतोले
चन्दन चूर कपूर धूरलै। परिपूरयौ नृपनगर वृष्टि कै
सुरभि सुसीतल सुगति बयारी। सरस परस इन्द्रिय सुखकारी
थल जलरुह बन उपबन फूले। अलिकुल कल नव रव अनुकूले
कोकिल केकी कूकन लागे। तरु फर भर धर झूकन लागे
चेत अचेत न तन मुद छायो। छिनक नारकिन हूं सुख पायो
भूयौ भई भार भय हीनी। बसु बसुमती प्रकट करि दीनी
अध ऊरध दिस बिदिसनबारी। आठ आठ प्रति दिसा कुमारी
अध ऊरध अरु बिदिसा की सब। चारिचारि सब मिलि छप्पन तब
दसौं दिसा तें मुद मय धाईं। सिद्धारथ नृप आलय आईं
प्रथम प्रनत जिनवरकै पागीं। अप अपने पुनि कारज लागीं

अथ छप्पन दिग देवी कृत उत्सव ॥

एकन करिदृग पलक बुहारी। चहुंदिस पुहमी झारि बुहारी
अतर अरगजाजल भर झारी। एकन सींची पुहमी सारी
एक स्वच्छ कर दरपन लीने। इक बीजन करमें कर दीने
एक छत्र चामर कर धारी। इक असनान नीर अधिकारी
एक नचारु दीप कर लीनै। एकन नाल बधारन कीनै।

नाल बधारि धारि भुत्र भीतर । रत्न रासि राखी ता ऊपर ॥
मोद मान करि गान परस्पर । गई असीसत आप अपने घर ॥
ऐसो उत्सव मुद मङ्गल मय । छप्पन दिग देविन कीनौ जय ॥

अथ चौंसठ इन्द्र उत्सव ॥

अब चौंसठ इन्द्रन मिलि जैसौ । कियो महोच्छौ बरनौ तैसौ ॥
जिहि छिन जनमें जिनवर स्वामी । जिन जन गन के पूरन कामी ॥
सुर इन्द्रनके आसन डोले । हरिन गमेसी तुरतैं बोले ॥
घोष सुघोष घण्ट कौ कीनौ । बर बिमान सजि साज नबीनौ ॥
जोजन लाष जासु बिस्तारा । तापर सुरपति होय सवारा ॥
पटरानी सन्मुख तिअ आठा । दिब्या भरन बसन ठठि ठाठा ॥
बांयें सामानिक सुरनायक । देवी देव दाहिने लायक ॥
पाछे सात सेन पति सोहैं । सुर समूह मुदमय मन मोहैं ॥
असुर गंधप किन्नर के गन । नृत्य गान गुन ज्ञान जान जन ॥
सिगरे सुर समूह संग सुरपत । खत्रियकुण्ड नगर पहुंचे तत ॥
प्रथम प्रनाम नामि सिर कीना । सवन ल्याइ जिनवर कर लीना ॥
लै सुमेर कौ कियो पयानौ । तत छिन तिहिं थल पहुंचे मानौ ॥
देवलोक गृहपति ब्यन्तर के । चौंसठ इन्द्र मिले सुरबर के ॥
मिलि रचना कलसन की कीनी । कनक रजित मनिमै रसभीनी ॥
एक कोट इक लाख सवाई । तिनकी संख्या तहां बताई ॥
तेसब नीर छीर निधि भरि भर । चौंसठ इन्द्र लिये अपने कर ॥
उद्यत भये न्हान हित सिगरे । हाथन लिये जड़ित मनि गगरे ॥
पंचम आरा आगम के गुन । संसय सर ज्यौं सुरपति के मन ॥
सिसुतन अति सुकुमार सुभायन । क्यों सहिहै यह भार अमितघन ॥
सो सब मनकी जिनवर जानी । स्रुति मति अवधि ज्ञान के ज्ञानी ॥
चरन अंगूठा धरनी चांप्यो । मेरु थेर सह पुहमी कांप्यो ॥
जलथल अनल अनिल नभ सारौ । हल चल खल भल मच्यो पसारौ ॥
देवि देव अहिगन गंधर्बौ । भये सबै बिसमय मय सर्बौ ॥
अवधि ज्ञान तब सुरपति देखा । जिन प्रताप अपने मन लेखा ॥
निज अग्यान जानि सुरनायक । जिनवर चरन गहे सुखदायक ॥

नाथ अपराध छमोजै । मे मिछामदुक्कडं कीजै ॥
विनयै जिन स्वामी । छमाकरी जिन पूरनै कामी ॥
ाय अंगूठ अवनि तें । मिथ्यो छुय्यो सब कम्प धरनितें ॥
म सुरपति तहं कीना । स्नान क्रिया मैं फिर चित दीना ॥
पहिलै जल ढारै । आन इन्द्र सुर पुनि पय पारै ॥
ान इन्द्र निज कोरैं । जिनवर कौं बैठाय निहोरैं ॥
भ तन धरि देविन्दा । आठ श्रृङ्ग करि सुभग तुरिन्दा ॥
जल जिनबर पर ढारैं । करि अभिषेक भरैं सुखभारैं ॥
मल कोमल पटप्यारैं । जिनतन पोंछि अंगोछि सुवारैं ॥
र कस्तूरी केसर । चन्दन लै जिन तन लेपन कर ॥
नै की पूजा साजैं । चरन जानु कर कुहनी राजैं ॥
स भालरु हिय कूषैं । येई जिनवर अंग अदूषैं ॥
लक देइ नव वारी । कुसुमांजलि प्रति तिलक सवांरी ॥
सुर तरु कुसुम समूहन । पूजै अति हित करि जिनवर तन ॥
रल कोमल कल दलसे । पट पहराये निरमल जलसे ॥
कनक रचित चित चहने । रतन खचित पहराये गहने ॥
ल तापर पहिराई । सुरभि धूप धूपैं सुखदाई ॥
द निवेदन कीनै । घण्ट सङ्ख करि नाद नवीनै ॥
लिक सन्मुख अरचे । स्वस्तिक घट भद्रासन चरचे ॥
रु नन्द आवर्त्ता । संपुट मत्स युग्म सुख कर्त्ता ॥
ठवौं दरपन जानै । अष्टमंगलिक ये परमानैं ॥
ानिक हीरा मोती । जिनकी जगमैं जगमग जोती ॥
रतन जतन करि तिनके । रचे मंगलिकसन्मुख जिनके ॥
ग आदि फल नीके । सन्मुख धरिअो जिनवर जीके ॥
ये गुन गान तरंगा । चंग मृदंग उपंग अभंगा ॥
ारती उतारैं वारै । तापर राई लोंन उतारै ॥
न बारि पुनि जिनकी । सत्तह भेदी पूजा तिनकी ॥
ज्जन सज्जन करिकै । लाये जहं चिसला सुखभरिकै ॥
ानी निद्रा हरिकै । पुनि प्रनाम जिन जननिहि करिकै ॥

कोरिन कंचन बरषा भरिकै । कोरि असीस जोरि कर करिकै ॥
सुर सुरपति सब सदन सिधारे । मंगल मोद भरे मन भारे ॥

अथ नृप सिद्धारथ छतोत्सव ॥

भोर भये ज्यौंहीं नृप जागे । पुत्र जनम आनंद रस पागे ॥
अधिकारी सब लये बुलाई । तिनसौं नृपति कहे समुझाई ॥
बंदीवान बंद सब छोरौ । मंगत मनुतें सुख मति मोरौ ॥
जेतो जो मांगै तिहि तेतौ । बिन पूछें दीजौ धन वेतौ ॥
खारी पाली गज अरु बटखर । तोल प्रमान सबै बढ़ती कर ॥
बीथी बगर भगर नगरी के । चौपथ चार चौक सिगरी के ॥
चंदन अगर अरगजा घोरौ । सींचि सींचि सब सौंधे बोरौ ॥
धुजा पताका घर घर बांधौ । दर दर मंगल तोरन साधौ ॥
चन्दन चरचित कलस धरावौ । कदली खंभन तें छबि छावौ ॥
कुसुम समूह माल फूलन की । मत्त मधुप मन अनुकूलन की ॥
ठौर ठौर सत कौरि बखेरौ । धूप द्रब्य धूपौ सत बेरौ ॥
नरतक नट भट भाड़ भगतिया । गनिकादिक जेहैं सुभ गतिया ॥
अप अपने गुन गन बिस्तारैं । जिहि लखिकै रीझैं रिझावारैं ॥
तंत बितंत सुषिरघन आवज । बीन बेनु कठताल पखावज ॥
तालतान गुन गान मान सुन । होहिं मोदमय सब जन पद जन ॥
अज्ञा लहि अधिकारी धाये । सजि सब सौंज खबर लै आये ॥
नृप सुनि जगे भाग लौं अपने । सफल भये रानी के सपने ॥
सैन ऐन तजि सरौंसदन मैं । श्रम करि हरि अति आनंद मन मैं ॥
उबटि अरगजा बासित तेलन । करि अभ्यंग अंग सुख भेलन ॥
न्हाय अंगोछि पोंछि तन कोमल । अमल अमोल बसन पहिरे काल ॥
पहिने गहने चहने जियके । मुकता हार चार छबि हियके ॥
मुकट कटक कुण्डल कटि मेखल । कण्ठी कण्ठ लसत मुकताफल ॥
पहुंची मुंदरी छला बिराजै । अंग अंग अति फबि छबि छाजै ॥
मंत्रि मुसाहिब सेनप साथा । सभा सदन आये नर नाथा ॥
बार भंडारन के सब खोले । दान जाचकन दये अतोले ॥
जातैं प्रथम खबर सुनि पाई । सवालाख तिहिं दई बधाई ॥

सुद मंगल मैं कुल व्यवहारा । जाति कर्म आदिक छबि भारा ॥
कीने छठी छठैं दिन कीनी । अति आनंद रंग रस भीनी ॥
पूत भये सूतक दिन बीतैं । न्यौते न्यात लोग करि प्रीतैं ॥
रचि पचि मची सजन जिवनारा । जेवन लगे नगर जन सारा ॥
मधु मेवा पकवान मिठाई । जो जाके मन भाई पाई ॥
घेवर बावर खुरमा खाजा । कहैं परस्पर रुचि सों खाजा ॥
गुप चुप गूझा सेव इमरती । मधुर जलेबी अमरित झरती ॥
पूरन पोलि कचौरी पूरी । कूपन छूरी स्वादन पूरी ॥
यौं अति अमित अनेक प्रकारा । कबि जन बरनि न पावैं पारा ॥
बिबिधि भांति के व्यंजन नीके । षटरस मिले भावते जीके ॥
कचरी कैर करौंद बखाना । अदरख नींबू बिबिधि सयाना ॥
दूध दहीकी कही न जाई । म्टदु माखन अरु मधुर मलाई ॥
और कहां लौं अधिक कहीजै । षटरस चैचलि पच पसीजै ॥
ऐसैं सब जिवनार जिवाई । बर बीरा पुनि दये खवाई ॥
जामैं लवंग सुपारी एला । केसर चूर कपूर सुमेला ॥
छिरके सब गुलाब के पानी । सभा अतर तर करि सनमानी ॥
पुनि पहिरावन दीनी जनकौ । भूषन बसन सु लसन सबन कौ ॥
रानीहूं सब तिय सनमानी । दीनी जो जाके मनमानी ॥
तास बास बासे मनि गहने । दै सब तिय सौं लागी कहने ॥
जबतैं जनम्यौ सुअन हमारे । अनधन जन दिन दिन अधिकारे ॥
यातैं सुभ सुत नाम पियारौ । बर्द्धमान हम अबतैं धारौ ॥
जैसो नाम आपहू तैसौ । दिन दिन बढ़न लगे दिन जैसौ ॥
धाय मायकौ दूध छुट्यो जब । लालन पालन तैं निकसे तब ॥
क्रम क्रम करि जब आठ बरस के । भये नये गुन दरस परस के ॥
तब सुर एक परिच्छा कारन । सिसु बपु धरि आये अनुहारन ॥
खेलन लग्यो कुमारन माहीं । जिन संग जिनबर रमत सदाहीं ॥
सुरमाया करि अहि बपु धरिकै । लिपट्यो द्रुमली तरुसौं अरिकै ॥
सिसु सब भय मय भये पराने । अहि गहि फेंक्यौ बीर महाने ॥
फिर तन सुर हय तनधरि लीनौ । तिन पर जिन आरोहन कीनौ ॥

जदपि अतुल बलकरि सो बाध्यो। सहि न सक्यौ जिनवर मल गाढ्यो ॥
तब परि पद अपराध छमायो। देवलोक कौं तुरत सिधायो ॥
नवैं बरस चटसाल बिठाये। जद्यप विद्या निधि जिनराये ॥
भूषन अमल अमोल पिन्हाये। उपाध्याय के पाउ लगाये ॥
ओंनमः करिसिद्धि प्रथमहीं। सुरव्यंजन बरवरन मरमहीं ॥
सकल शास्त्र विद्या जग जेती। स्वयंबुद्धि जिन जानैं तेती ॥
आयो सुरपति धरि द्विज देहा। पूंछन लग्यो कठिन संदेहा ॥
समाधान जिन ऐसौ कीन्हौं। उपाध्याय कछुं सक्यौ न चीन्हौं ॥
तब सुरपति सुख जिनवर महिमा। सुनि जान्यौ नहिं ऐसौ महिमा ॥
जद्यप उपाध्याय गुरुराई। बाल शिष्यके पकरे पाई ॥
मात पिता सुनि सुतके लच्छन। अति आनंदमय भये विचच्छन ॥
जोवन बय जब भये जिनेसा। ब्याहे राजकुमारि सुदेसा ॥
जसुदा नाम बाम सुकुमारी। तासौं विषय भोग सुखसारी ॥
बर्द्धमान जिहि भाख्यौ माता। महावीर जग समन विख्याता ॥
सिद्धारथ राजा पितु जाकौ। त्रिसला नाम जासु माता कौ ॥
भाई बड़ौ नंदबर्द्धन कहि। सुपारस्व नामा चाचा लहि ॥
जिहि सुदर्सना नाम बहिन कौ। प्रिय दरसना सुता दरसन कौ ॥
अरु जिनवर पुत्री की पुत्री। तासु नाम जसवती दुहित्री ॥
ऐसै ग्रही धर्म अनुसरि कै। बर संपति संतत सुख भरिकै ॥
जब अट्ठाइस बरस जिनेसा। भये मात पितु सुरलोकेसा ॥
अग्रज भ्राता सौं तब भाख्यौ। भई प्रतिग्या पूरन साख्यौ ॥
अब इच्छा दिच्छा की मनतैं। तुमडो परत रहत नहिं तनतैं ॥
बेग नाथ अब अग्या दीजै। जातैं जनम सुफल कर लीजै ॥
तब अग्रज भ्राता यौं बोले। मधुर बचन अम्रत के तोले ॥
सद्य सोग तातरु माता कौ। जिय तैं दुख यह मिट्यौ न ताकौ ॥
केतक दिन अब धीर धरीजै। पाछैं मन भावै सो कीजै ॥
मानी अग्या जिनवर स्वामी। जिन जनगन के पूरन कामी ॥
दोय बरस तब औरौं रहे। तीस बरस पूरे निरबहे ॥

अथ दीक्षा कल्यानक॥

देवलोक तैं देव पधारे। चारित समै जतावन वारे॥
कहन लगे जयजय जिन स्वामी। छत्रिय धर्म न्पन मैं नामी॥
आतम तत्व बोध अब कीजै। जिन जन जीवन कौ हित कीजै॥
सुनि संसारिक सुख सब जेते। जग धन अन उपबन घन तेते॥
बाज ताज गजराज राज सब। तजि दीने सुखसाज काज सब॥
कछु कुटुंब कछु दासन दीने। दान छमछरो मैं जे कीने॥
ते अब कहौं घरी छह माहीं। एक कोटि बसु लाख सवाहीं॥
तीन अरब अरु व्यासी कोरा। असी लाख दान सब जोरा॥
जत अग्रज भ्राता है राजा। दिक्षा समय महोच्छौ काजा॥
नगर भंगर सब नगर सिंगारे। धुज तोरन कलसादि संवारे॥
पुनि जिन कौ अस्नान कराये। सहस अठोतर कलस ढराये॥
भूषन बसन सरस पहिराये। अतर अरगजनि करि सुरभाये॥
चन्द्रप्रभा पालकि बैठाये। बिबिधि भांति बाजन बजवाये॥
चौसठ इन्द्रन कन्ध चढ़ाये। खत्रिय कुंड ग्राम मधि आये॥
नगर लोग सब देखन धाये। यों जब नगर बाहरैं आये॥
उपवन तजि बन घन नियराये। न्यात खण्ड बन घन जब आये॥
अति आनन्द मोद मन छाये। तरु असोक तर सोक मिटाये॥
पालकि तैं पुहमी पग धारे। तन तैं भूषन बसन उतारे॥
पंचमुष्टि करि लोच सु करिकैं। है उपबासे धीर चित धरिकैं॥
अगहनअसितदसमतिथकेदिन। नखतउत्तराफागुनितिहिछिन।
तीजैं पहर सुहत बर बासर। बिजै मुहूरत मैं ता तरु तर।
देवदुष्य तहं इक पट धास्यो। सब तजि चारित अंगी कास्यो।
मन परजाय ज्ञान तहं पायो। चौथौ ज्ञान आनि मन छायो
सुर कुल कुल कुटुम्ब जन जेते। जिन पद बंदि बिदा भये तेते
मुनि अग्रज सैं अज्ञा लैकैं। जिनबर बिहरे बिरहा दैकैं
सांझ समय इक गांउ कुमारा। तहां जाय पहुंचे सुकुमारा
काउसग्ग करि ठाढ़े रहे। आतम तत्व ध्यान धुनि गहे
ग्वाल एक तहं आवत भयो। बैल एक तिहिं थल धरि गयो

बगरि गयो सो चरत बिपिन मैं । ग्वाल आय पूछी बर जिनतैं ॥
मौन दसा जब ज्वाब न पायो । जान्यो चोर क्रोध अति छायो ॥
बड़ु ताड़न तरजन तिन कीनौ । सहन सील जिन सब सहि लीनौ ॥
मनु तनु धरि सुरपति तहं आयो । तिनग्वालहिं समुझाइ छुड़ायो ॥
सिद्धारथ नामा इक देवा । छांड़ि करन जिनबर की सेवा ॥
सुरपति आपु सुधाम सिधाये । द्विज बड़ुलालय जिनवर आये ॥
पायस पारन कीनौ जिहिं घर । कुसुम दृष्टि कीनी सब सुरवर ॥
ऐसैं आठ मास तप धारा । करि सुभ सुच्छ अहार बिहारा ॥
दोयभंत नामा तापस घर । पावस आदि पधारे जिनबर ॥
सुहो मित्र नृप सिद्धारथ कौ । अति सनमाने जिन तीरथ कौ ॥
भरि चौमासा रहिबे कारन । बिनयो मान लियो जिन तारन ॥
तहं जिन तप करि ध्यान लगायो । सुरन आय चन्दन तन लायो ॥
ताकौ सौरभ दस दिस छायो । अलिकुल चड़ुं दिस आय लुभायो ॥
सुर तरुनी सौरभ रस पागीं । जिन सौं चन्दन मागन लागीं ॥
जब जिनवर कछु ज्वाब न दीनौ । तियन सुतन जिन तनबसि लीनौ ॥
तिहीं बरस बरसात न बरसौ । तब सब लोग तहां कौ तरसौ ॥
कह्यौ साध यह कित तैं आयो । जातैं भयो सकल अनभायो ॥
लोक अहित तापसहुं मनधरि । भयो बिमन तापसहुं जिय करि ॥
सो जिय जानि जानि जिननायक । पांच अबि ग्रह लीने लायक ॥
बिना प्रीति कडुं रात न रहनौ । काउसग्ग तप करि निरबहनौ ॥
करतल भोजन मौनो रहनौ । नहीं जुहार गृही सौं कहनौ ॥
ऐसी पांच प्रतिज्ञा गहिकै । दुसह लोग अविज्ञा सहिकै ॥
अरध असाढ़हि तैं थल तज्यौ । बिहरि अस्थि नामा थल भज्यौ ॥
सूलिपानि तहं जच्छ कुमति गति । अस्थिरचित मठमांहि दुष्टअति ॥
रहै तासु पूरब भव कथा । सुनौ ताहि बरनौं मति यथा ॥
धन सारथ बाहु बिहवारी । ताकौ बैल थक्यो गति हारी ॥
तब तिन साह बैल अपनो लै । ग्रामाधिप कौ दियौ सौंपि कै ॥
और बडुत धन ताकौ दीनौ । दृष रच्छा हित सो तिन लीनौ ॥
पै ता दृष की सार न कीनी । धन सब खाय करी मति हीनी ॥

भूख कष्ट सहि वृष मरिगयो । सोई सूलिपानि जक्ष भयो ॥
पूरब बैर तहां तिन सुधि कर । मरी करी पसु नरकी घरघर ॥
दुपद चारि पद अगिनित मरे । लोक उपद्रव तैं सब डरे ॥
तब इक गनक तहां चलिआयो । नगर लोग सब पूछन धायो ॥
तब तिन एक उपाय बतायो । मरन जिते नर नारिन पायो ॥
तिन सबहन के अस्थि मगावो । वृषाकार इक मठ बनवावो ॥
सकल प्रजा मिलि त्योंहीं कीनौ । भयो सुदेस उपद्रव हीनौ ॥
तादिन तैं ता मठ केमाहीं । रह न सकै कोऊ निसि ताहीं ॥
तहां बसे निसि जिनवर नामी । जद्यप लोगन बरजे स्वामी ॥
तहं तिन जच्छ बड़ो भय दीनौ । गज अहि बीछी बपु धरि लीनौ ॥
निफलभयोबलछलकरिधाक्यो । जिन पदपस्यो कुमति मदछाक्यो ॥
जोरि हाथ अपराध छमायो । ताहि प्रबोधि आप अपनायो ॥
चरम रैन कछु रहत सवारे । दस सुपने जिन नाथ निहारे ॥
प्रथम पिसाच दुष्ट इक मारा । सित कोइल पुनि असित निहारा ॥
फूलमाल गो वरग सुहायो । पदम सरोवर सिंधु सुहायो ॥
दिनकर मेरु आंत तरु लिपटी । यों दस सुपन नींद लखि उचटी ॥
जन पद जन जिन महिमा जानी । सब मिलि बंदे पूरन ज्ञानी ॥
अस्थि ग्राम चौमासा रहे । मौन वृत्त सब असहन सहे ॥
गनक एक जिन सनमुख आयो । तिन बिवाद करि सोर मचायो ॥
मौनि प्रतिज्ञ जानि सिद्धारथ । जिन तन पैठ्यो साध्यो स्वारथ ॥
करि बिबाद सो गनक हरायो । हारि दीन ह्वै बिनय सुनायो ॥
स्वामी तुम साधन में नामी । जहां रहौ तहं पूरन कामी ॥
पै मोको यह थल तजि दूजै । कोउ न मानै कोउ न पूजै ॥
यह सुनि जिन कछु बरखा रहतैं । जानि अप्रीति बिहारे तहंतैं ॥
सोमदत्त द्विज मित्र पिता को । तहां मिले मारग मैं ताको ॥
हाल बिहाल निहारि जिनेसा । कृपा दृष्टि चितये सुभबेसा ॥
तब उन अपनौ दारिद भाख्यौ । जातें सुतिय मान नहिं राख्यौ ॥
तब सुनि सोचे जिनवर स्वामी । हैं। निर्ग्रंथ यह अर्थी कामी ॥
इहि थल याहि कहाधौं दीजै । आस निरासो कैसे कीजै ॥

देव दूष पट आधौ फाड्यो । दारिद दरद हिये तैं काढ्यो ॥
ताकी कोर सुधारन द्विजवर । बस्त्र गयो लै तांती के घर ॥
तिन तांती ताकौ कहि साधौ । जौं लै आवै दूजौ आधौ ॥
ऐसौ साधि देहुं मैं सो पट । लाख मोल पावै सो नहिं घट ॥
लोभ लागि सो द्विज फिरि धायो । श्री जिनवर स्वामी ससुहायो ॥
पै अति सोच सकोचन पाग्यो । मांगि सकै नहिं लालच लाग्यो ॥
तिहिं छिन कंटक छच्छन माहीं । उरझ्यो देवदूष पट ताहीं ॥
जिनवरतिहिंफिरिलखितहंत्याग्यो।तिहिंलीनौद्विजलालचलाग्यो ॥
लोभ सबल जिन जान्यो दुरघट । क्यों नदियो पहिलैं सिगरोपट ॥
पंचम आरौ निकट संभाल्यो । जिहिं कुसमय गुन मो मनचाल्यो ॥
यों बिचारि जिनवर जिय जाने । आगम काल साध पहिचाने ॥
क्रूर लोभ मय होहिं काल बस । मोमन लोभ बस्त्र कण्टक फस ॥
कंटक क्रूर दिब्य पट धार्‍यो । लोभ परिग्रह करन बिचार्‍यौ ॥
तेरह मास दिब्य पट सोई । जिनवर तन आच्छादन होई ॥
तदनन्तर भगवन्त जिनेसा । लगे रहन बिन बसन सुबेसा ॥
करतल बन आहार बिहारा । काय नेह तजि आतम धारा ॥
सहैं सहन असहन उपसर्गा । जो किय तिय पसु मनु सुरबर्गा ॥
पुनि जिन बिहरि तहां तैं आगे । कनक बालुका भुव तट लागे ॥
गांउ कनक खल ढिग जिनवर जे । पहुंचे तहं के लोगन बरजे ॥
आगे रहैं दुष्ट बिष बिषधर । दीठ बिषहिं तैं जो मारत नर ॥
चंड कोश ता अहि को नामा । काल कराल क्रोध को धामा ॥
याहू की पूरब भव भाखी । भाखौं जिन अहि तन उरझाखी ॥
इक दिन कोऊ नगर मझारी । पावस रितु मुनि जिन ब्रतधारी ॥
गये गोचरी हेत गृही घर । मरी मेड़की दबि मुनि पग तर ॥
शिष्य देखि सो बोल्यो गुरु सों । देहु स्वामि मिच्छामदुकड़ौं ॥
गुरु न मानि जब निज थल आये । फिर चेला सुद्ध भाव चिताये ॥
फिरि संध्या पड़क मन समैहूं । गुरु न कही मिच्छामि दुक्कडूं ॥
तीन बेर चेला बर गुरुसौं । भाखि रह्यो नहिं मानी धुरसौं ॥
अरु तापर अति क्रोध पसार्‍यो । मुनि चेला ओघा लै मार्‍यो ॥

चेला गुरु क्रोधी। मरि तीजे भव भयो बिरोधी॥
क बाग बनायो। सो फल फूलन तें अधिकायो॥
कुंअर तिहिं बारी। आय एक फल तोस्यो भारी॥
अति तामस छायो। लै फरसा तिहिं मारन धायो॥
ग अंध सु कस्यो। अंध कूप मैं सो गिरि मस्यो॥
व सो तापस तयो। चंड कोशं दृग विषधर भयो॥
य ह्वै जिन नाथा। ताही पै गये करन सनाथा॥
जिन बितई नीसा। अहि घर तैं कढ़ि जिन तन डसा॥
बदलैं निकसा। बदन कमल जिनवर का विकसा॥
कौं जिन दीना। तिन सुनि समझि चरन गहि लीना॥
न करि संथारा। देव लोक आठवैं सिधारा॥
नि जिननाथा। करि पारन तिहिं कियो सनाथा॥
तहां तें बिहरे। श्वेतंबिका नगर मैं ठहरे॥
नाम तहां तिन। महिमा मानी जानि नाथजिन॥
सुरभि पुर पैठे। उतरन गंग नाव पर बैठे॥
नाग कुमारा। लग्यो आय तहं बोरन वारा॥
सिंह संभारा। बासुदेव ह्वै जेहि जिन मारा॥
देवन ताकौं। बरजि जताई जिन महिमाकौं॥
ब भव करनो। सुनि बरनैं जो आगम बरनी॥
दास महाजन। तिन निज वृषजोरी इकदिनछन॥
मांगे दीनी। तिन अति वाहि करी बलहीनी॥
वकार सुनायो। मरि सुभ ध्यान देवपद पायो॥
तिनकौ नामा। सब देवन मैं भये ललामा॥
ग विहरन लागे। पांच सुमति मिति के रसँ पागे॥
तादिक त्यागे। स्वच्छ इच्छ तजि बिहरन लागे॥
आकासा। निस्नेहो ज्यों पवन बिलासा॥
नाई निरमल। मरजादानतजत जिमि निधिजल॥
मान एकाकी। ससि सम ताप न जामैं बाकी॥
न्द्रिय कछुवा लौं। चारित भर बाहक बरदा लौं॥

द्रव्य न देसन भाव न काला। प्रति बन्धे नहिं जिन जन पाला ॥
ऐसैं जग बिचरैं जिन स्वामी। जिनजन गन के पूरन कामी ॥
पंचरात नगरी मैं बसैं। इक निसि गांव सांझ बसि नसैं ॥
विष चन्द्रन तन मनि सम जाकैं। जीवन मरन समान सुताकैं ॥
ऐसैं जिन जन पारंगामी। महाबीर बर भगवत स्वामी ॥
विहरैं बिचरैं बिपन नगर मैं। अमल अचैल अबोल डगर मैं ॥

घनाक्षरी॥

मान कौ न मान अपमान अपमान कौ न राग हूं सौं राग न बिराग है बिराग सौं। सूरज से सूर पूरे सोम जैसे सोम कूरे धूरे हूं अधूरे हैं सहज जाकी जाग सौं॥ धराधर जैसे धीर बीर वलबीरजू से छीर नीर निधि से गंभीर चीर त्याग सौं। ऐसैं बिहरत बीतराग महाबीर स्वामी जाकी यौं महातम है आतम की लाग सौं ॥

चौपाई ॥

तदनंतर दूजै चौमासे। राज ग्रही नगरी मैं यासे ॥
तांती मनखल बासा दीना। पारन विजय सेठ घर कीना ॥
मनखलसुतगोसालक तिहिंठां। जिनगोहनलाग्योलखिमहिमा ॥
जिनबर तब तिहिं पूछ्यौ भारौ। तिन भाख्यौ हौं शिष्य तुम्हारौ ॥
स्वर्न बालुका पुर जिन आये। नंदन द्विज पारन करवाये ॥
हो उपनंद तासु को भाई। गोसालक तहं भिच्छा पाई ॥
कुत्सितान्न लहि कोप अधीनौ। स्राप ताहि ऐसो कहि दीनौ ॥
जो मो धर्म्माचारज सांचौ। तौ तुव घर जारै अगिनाचौ ॥
स्राप देत ताकौ घर जर्‍यौ। क्रोध छाय ऐसौ बल कर्‍यौ ॥
मनखल-सुत निजछात अभिमानी। भयो क्रयो मद गरब गुमानी ॥
चम्पा द्रष्ट गांव मैं आये। चौथी बरषा तहां बिताये ॥
जीरन सेठ निमंत्रन दीना। अभिनय के घर पारन कीना ॥
लाठ देस मैं पुनि जिन आये। काउसग्ग तप ध्यान लगाये ॥
तब तिहिं काल ग्वाल इक आई। जिन पग पर धरि खीर रंधाई ॥
बरखा रितु जिन तहां गंवाई। पुनि छठई बरखा जब आई ॥

पुरी भद्रिका जिन छबि छाई। आठ मास रितु तहां बिताई॥
तहां बहुत उपसर्ग सहे जिन। चातुर मास सातवैं पुनि तिन॥
आलविका नगरी मैं आये। गोसालक उपसर्ग बढ़ाये॥
पुनि तप समय साल बन थल मैं। कट पतना व्यंतरी गन तैं॥
बहु उपसर्ग भये जिनवर कौं। राज ग्रही पुनि गये नगर कौं॥
बरष आठवां तहां बिताई। नवम अनारज थल मैं छाई॥
तहां भये उपसर्ग अनेका। गांउ कुचूरन देख्यो एका॥
तहं तापस इक अति तप साधै। भारी जटा सीस पर बांधै॥
तातैं जंतु जूंय जो गिरै। तापस तिहिं फिरि सिर पर धरै॥
गोसालक ता तपसी बरज्यौ। सो तपसी ता ऊपर तरज्यौ॥
तेजोलेश चलाई तापैं। जरन लग्यो गोसालक जातैं॥
सहि न सके जिन परम दयाला। सीतोलेश तजी तिहिं काला॥
गोसालक कौ मरत बचायो। तब गोसाल चेत चित पायो॥
सिद्धारथ सौं पूछि तबै उन। साधी सिद्धि तेज लेशा पुन॥
पुनि सावस्ती नगरी आई। दसईं बरखा तहां बिताई॥
पुनि पोढ़ाल नगर मैं जिनवर। काउसग्ग तप करि ठाढ़े धर॥
जिन बल प्रबल प्रसंस प्रसंगा। इन्द्र सभा मैं भयो अभंगा॥
तहं अभव्य संगम सामानिक। चही परिच्छा करन अचानक॥
तिहिं थल आय एक निसि मैं तिन। बीस किये उपसर्ग सहे जिन॥
अहि गज सिंह आदि तनु धरिकैं। अमित उपाय किये तिन डरिकैं॥
डग भर डिगे नहीं जिन स्वामी। भव भय जल निधि पारंगामी॥
यों छ मास लौं सहि उपसर्गा। चूके नेक नहीं तप बर्गा॥
तब तिहिं इन्द्र आय अति दूख्यौ। सो निज दोष मानि मुख सूख्यौ॥
नीत रीत हित तिहिं सुरराई। मेरचूल कौं दियो पठाई॥
वृद्ध गुवाल तहां इक आयो। हत छ मास पारनौ करायो॥
सुसमापुर पुनि आये जिनवर। चातुरमास ग्यारहौं तहं कर॥
चमरुत्पात भयो ताही थल। कौसंबी मैं रहे महाबल॥
तहां पोस बदि पड़िवा कैं दिन। जिनवर लियो अविग्रह सो सुन॥
उड़द बाकला सूप कोन में। इक पग बाहर एक भौन में॥

राजकुमारी मूंड़ मुड़ायें । पग बेड़ी अरु नागे पायें ॥
दासी ह्वै रोवत मधि दिन मैं । तीन उपास तासु पारन मैं ॥
जो ऐसैं हमकौं विहरावै । भावभगति करि तौ मन भावै ॥
ऐसैं छव प्रतज्ञ ह्वै जिनवर । पारन हित नित बिचरैं घरघर ॥
दैवजोग तैं न्रपति सघानिक । दधिवाहन न्रप तिन कीनौ दिक ॥
मारि तासु की चंपानगरी । बन्द लूट कीनी सो सिगरी ॥
परी एक भट कर तिहिं रानी । गई बिकल ह्वै जात परानी ॥
तिहिंभटतिहिं बदनजरनिहार्‌यो । काटिजीभतिनमरनसुधार्‌यो ॥
बची तासु कब चंदन बेटी । चंदमुखी गुन रूप लपेटी ॥
ताहि मूढ़ भटी बेचन लाग्यो । धनासेठ तिहिं लखि अनुराग्यो ॥
मुक्क माग्यो ताकौं धन दैकै । बाल चंदना मोल सु लैकै ॥
आयो घरै लाय तिहिं राखी । हितकित बानी तासौं भाखी ॥
मूल कुमूला सेठ सिठानी । अति कलहा तिहिं लखि अनखानी ॥
कोपि तासु कौं मूंड़ मुड़ायो । पग बेड़ी दै कैद करायो ॥
तीन दिना लौं भूखी प्यासी । कैदै माहिं रही सो दासी ॥
चौथे दिन तिय अनत सिधाई । सेठ खबर दासी की पाई ॥
काढ़ि बंद तैं बाहिर आनी । आश्वासित करि कहि म्रदुबानी ॥
उड़द बाकला प्रस्तुत पाये । सूप कोन मैं ताहि दिवाये ॥
आप लुहारहि बोलन धायो । बेड़ी काटन हित मगवायो ॥
ऐसैं मैं जिनवर तहां आये । दौरि चंदना दरसन पाये ॥
अपनौ भाग्य बिचारि सभागी । उड़द जिनै विहरावन लागी ॥
तब जिन निज परतज्ञ बिचारी । सब पाई जो चित मैं धारी ॥
देस काल ज्यौं के त्यौं पाये । रुदन बिना सब भाव सुभाये ॥
यह चित धरि जिन फिरे बिरागी । बाल दुखित ह्वै रोवन लागी ॥
तब फिर फिरि जिन पारन लीना । चंदन तियहिं क्रतारथ कीना ॥
बेड़ी पगन आपही टूटी । बेनी सिर पर लांबी छूटी ॥
सकल देव गन लहि सुख हरखे । बारह कोटि सोनैया बरखे ॥
सो धन राजा लैन बिचारी । देव गिरा तहं प्रगटी भारी ॥
यह धन तेरे काम न आवै । जब चंदन तिय दिच्छा पावै ॥

ताकौं होय महोच्छव जबहीं । यह धन खरच होयगो तबहीं ॥
म्रगावती राजा की रानी । सो चंदन की मासी जानी ॥
तिन चंदन कौं लई बुलाई । अपने ढिग राखी सुख पाई ॥
चातुरमास बारवैं जिनवर । चंपानगरी पहुंचि रहेकर ॥
मास तेरवैं बन तप कीना । पूरब भव बैरी तिन चीना ॥
जाके कान माहिं तिहिं भव मैं । तपत धात डारीही दवमैं ॥

अथ कथा ॥

ताकी कथा कहौं बिस्तारी । बासुदेव भव जिन अरिहारी ॥
एक समय नटनाटक सुनतैं । आवनलगी नींद सुख गुनतैं ॥
सेजपाल सौं तब उन भाखौ । इनकौं अब नाटक तैं राखौ ॥
यौं कहि सोये नरबर स्वामी । पै बरजे नहिं उन धुनि कामी ॥
नाटक धुनि तैं प्रभु जब जागे । अज्ञालोप लेखि रिस पागे ॥
ताके कान माहिं तिहिं काला । धातु औटि डारी नरपाला ॥
अबकैं तिन तन ग्वाला कौ धरि । बैर पाछिलौ सुमिर कोपकरि ॥
तीखी मेख काठ की गढ़िकै । जिन तप समय आय तिन बढ़िकै ॥
कान माहिं गहि बल करि ठोकी । बैर बदलि सब ज्यौंकीत्यौं की ॥
तिन पापी ऐसो दुख दीनौ । तिन बेदन कीनौ तन छीनौ ॥
तहतैं जिनबर बिहरि सिधाये । बैद खरक नामा घर आये ॥
तिन अति बल करि कीली काढ़ी । जातैं अधिक बेदना बाढ़ी ॥
काढ़त सबद कियो जिन भारी । गिरि दरके धर धरकी सारी ॥
ह्यांलौं सब उपसर्ग बदे जे । भये संपूरन ते जिनवर के ॥

अथ महाबीर के वलज्ञान कल्यानक ॥

ऐसैं बारह बरस पुराये । ता ऊपरछह मास बढ़ाये ॥
पंद्रह दिन ता ऊपर बीते । तीन पहर हूं तहां बितीते ॥
दसमी सुदि वैसाख मास तिन । बिजय मुहूरत सुव्रत नाम दिन ॥
उत्तर फागुन नखत जोग ससि । गांउ ज्रिंभका तिहिं बाहर बसि ॥
साल तरु तरैं रिजुसरिता तट । आतम तत्व ज्ञान पूरन घट ॥
द्वै उपास उत्तर तरु हेठे । चौविहार करि उकडूं बैठे ॥
तहं अति उत्तम ज्ञानन माहीं । केवलज्ञान लह्यो तिहिं ठाहीं ॥

ता दिन तें अरिहंत कहाये। सुर मुनि मनु मन जान सुहाये ॥
भीत ओट की नहिं कछु छानी। ऐसे जिनवर केवल ज्ञानी ॥
जीव गतागत भव काया थित। मन वच काय करम की परिमित ॥
गुपत प्रगट सब जाननहारे। यों विचरैं जिनवर भव डारे ॥

अथ समोसरन वर्णन ॥

जबै भये जिन केवलज्ञानी। सब जीवन की छानी जानी ॥
तब ज्रिंभक नगरी मैं आये। सब देवन के भये बधाये ॥
चौंसठ इन्द्र चारि विधि के सुर। महिमा लागे करन जान गुर ॥
समोसरन जिनवर हित रच्यौ। एकौ सुख जातैं नहिं बच्यौ ॥
आदि जिनेसर हित हूं ऐसैं। सुरन रच्यो हौं बरनौं तैसैं ॥
बारह जोजन मिति ही ताकी। द्वै द्वै कोस ऊन की बाकी ॥
बाईसौं जिन लौं या क्रम सौं। रचयो समोसरन अनुपम सौं ॥
तेईसौं पारस जिन तारन। पांच कोस कौ रचि तिन कारन ॥
महावीर स्वामी जिन हेता। चार कोस कौ कियो निकेता ॥
सुथल समान स्वच्छ अति नीकौ। परिधाकार भावतौ जीकौ ॥
पुनि बैमानिक सुर तहं आये। तिहिं थल पर गढ़ तीन बनाये ॥
प्रथम रजित दूजौ कांचनकौ। तीजौ जोत मई रतननकौ ॥
रजित दुर्ग मै म्रगकुल जितने। बैर भाव तजि बसैं सु तितने ॥
दूजै कंचन दुर्ग मझारी। सुबस बसैं खग कुल अविकारी ॥
रतनमयी तीजैं गढ़ माहीं। सुर मुनि नर नारी तिहि ठाहीं ॥
बारह बिधि के ते सुभ साखैं। जाहि परखदा बारह भाखैं ॥
आठ जात के सुर सुर नारी। चारि संघ सो सुनि बिस्तारी ॥
वैमानिको भुवन पति व्यंतर। अरु जोतिको चारि विधि सुरवर ॥
चारि जात की तिनकी नारी। साध साधवी अरु व्रत धारी ॥
और श्राविका श्रावक मिलि सब। भई परखदा बारह तहं तब ॥
ते सब रतनकोट के माहीं। अप अपने थल बसैं तहांहीं ॥
इक दिस साधु साधवी सुरतिय। सुर श्रावक श्रावकातियदिसबिय ॥
जोतकि ग्रहपति व्यंतर तीजैं। तिन की तिय चौथी दिस भीजैं ॥
यों बारहौं परखदा सिगरी। मनिमै दुर्ग बसैं गुनअगरी ॥

तिन तीनौ गढ़ के सुभ साजा । चारिचारि चऊंदिसि दरवाजा ॥
छोरन की तोरन तहं सोहैं । सुर मुनि मनु गन के मन मोहैं ॥
अनगन नग की जगमग जोती । रचे सदन मनि मानिक मोती ॥
भांतिभांति फबी फुलवारी । पचरंग रंगनि चुरतिसी क्यारी ॥
दसौं दिसा सौरभ भरिउमड़ी । चऊंदिसि तें अलि अवली झुमड़ी ॥
वर सरवर तरवर घन मांहीं । ठौरठौर सुठि स्वच्छ तहांहीं ॥
चऊं दिसि जाके मनि सोपाना । फूले विमल कमल कुलनाना ॥
भौंरझौंर जिनके रसराते । मधुमकरंद छके मदमाते ॥
राजहंस के वंस अनेका । कुंजपुंज मंजुल गन भेका ॥
अच्छ प्रतच्छ स्वच्छ जल माहीं । मच्छ कच्छ परतच्छ दिखाहीं ॥
निसिदिनदिनमनिगनदुतिचहिकै । कोकसोकछाड़तसुखलहिकै ॥
यों अनेक जलचर जलपच्छी । बर बलाक सारस छवि अच्छी ॥
सुखसमाज कारज जग जेते । नृत्य नाट्य गंध्रप गुन तेते ॥
बिबुध बधू अप्सर किन्नरवर । मिलि नाचत गावत मधुरे सुर ॥
तंत वितंत सुषिर घन आवज । बीन बेनु कठताल पखावज ॥
इन्हें आदि दै जेजे बाजे । ते अगिनत तहं बाजि बिराजे ॥
और कहां लौं कबि जन बरनै । होय न अमित गुनन कौ निरनै ॥
सुरन रच्यौ ऐसो सुखदायक । यल अनूप जिननायक लायक ॥
जिन जिनके अतिसै चौंतीसा । सो बरनौं अब बिस्वावीसा ॥
तन बिन सेद बिमल बिनछाया । सुरभि सुरूप सुलच्छन काया ॥
छीर बरन स्रोनितरंग जिनकौ । सम चतुरस्र संस्थ तन तिनकौ ॥
अमित वीर्य अति प्रिय हितबानी । बज्र नराच रिषभ तनमानी ॥
छेम सुभिच्छ आठ सै कोसा । गगनगामि जनमित अदोसा ॥
चतुरानन सब जिय बध वारक । सब उपसर्ग रहित जिनतारक ॥
वरविद्येश केश नख समता । कवल अहार रहित जिन गमता ॥
अनमिख अरध मागधीभाखा । फलि फले सब रितु तरुसाखा ॥
दर्पनसम भुवजन मुदकारी । बहै सुरभि अनुकूल बयारी ॥
भुव कंटक रज कांकर हीनी । सुरभि सलिल बरसन रसभीनी ॥
कनक कमल रचना जिन पगतरा नमित सकल अनतरु बरफरभर ।

अमल अकास और दस आसा । सुरगन आकारन गुन खासा ॥
धर्म चक्र आगैं चलि राजै । अष्ट मंगलिक सन्मुख छाजै ॥
चौंतीसौं अतिसय ये जिनके । कहौं अष्ट प्रतिहारज तिनके ॥
तरु अशोक त्रय छत्र बिराजनि । भामंडल सुर दुन्दुभि बाजनि ॥
चंवर सिंघासन दिव्य धीर धुनि । कुसुम दृष्टि सुर करत तहां पुनि ॥
येई आठ कहे प्रतिहारज । चारि अनंत सुनौ सुख कारज ॥
ज्ञान अनंत अनंते दरसन । बल अनंत त्यौंहीं सुख बरसन ॥
ऐसे जिन जिनके हैं ये गुन । तिनकी महिंमा बरनौं सो सुन ॥
समोसरन की मध्य मही मैं । जाकी महिंमा प्रथम कही मैं ॥
कनकदंड मनिखचित बिराजै । जोजन सहस उच्च छबि छाजै ॥
तापर पंचरंग धुजा बिराजै । इन्द्रधनुष जाकौ लखि लाजै ॥
तहं अशोक अरु शोक निवारैं । तिहिं तर रतन सिंघासन ढारैं ॥
छत्र तीन सिर ऊपर सोहै । बदन प्रभा भामंडल मोहै ॥
ता थल महावीर जिनस्वामी । बैठे कनक सिंघासन नामी ॥
चार्‍यो दिस करि चार बदनतैं । मेघगिरा गंभीर सघनतैं ॥
धर्म बखान बखानै जामैं । सब समझैं अपनी भाखामैं ॥
पै यह धर्म देसना बानी । सुनी सबन पै किहूं न मानी ॥
सो जग माहिं अचंभौ भयौ । प्रथम अछेरन मैं सो कह्यौ ॥
जिनवर सो थल हीन विचार्‍यो । पापापुरी नाम तिहिं धार्‍यो ॥
तिही राति तहं तैं जिन बिहरे । मध्यम पाप सेन बन ठहरे ॥
त्र्यंभक नगरी मैं तिहिं काला । सोमल द्विज क्रतु कियो विसाला ॥
ग्यारह द्विज वेदज्ञ बिचच्छन । जिनके शिष्य अनेक सुलच्छन ॥
इन्द्रभूति आदिक तिहिं नामा । विद्यासागर गुनगन धामा ॥
औरौ द्विज अनेक तहं पागे । अप अपने अधिकारन लागे ॥
जज्ञ करन लागे सब द्विज मिल । समोसरे जिनवर तब तिहिं थिल ॥
अष्ट महा प्रतिहार तीन गढ़ । मिली परखदा बारह बर बढ़ ॥
देवदुंदभी बाजन लागे । सुरगन सब आये गुन पागे ॥
सुर आवत लखि द्विजन बिचारी । इहां जज्ञ आवत अघुरारी ॥
जब तहंतैं सुर अनत सिधारे । द्विजवर कोप भरे अति भारे ॥

इंद्रजालि यह कोऊ भारी। जिन बंचे अनगन असुरारी॥
यातैं याके तट अब जैये। विद्या वाद विवाद हरैये॥
ऐसैं कहि तहं से द्विजनायक। संग पांच सै शिष्य सुलायक॥
समोसरन थल पहुंचे आई। जहां मिले सब सुर समुदाई॥
जिनवर महिमा लखि भय पाये। लखि प्रभुता अद्भुत रस छाये॥
तबतैं द्विज मन यहै बिचारैं। जौं जिन मन संदेह निवारैं॥
तौ हम इनकी महिमा जानै। जिनवर महावीर कर मानै॥
ऐसैं जब उन हियै बिचारी। जिनवर मन की जानी सारी॥
पहिलैं स्वागति करि सतकारे। पुनि सन्मानि मान दै भारे॥
कह्यो तुमारे उर अंतर जो। सो हम सब जानैं सुनिये सो॥
तीन दकार चहत तुम भाख्यौ। अरथ तासुकौ पूछन राख्यौ॥
सो हम तुमकौं देहिं बताई। दया दान दम तीनौ भाई॥
इन्द्रभूति सुन बिस्मित भयो। चकित होय अदभुत रस छयो॥
जिन महिमा उन निहचै जानी। जैनी दिच्छाले सनमानी॥
औरौं दसौं विप्र जे रहे। शिष्यन सहित जैन पथ गहे॥
भये ग्यारहौं गनधर नामी। सब प्रतिबोधे जिनवर स्वामी॥
एक मुहूरत माहिं पढ़े सब। द्वादस अंगी चौदस परब॥
तिनमैं इन्द्रभूति जो रहैं। तिनहीकौं गोतम जिन कहैं॥
सो गोतमस्वामी महिमा सुन। अदभुत रूप उदार चारगुन॥
जावजीव जिन छठ तप कीना। लब्धि अठाइस जिहिं आधीना॥
आठसिद्धि अरु चार ग्यान जुत। इक केवल बिन सब गुन संयुत॥
इकदिन जिनसौं पूछ्यौ गोतम। क्योंकरि केवल मिलै महातम॥
बीतराग भाख्यौ गोतम सौं। करौ अष्टपद तीरथ क्रमसौं॥
तद्भव सिद्धि तुम्हैं तहं मिले। सुनि गोतम अष्टापद चले॥
अपनी लब्धिन के बल बढ़े। पहुंचि तुरत तिहिं ऊपर चढ़े॥
प्रथम जुहारि सकल थल सोधे। तिर्यक जृंभक सुर प्रतिबोधे॥
जब उततैं उतरन चित दीने। पंद्रहसै तापस सिख कीने॥
जिहिंजिहिं गोतम दिच्छा दीनी। तिनतिनसबनग्यानपथचीन्ही॥
तऊ न ग्यान गोतमैं होई। तब जिनवर सौं पूछ्यौ सोई॥

बीत राग गोतम सौं भाख्यौ। तुम मोपै अति राग जुराख्यौ ॥
ताहि तजौ तौ उपजै ज्ञाना। बिन त्यागे कछु. परै न जाना ॥
तब गोतम भाख्यौ बरजिनसौं। छुटै न राग तुमारौ मनसौं ॥
सुनि मनमानि कह्यो गोतम से। तुमहूं अंत होयहौ हम से ॥
ऐसें कहिकहि अति हित पोखे। गोतमस्वामी हूं संतोखे ॥
चातुरमास जिते जहं जिनवर। रहे सु अब भाखों इकठेकर ॥
अस्थिगांव पहिले चौमासे। महावीर जिनवर तहं यासे ॥
चंपा पृष्टि चंप चित दीने। तहां तीन चौमासे कीने ॥
वानिजगांव विसाले माहीं। बारह बरखा रहे तहांहीं ॥
राजग्रही नगरी तब आये। चौदह चातुरमास बिताये ॥
मिथिला मैं छह कीने स्वामी। दोय भद्रिकापुरी सुधामी ॥
आलभिका मैं एकै बरखा। सावत्थी इक बितई बरखा ॥
एकै देस अनारज माहीं। चौमासा भरि रहे तहांहीं ॥
हस्तिपाल न्टप राज सभा सें। अंत एक बरखा बसि तामैं ॥

अथ महाबीर मोक्षकल्यानक ॥

बयालीस बरसात बितीतैं। याकौ पाख सातवौं बीतैं ॥
तीस बरस ग्रहआश्रम गहिकैं। साढ़ेबारह चारित लहिकैं ॥
रहि छद्मस्त पने, पुनि पायो। केवल बत्सर तीस बितायो ॥
बरस बहत्तर पूरे भये। उत्सर्प्पनी काल बय भये ॥
सुखम दुखम चौथे आरे के। कोड़ा कोड़ एक वारे के ॥
सहस बयालिस बरस ऊन मैं। तीन बरस चौमास दून मैं ॥
ता ऊपर पंद्रह दिन रहतैं। पावानगरी माहिं निबहतैं ॥
हस्तपालन्टप थल मंडही मैं। स्वाति नखत संगम ससिही मैं ॥
कातिक कृष्ण कुहू निस रहतैं। चंद्र नाम संवत्सर कहतैं ॥
प्रीतवर्द्ध नामा जहं मासा। पाख नंदवर्द्धन कहि खासा ॥
अग्निबेश दिन देवानंदा। तिहीं निसा कौ नाम अमंदा ॥
चौबिहार द्वै वास सुधारे। सूरउदय तें प्रथम सकारे ॥
पद्मासन सुन आसन ठाने। चंपावन अध्यैन बखाने ॥
सुख बिपाक मंगल फल भाखैं। पंचावन अध्यैन सुसाखैं ॥

दुखबिपाक ताकौ फल कहते । बत्तिस ध्यैनन पूछै बहते ॥
तिहिं छिन ताही काल बसंता । जिनबर महाबीर भगवंता ॥
मुक्ति जान कौं सुसमय लह्यौ । तब तहं इन्द्र आन यौं कह्यौ ॥
जै क्यौंहूं करि यह छिन बीतै । घरी दोय यह काल बितीतै ॥
नातरु दुष्टभस्मगृह छैहै । सकल असुभ फल बल दल सैहै ॥
याकौ फल द्वैसहस बरस लौं । साध साध्वी जती सतीकौं ॥
अधिक मान सनमान न होई । जबलौं बरस न बीतै सोई ॥
सुनि बोले सुरपति सौं जिनबर । सुरगिर चालनसकौ धरनिपर ।
पै यह समै न टाल्यो जाई । जोकरमन थिति बांधि बनाई ॥
यौं कहि सब बंधन तजि दीने । आठौं कर्म तजे स्वाधीने ॥
सिद्धिवुद्धि जुत मुक्ति सिधारे । सकल भीम भवभय निरवारे ॥
तब सुर चंदनमय चय कीना । अगिनकुमार अगिन रचिदीना ॥
बायकुमार अगिन परजारी । मेघकुमार सींचि चय डारी ॥
उत्तरसंसकार बरजिन कौं । ऐसैं भयो भयो दुख जन कौं ॥
नव मल्ली नव लच्छ आदि दै । मिले अठारह नृप ता थलपै ॥
तिन सब तिहिं निरवानरैनदिन । पोसाकरिबितयोसोदिन छिन ॥
ग्यान जोत जिन सिद्ध सिधारे । फैलि गये जगमैं तम भारे ॥
तब सब लोगन दीवा बारे । नामदिवारी तबतैं पारे ॥
पुनि भगवंत मुक्ति तदनंतर । सुच्छम जीव कंथुआ धर पर ॥
उपजे तिहिं लखि प्राय साधुजन । त्यागि आप अन त्यागि दयेतन ॥
शिष्यन सौं गुरु कहन लगे यौं । अब चारित दुस्साध्य भयौल्यौं ॥
मुक्ति समै निज लहि जिन उत्तम । दिच्छा हित पठये है गोतम ॥
तिन निरबान समै देवन तैं । पूछ्यौ तुम कित जात सदन तैं ॥
देवन जिन निरबान सुनायो । सुनि गोतम अतिसै दुख पायो ॥
मोह महा तम जानि महातम । जिन अनुराग तज्यौ जिन गोतम ॥
तजत राग उपज्यौ पद केवल । बैठे जिनवर पाट महाबल ॥
अब सब तप संख्या जिनवर की । बरनि बखानि कहौं बरनरकी ॥
द्वै छमास तप किये प्रबीने । तामैं एक पांच दिन हीने ॥
चौमासी नव दोय तिमासी । ढाइमास द्वै छह द्वै मासी ॥

बारह छढ़ मासि तप कीना। मास छपन अष्टी बसु हीना ॥
बारह पाष पाष ह्रत धारा। ईसै उनत्तीस अठवारा ॥
प्रतिक्षा भद्र दोय दिन कीने। महा भद्र दिन चारि प्रबीने ॥
भद्रसर्ब तो दिन दस कीने। इक दिन से जिहिं दिच्छा लीने ॥
इक दिन ऊन तीनसौ साढ़े। पारन दिन सब गिनती बाढ़े ॥
औरौ बहुत तपस्या दिन भल। साढ़े बारह बरस भये मिल ॥
ये सब दिन छद्मस्त बिताये। तीस बरस केवल पद पाये ॥
तीस बरस गृह आश्रम कीना। आयु बहत्तर सब भरि लीना ॥
अब सब महाबीर परिवारा। कहौं साध दस चारि हजारा ॥
बत्तिस सहस साधवी जानौ। अब जिन जन श्रावक परमानौ ॥
इक लख उनसठ सहस सुनाऊं। अब सब जे स्राविका गिनाऊं ॥
लाख तीन अरु सहस अठारा। यह सब जिन जन घन परिवारा ॥
तेरह सै जहं अवधि ग्यान धर। केवल ग्यानि सात सै बरनर ॥
चयसठ चौदह पूरब ग्यानी। बयक्रीय सै सात बखानी ॥
ऐसे बिमल बुद्धि सौ पांचा। मन मनसा समझैं जे सांचा ॥
जे काहू तैं कबहूं न हारैं। ऐसे बर बादी सैचारैं ॥
जिन जन जिनतैं दिच्छा लही। मुकत गये सु सातसै सही ॥
चौदह सै साधी जिन हाथा। चारित लैकै भई सनाथा ॥
अनउत्तरिय आठ सै भये। जिन परिवार कहे सुख छये ॥
भूमि अन्तकृत दुहूं प्रकारा। कहियत जिनवर कैं अवतारा ॥
इक युगन्त कृत भूमि कहावै। दूजै परिया यान्त बतावै ॥
मुकत अनन्तर तीन पाट लौं। चल्यो मुकत पथ कहि युगांत लौं ॥
चारि बरस केवल ग्यानन्तर। चल्यो मुकत मारग तदनन्तर ॥
सु परियांत कृत भूमि कहीजै। दुहूं भूमि जिनवरहि पतीजै ॥
तदनन्तर नौसै अस्सी सन। भयो बड़ौ दुरभिच्छ भयावन ॥
सब बिच्छेद भयो लखि जिनजन। लिखन लगे पुस्तक तबतेधन ॥
नौसै नवति बरस चय बीतें। कई कहैं तब लिखे समीतें ॥
इक बाचन बलभी नगरी है। देवडगन छम समन करी है ॥
दूजी बाचन मथुरा नगरी। करी कन्दला चारज सिगरी ॥

इति श्री महावीर स्वामी अधिकार संपूर्ण ॥

## श्री पारसनाथ अधिकार ॥

### दोहा ॥

अब श्री पारसनाथ के पांचौ जे कल्यान। चवन जनम चारित्र अरु परम ग्यान निरबान ॥ जब जब इन पांचौन को भवमैं भयो सं-जोग। तब तब नखत बिसाखहो मांहि रह्यो ससि जोग ॥ पारस पूरब दस जनम जेजे भये निदान। तिनतिन को बरनन करौं कछु संक्षेप बखान ॥ पोतनपुर अरबिन्दनृप बिप्र पुरोहित तासु। क-मठ और मरुभूत द्वै पुत्र पुरोहित जासु ॥ मरुसुन्दरी बसुन्धरा नाम बाम छबि जाल। तासों कमठ कुपूत ने करीकुरीत कुचाल॥ सो सुनि मरु मरुभूमिलौं भयो प्रीति रस हीन। करो कठिन-ताडन भयो मन करि कमठ मलीन॥ सकुचि सोचि संसार तजि तिन तप कीनो जाय। सहज सरल मन मरु गयो तिहि तट दोष खिमाय ॥ पैतिन तापस कमठ ने मारयो मरु करि क्रोध। यह बिप्र सुत दुहुन को भयो प्रथम भव बोध ॥ सो मरु मरि हाथी भयो कमठ भयो मरि सर्प। बैर सुमिर ता दुरद को डसो सर्प करि दर्प ॥ यह दूजौ भव फेर गज मरि सुर भयो सुजान। कमठ जीव अहि मरि भयो नरक निवासि निदान ॥ यह तीजौ चौथो भयो मरु बिद्याधर रूप। निकसि नरक तैं कमठ फिरि भयो भुजङ्गम भूप ॥ डसि बिद्याधर कौं बहुर नरक निवास्यो सोय। बिद्याधर मरि बारवैं सुरपुर को सुर होय॥ भयो पांचवौं भव यहै पुनि मरु मरि नृप होय। बज्र ाभि नामा लियो चारित तिन मल धोय ॥ भयो भील भव कमठ तिन नृपहि मारि मरिभील। नरक गयो भव सातवैं नृप सुर भयो सुसील ॥ चक्रवर्त मरु जीव पुनि भयो भये भव आठ। कमठ जीव द्वै सिंघ पुनि हन्यो ताहि सुनि पाठ ॥ पुनि मरु सुर द्वै कमठ लहि नरक नवैं भवफेर। मरु जिय पारसनाथ ह्वै प्रगव्यो दसवैं हेर ॥

### अथ श्री पारसनाथ स्वामी चवन कल्यानक ॥

जंबु दीप थल भरत मैं पुरी बनारस धाम। अस्वसेन नृप राज घर रानी बामा नाम ॥ तासु कूष में चैत बदि चौथ भयें अध-रात। दसम देवता लोकतें मरु जिय च्वै बिख्यात ॥ नृप तिय

बामा तिहि समय कछु सोवत कछु जाग। नखत बिसाख जोग ससि सुपन चौदहों लाग॥ सुरसम्बन्धी आउ तजि तजि अहार बिवहार। गर्भरूप त्रयग्यान जुत भयो गर्भ आधार॥ चवन समय जान्यो नहीं चवि जान्यो जिन जान। बामा सो सुभ सुपन फल कह्यो सुजान न आन॥ बाम सुपन फल सुनि समुझि मोदानन्द बढ़ाय। करन लगी निज गर्भकी रच्छा अति सुख पाय॥ गर्भबास के मास जब गये सवा नव बीत। पूस असित तिथि दसमि को नखत बिसाख प्रतीत॥

अथ श्री पारसनाथ जन्म कल्यानक॥

निस निसीथ बीते बिदित श्रीजिन पारसनाथ। प्रगटि जन्म लै मात की कीनी भूप सनाथ॥ छप्पन दिसा कुमारि अरु चौंसठ इन्द्रन आय। महाबीर जिन लौं कियो जनम महोच्छौ चाय॥ अस्वसेन नृप हूं कियो मङ्गल मोद बढ़ाय। जैसे सिद्धारथ नृपति कियो महोच्छव चाय॥ गुनबय बिद्या बिनय बर रूप सील सुघराय। जुत श्रीपारसनाथ जिन प्रगट भये सुभ भाय॥ तीन ग्यान करि सहित जिन स्रुति मति अवधि अधार। हरित बरन नव हाथ बपु भुक्ति मुक्ति दातार॥ सिसु पौगंड कुमार बय क्रमक्रम भई बितीत। तब तरुनाई तरनि की भई उदय परतीत॥ नगर कुशस्थ प्रसेनजित नृपति सुता सुभ जासु। प्रभावती इहिं नाम जिन पारस ब्याही तासु॥ दम्पतिसुख सम्पति भरे करि गृहस्थ बिवहार। बिषय भोग सुख भोगि सब चारित पर मन धार॥ इक तापस पंचाग्नितप साधत लखि जिन जान। ताहिकह्यो रे मूढ़ क्यों साधत तप अग्य न॥ यों कहि गहि ता अगिन तें जरत निकासे दोय। सर्प्प सर्प्पिनी अधजरे मरन लगे लखि सोय॥ आदि पांच नौकार के पांचौ बरन सहेत। असि आउसा बिचारि चित तुरत उतायल हेत॥ दीने तिन्हैं सुनाय ते बोधि देवपद पाय। धरनइन्द्र अहि मरि भयो पद्मावति तिय चाय॥ सो तापस हो कमठ जिय लज्जित ह्वै सकुचाय। मेघमालिसुर मरि भयो धारि बैरहिय

भाय॥ दिच्छा समय चितावने नव लोकान्तक देव। आय जिनेसर की करी जैनन्दा कहि सेव॥

अथ श्रीपारसनाथ दिच्छा कल्यानक॥

तब जिनवर संसार तजि दीने बरसीदान। धन पूरन पुहमी करी अर्थी रह्यो न आन॥ पुनि एकादस पूस बदि दुपहर दिन तजि राग। दिब्य पालकी चढ़ि पहरि भूषन बसन सभाग॥ चौंसठ इन्द्रन आदि दै बिबुध बिबिध की भीर। नर नारी सब नगर के संग चले धरिधीर॥ पुरी बनारस बीच ह्वै निकसि बिपिन घन पाय। उतरि असोक सुतरु तरैं दीनों सोक मिटाय॥ चौबिहार उपबास ह्वै सकल सिंगार उतार। पाय बिसाखा जोग ससि तजि सब सुख संसार॥ सहित अहित बर तीनसै उत्तम राजकुमार। देवदूष पटयुत लियो चारित पद निरधार॥ रहे फेर छदमस्त दिन रैन असी अरु तीन। देव मनुष पसु कृत सहे अति उपसर्ग नवीन॥ दिच्छाकै दिन दूसरै कियो बिहार अहार। पंच द्रब्य बरषा करी देवन महिमा भार॥ पुनि जिन देस कलिङ्ग में काउसग्ग तप धार। रहे गुहा गिर की गहैं आतम तत्व बिचार॥ मेरतुङ्ग नामा तहां एक महागजराज। सुण्ड सलिल कर कंजलै पूजे जिन सिरताज॥ लै अनसन पुनि मरि भयो सुर कलि कुंड धलेस। पहिले भव सो गज हुतौ बपु बावनौं नरेस॥ पुनि जिनवर तहतैं कियो दच्छिन देस बिहार। तापस थल बटबृच्छ तर सांभ काउसगधार॥ आय मेघमाली तहां कमठ जीव अवतार। करन लग्यो उपसर्ग अति पूरब बैर बिचार॥ अहि बिच्छी बैताल गज सिंघरूप धरिदुष्ट। बेहुबिधि जिन भगवन्त सों करी दुष्टता पुष्ट॥ तौऊ जिन दृढ़ ध्यान की छुटी न सहज समाधि। सो लखि पुनि कोप्यो अधिक बाधन लग्यो असाध॥ प्रलय मेघ बपु धरि लग्यो बरसन मूसल धार। भयो घनो घन घिरि घुमरि सूची बेध अंधार॥ करकन लागी बीजुली तरकन लागी भूम। धरकन लागे सकल जिय परी भूमि नभ धूम॥ नदी कूप और बावरी भरि उमड्यो जलभार। चरन जानु कटि उदर उर कण्ठ

चक्यो बढ़ि बार ॥ तज अचल आतम सुरस मगन महातम भूप। तजी न नेकौ लय लगन जिनवर अभय सरूप ॥ तब धरैंद्र पद्मावती अवधि ग्यान करिजान। आय तहां जिनराज को कांध चढ़ाय निदान ॥ सहस फणन को छत्र सिर धरि जिन कै दिन तीन। रहि ऐसैं निदस्यो बहुर मेघमालि बलहीन ॥ सो तब हारि बिचारि चित परि पारस के पाय। बिनय सुनाय बचाय जिय लीने दोष खिमाय ॥ ता दिन तें ता भूमि पर नगरी एक सुधाम। सुबस बसो सोभा लसी जिहि अहिछत्रा नाम ॥ पुनि जिन गुपत सुतीन अरु सुमति पांचलै साथ। साध रूप बिरचन लगे जिनजन करे सनाथ ॥ छदमस्तावस्था रही असी तीन दिन रैन। चौरासीवीं रात में पायो आतम चैन ॥

अथ श्रीपारसनाथ ग्यान कल्यानक ॥

चैत कृष्ण तिथि चौथ ससि नखत बिसाखा पाय। लहि अपराह्न धाहतरु तरैं समाधि लगाय ॥ पायो केवल ग्यान पद चौदह राज प्रतच्छ। इन जिनके बोधे भये गनधर आठ सुगच्छ ॥ शुभ अरु घोष बसिष्ठ पुनि ब्रह्मचारि अरु सोम। बीरभद्र श्रीधर सुजस गनधर आठ अजोम ॥ साध सम्पदा सुभ तहां सोलह सहस बखान। सहस आठ जुत तीस अब सुभग साधवी मान ॥ एक लाख चौंसठ सहस जिनजन श्रावक जान। तीन लाख सुभ श्राविका सहस अठावन मान ॥ पंचासत सत सातयुत चौदह पूरब जान। अवधिग्यान ज्ञानी गने चौदह सै सुज्ञान ॥ केवल ग्यानी सहस इक छसै बदूक्रीवान। साध मुक्तिगामी सहस दूनी साध्वी जान ॥ बिपुल सुमति धर आठसै बादी छसै सुजान। सर्व्वारथ सिधि जे गये बारहसै ते मान ॥ इऊं बिधि भूमी अन्तकृत इक जुगान्तकृत होय। दूजो है परयान्तकृत प्रथम कहो सब सोय ॥ तीस बरस ग्रह बास दिन च्यासी निस छदमस्त। कछु कम सत्तर बरस कुल केवल ग्यान समस्त ॥ सरब आयु सौ बरस की पूरन करि जिन जान। लह्यो परमपद मोख को सो अब कहौं निदान ॥

अथ श्रीपारसनाथ मोक्ष कल्यानक ॥

तिथि सावन सुदि अष्टमी निसि निसीथ जिन नाथ। परबत स-
मरसमेत पर तेइस सावन साथ॥ नखत बिसाखा जोग ससि
चौबिहार व्रत साध। काउसग्ग तप लय लगे पायो मुक्ति अबाध॥

अथ श्रीनेमिनाथ अधिकार ॥

अब बरनौं श्रीनेम के पांचौ बर कल्यान। चवन जनम चारित्र अरु
परम ग्यान निरबान॥ इन पाचों कल्यान को जबजब भयो स-
जोग। तबतब चित्रा नखतही माहिं भयो ससि जोग॥

अथ चवन कल्यानक ॥

कातिक बदि बारस सुतिथ नेमनाथ अरिहन्त। सुरसंबंधी आयु
तिथ तजि सो जिय जयवन्त॥ समुद विजय यादव न्रपति सौरी
पुरके मांह। सिवादेवि ता न्रपति को रानी अति छबि छांह॥
निसि निसीथ में चवि कियो गर्भ माहिं तिन बास। क्रमक्रम करि
बीते जबै गर्भ सवानव मास॥ सुपनादिक जैसे प्रथम जिनजननी
ने पाय। बरनि बखाने ते सकल त्योंही भये सहाय॥

अथ श्रीनेमनाथ जन्म कल्यानक ॥

सावन सुदि तिथि पंचमी सिवादेवि के कूष। जिन जन्मे श्रीनेम
प्रभु सुन्दर सगुन अदूष॥ छप्पन दिसा कुमारि अरु चौसठ इन्द्रन
आय। त्योंही मङ्गल मोद मय कियो महोच्छौ चाय॥ समुद विजय
जयवन्त हूं मोद उछाह बढ़ाय। सिद्धारथ न्रप लो कियो जनम
महोच्छौ चाय॥ एक समय जिन जोर की महिमा सुरपति गेह।
होत सुनी सुर एक तिन करो परिच्छा एह॥ लखि जिन पौढ़े
पालने आय अंक भरि तासु। सवालाख जोजन उड्यो ऊंचो
चढ्यो अकास॥ जानिज्ञान जिन ग्यानपथ बल करि मारी मुष्ट।
सौ जोजन धरमें धस्यो फस्यो देव सो दुष्ट॥ सुरपति आय छुड़ाय
तिहिं पायन पारि खिमाय। लै अपने सुरपुर गयो भयो मोद मै
जाय॥ समुद विजय जिनके पिता सोरीपुर के राय। उग्रसेन
मथुरा न्रपति तिनके गोती भाय॥ तिन इकदिन इक तापसी न्योत्यो
पारन हेत। न्योति भूलि बैरो कियो सो मरि न्रपतिय खेत॥ गर्भ

बास बसि मात को प्रकृत दुष्ट करिदीन । गर्भ जनम लहि मात
पित मन अति भये मलीन ॥ दूषि सुतहि संदूष में मूंदि मूंदरी
हाथ । दै यमुना जल बोरि तिहिं दीनो मथुरानाथ ॥ सो बहि
सोरी नगर में पाई बनिक सुभद्र । खोलि देखि सुन्दर सुअन
मानि आपको छुद्र ॥ सो सौंप्यो वसुदेव को उग्रसेनसुत कंस ।
समद विजय नृप कोअनुज सो बसुदेव प्रसंस ॥ राजग्रही नगरी
तहां तब तिहिं काल अनूप । जरासन्ध यादौप्रबल ता नगरी को
भूप ॥ सो यादवपति प्रति सहित बासुदेव पद पाय । भयो सु
प्रबल प्रताप जुत सब यादव को राय ॥ जीवजसा ताकी सुता
बुधि गुन रूप प्रसंस। ब्याहि दई ताको पिता उग्रसेन सुत कंस ॥
ब्याहि ताहि तिन पाय बल करि निज बापहि बन्द । मथुरापति
पितु राज पर बैठि भयो स्वच्छन्द ॥ तिन देवक नृप की सुता नाम
देवकी जासु । ब्याहिदई बसुदेवको अति हित चितकरितासु ॥ लघु
भ्राता इक कंसको अइमत्तौ इहि नाम । तजि ग्रहबास अबास
सुख भयो साध अभिराम ॥ तिन इकदिन निज ग्यान करि होन
हार की जान । जीवजसा भाभी निकट कही बात यह आन ॥
गर्भ देवकी बहिनको होय सातवौं जोय । सो तेरे भरतार को
मारनहारो होय ॥ यह सुनि उनपति पास चलि बिथा सुनाई
जाय । सुनि सचिन्त ह्वै कंस तब लै बसुदेव बुलाय ॥ बंचि बचन
कहि कपट के बाचा लै दै साखि । सात गरभ तुम आपने देऊ
हमैं यह भाखि ॥ सत्यसंधि बसुदेव तहं वचनबंध ह्वै नीठ । दए
गर्भ सातौं नहीं दई बचनको पीठ ॥ जबजब प्रसबी देवकी तब
तब लै सो गर्भ । सिला पटकि मारे सकल एक भांति छल अर्भ
भयो सातवें गर्भ में जब श्रीकृष्ण निवास। सुपन सात लखि देवकी
परीआसा यास ॥ सिंह सूर ससि अगिन गजधुज बिमान बिख्यात।
बासुदेव माता लखत एई सुपने सात ॥ गर्भकाल पूरन भयो भादौं
बदि बुध बार । तिथि आठैं अधरात को लियो कृष्ण अवतार ॥
सोइ गये सब पाहरू खुलि गये सकल किवार। कृष्णहि लै बसु-
देव तब उतरे यमुना पार ॥ नन्द गोप घर ताकी घरनि ज-

सोदा नाम। जनमी पुत्री तिहिं समै ताके अति अभि राम ॥ पहुंच तहां बसुदेव धरि सुत लै सुता उठाय। फिरे उतरि इहि बार पुनि निज घर पहुंचे आय ॥ भोर भये पहरू जगे नृपति सुनाई जाय। नृप सुनि त्योंहीं सो सुता लीनी तुरत मगाय ॥ देखि सुता तावै तबै छेदे नाकरुकान। भयो कंस मुदवन्त अति ह्वै निहिचिन्त निदान ॥ बासुदेव श्रीकृष्ण अब नन्द सदन के मांझ। नवससि लौं नितनित निपट बढ़न लगे दिन सांझ ॥ बालचरित अद्भुत करत हरत मातपित चित्त। लखि द्दग हियो सिरात अति वांरत तन मन बित्त ॥ इक दिन इक सरबग्य को पूछ्यो कंस सुचाहि। कहि को मेरो शत्रु है जातें मुहि भय आहि ॥ उन भाखो खरमेख अस केसी द्दषभ अरिष्ट। जो इन सब को मारिहै मारै तोहि सपष्ट ॥ सुनि नृप त्योंहीं तुरत तेइ इकइक दये पठाय। ते सब मारे सहज-ही बालचरित यदुराय ॥ जानि कंस जिय संस बढ़ि भयो सोच मय सोय। अनहोनी होनी नहीं होनी होय सो होय ॥ बहन सुभद्रा कंस की ताको रच्यो बिवाह। दिस दिस तें आये नृपति जानि स्वयम्बर चाहि ॥ सुनि सुदमय श्रीकृष्णहूं मथुरा चले उताल। जद्यपि बलि बरजे बिपुल रहे नाहिं नन्दलाल ॥ चलत बाट काली उरग नाथ्यो पुनि गज मारि। मुष्टिकादि चानूर सब मारे मल्ल पछारि ॥ पुनि गहिकेस पछारिकै मार्‌यो भूपति कंस। सतभामा ताकी सुता ब्याही रूपप्रसंस ॥ बरस तीनसै बामबय सोरह बरसी स्याम। तदपि रूप गुनवन्त बर दम्पति अति अभिराम ॥ सब यादव मिलि आय तहं पाट बिठाये स्याम। ह्वै सब सेवा धर्मपर अनुचर भये सकाम ॥ जीवजसा तियकंसकी तबअति दुखके भार जरासन्ध पितु गेह चलि गई सहित परिवार ॥ ताहि देखिपितु दुखित ह्वै चढ़न चह्यो करि क्रोध। कालकुमारन आय तहं नृपहि सुनायो बोध ॥ कहैं सेवकन उचित नहिं कष्ट करै जो भूप। मारि सत्रु आवैं तुरत तुव अग्या अनुरूप ॥ यों कहि आयसु पाय ते सिगरे राजकुमार। चढ़ेजुद्धहित राहमें यदुकुल देबिनिहार ॥ स्राप पाय ता देबि को भये सकल जरि छार। मथुरा तजि

जदुकुल गये सोरठ देस मझार ॥ तहां बसाई द्वारिका धनद करी धनइष्ट । कनक रचित मनिगनमई भई सुपुरी बरिष्ट ॥ तहां बसे परिवारलै श्री जदुनायकबीर । सहसम्पति सन्तत सतत बाढ़ी जादव भीर ॥ रतन कंबलन को तहां ब्योपारी इक आय । बेच कछुक कछु लैगयो राजग्रहो मैं लाय ॥ बेचन लाग्यो लखिलयो जीव जसा ललचाय । मोल पूछि बिसमित भई सवालाख सुनि भाय ॥ उन जो बेचै द्वारिका सो सब कही सुनाय । सुनि पूरब दुख जगि उठ्यो पितु सों कह्यो दुखाय ॥ सो पितु सब भटकटक लै गज रथ तुरंग पदात । अमित फौज की मौज सों कोपि चल्यो बिख्यात ॥ उनहूं तैं श्रीकृष्ण सुनि जदु कुल कटक समेत । चढ़ि पहुंचे मिलि परस पर रच्यो मच्यो नर खेत ॥ सैन रेनु ह्वै एक तहं भुव उड़ि नभ करि बास । आप छौनि छह रहि गई कीने आठ अकास ॥ किधौं सैन खुर रैनु उड़ि भई द्योस की रैन । कृष्णचन्द सुखचंद तहं मनिगन उड़गन ऐन ॥ किधौं धूरि धूंधरघने घन घुमड़े चहुंवोर । असि लरजन तरजन तड़ित गज गरजन घन घोर ॥ लरत परस्पर बानबर बरसन अमित अपार । सो अखण्ड जलधार की झरी भरी भयभार ॥ स्रोनित सरिता काढ़ि बड़ोसर भरि उमड़ि अपार । रुण्ड मुण्ड मण्डित रुधिर जल जलचर अनुहार ॥ प्रबल बली बलिबीर लखि जरासन्धि करि क्रोध । जरानाम बिद्या प्रबल प्रेरित करी प्रबोध ॥ सो बिद्या कारनभई रुधिर बमन कौं हेत । कृष्ण अनीक अनेक जन जादव भये अचेत ॥ नेम निदेशित कृष्ण तब अष्टम तप आराधि । प्रतिमा पाय महेन्द्र तैं तिहिं प्रछाल जल साधि ॥ सेचन करि सेना सकल कीनो मरत जिवाय । अति उछाह करि कृष्ण तब दीनों सङ्ख बजाय ॥ तहां सङ्ख तीरथ भयो प्रतिमा थापी सोय । फेर परस्पर युद्धहित सजि सन्मुख ह्वै दोय ॥ चक्र चलायो जोर करि जरासन्धि हरि ओर । कृष्ण बचाय सु ताहि फिरि अरि मार्‍यो बरजोर ॥ चारि कोटि जदु [illegible] सहस बत्तिस महल समेत । महाराज आक्रम्यो [illegible]रिका खेत ॥ एक समै जिन अतुल बल चरचा सुरपति

लोक। चली भली सुर एक सुनि दई परिच्छा झोक ॥ बास्यो गिर गिरनार ढिग सुर धारापुर एक। करनलग्यो सो बसितजां अति उतपात अनेक ॥ द्वारवती के द्वारतैं निकसि बाहरैं जोय। जाय ताहि राखै पकरि जकरि देवता सोय ॥ एक समैं बलभद्र अरु कृष्णाहि राखे घेर। मच्यौ कुलाहल नगर मैं बगर बगर भय ढेर ॥ तब रुकमिनि श्रीनेम सों भाख्यौ सनमुख हेर। कहा भयो कैसो सुन्यो कौन करत यह झोर ॥ तुमसे पुरुख अनंत बलछतैं उपद्रव एह। होय बडो अचरज यहै छुटै न मन संदेह ॥ सुनि श्रीजिन रथ चढि चले पहुंचि नगर गढ तोरि। जुटे जुद्ध ता देव के सनमुष आयुध जोरि ॥ अनिल अनल जल प्रबल सर दुहूं ओर तैं छोरि। अंत मोहसर मारिकैं सुर मोह्यो बरजोर ॥ सुरपति आय षिमाय तब पाय पारि सो देव। बिदा भयो सो बिबुधबर बिबिध भांत करि सेव ॥ तब श्रीजिन भगवंतबर नेमनाथ अरिहंत। भये तीनसै बरस के क्रम क्रम बढि भगवंत ॥ तऊ न तिनके जोय में इच्छा व्याहनकाज। मातपिता करि सोच तब अति बिनये जिनराज ॥ सतभामा अरु रुकमनी तिनहूं निपट निहोरि। कंसबहिन राजीमती तासु सगाई जोरि ॥ सावनसुदिछठ सुभ लगन मंगलमैं ठहराय। चढी जान जादौंमई मथुरा पहुंचीजाय ॥ गाजन बाजन साज सब फूलबाग बर ख्याल। कल कौतक नट नाट्य भट चटकीले छबिजाल ॥ तास बास बासे अतर भषण मनिगन भार। सजन समूहन संगलै उग्रसेन कै बार ॥ तहं घेरे पसु हेरिकैं सारथिपूछ्यौ नेम। बोल्यौ वह तुम व्याहके गौरवहित यह नेम ॥ गौरव हित पशुपुंज कौं घात तहां जिन हेर। तिनकी हिंसा सुमिरि जिय दया आनि मति फेर ॥ मनिभूषण पसुपालकौं दै सब पसुंहि छुड़ाय। तोरन ही तैं फिर फिरे सब आरंभ मिटाय ॥ मोद भई राजीमती गौषचढी यह देष। खाय पछार मही गिरीलहि मूरछा बिसेष ॥ अलिन आयकरि बीजना छिरकि गुलाब जगाय। करि झंषकेत की दई आगि भड़काय ॥ बिरह बिथा बाढ़ी बिपुल बान बिषबाय। रोम रोम सब रमिगई रोय रोय बिल

नीर हीन जिमि मीन अति दीन छीन बिललात । तलफि तलफि बिलपति बिपुल नेमप्रेम उतपात ॥ तजि भषण दूषण दये चीर चीर अधीर । छटपटात लोचत लटनि हियैं अटन नहिं धीर ॥ अलि अवली चक्रं ओर तें अलि अंबुज कैं भाय । घिरि समझावत कुअरि कौं क्यौं ऐसे अकुलाय ॥ अज्यौं अरंभ न व्याहकौ क्वारी कन्या तोहि । कहा इतौ दुख दूसरौ दूलह लावैं जोहि ॥ यह सुनि धुनि सिर फिरि कह्यो ऐसे फेर न भाखि । मन बच क्रम मो पति वहै इहि भव रबि ससि साखि ॥ जो उन छाड़ी मोहि तौ छाड़ौं कहा बिचार । हौं नहिं तिनको छाड़िहौं मनबचक्रम निरधार ॥ उत श्रीनेम उदास ह्वै ज्यों पहुंचे निज गेह । नव लोकान्तक देवता आये ताहि चितावने मधुर बचन करि सोय । दिच्छा समयो नेह ॥ सुनत सुमिर समयो कहन लगे कल्यानमय जयजयवन्ता होय ॥ तुरत कीनै बरसी दान । भुवजरिन पूरनकारी भरी सकल धनधान ॥

## अथ श्रीनेमनाथस्वामी दिच्छाकल्यानक ॥

सावन सुदि छठ तिथि सुदिन दुपहर चढ़ि सुखपाल । चौसठ सुरपति सुर सकल सहित जिनेस दयाल ॥ पुरी द्वारिका बीच ह्वै निकसि बाहरैं आय । पहुंचे गिरिगिरनार पै रैवत टूकहिंपाय ॥ उतरि तहां सुखपाल तें ससि चित्रा में पाय ॥ निकट घनी अंबराइ तहं तरु असोक तर आय । भषनबसन उतारि सब पंचमुष्टि करि लोच । चौबिहार उपवास द्वै करि धरि आतम सोच ॥ देवदूषपट राखि इक छांड़ि सकल ग्रह साज । राजकुमार सहस्र संग लिय चारित जिनराज ॥

## अथ श्रीनेमनाथस्वामी ग्यानकल्यानक ॥

चव्वन निसि चारित्र पद पालि पचपनी रात । आसिन बदि मावस भये निसि निसीथ बिख्यात ॥ बरगिरनार पहार पर बैंत हच्छ तर आय । चित्रा ससि उपवास द्वै चौबिहार करिचाय ॥ परम ग्यान कल्यान मै पायो केवल ग्यान । चौदह राज समाज जन मन परनामहिं जान ॥ राजमती हुं आय तहं दिच्छा लै जिन हाथ । तजि संसार असार सब हत लै भई सनाथ ॥ तब पछ्यो श्री

कृष्ण यह एक ओर को प्रेम। कैसो सो आवन लगे श्रीजिननायक नेम॥ आठ जनम की प्रीत यह अब क्यों छूटै भ्रात। देवलोकमें चारि भव चारि और सुनि बात॥ नृप धनभूत रु धनवती प्रिय मति अपराजीत। सङ्ख यशोमति चित्रगति रत्नवती समप्रीत॥ नौमे भव राजीमती नेमनाथ के साथ। जनम जनम को बन्ध क्यों छुटे छुटाये हाथ॥ अब इनको परिवार सुन गनधर गच्छ अठार। सहस अठारह साधु की सम्पति करि निरधार॥ चालिस सहस सुसाधवी वरश्रावक इक लाख। तापर उनहत्तर सहस अब श्रावक तिय भाष॥ तीनलाख उत्तर सहस बत्तिस गनती जान। चौदह पूरब धरि कहे ते सौचारि बखान॥ पन्द्रहसै ग्यानी अवधि तिते वइक्रीधार। सहस बिपुलमति सातसै बादी बड़े विचार॥ डेढ़ सहस बर साधु अरु शुभसाध्वी सैतीन। जिन कर दिच्छा पायकै भये मुक्तपद लीन॥ दुहूं अन्तकृत भूमि ते इक युगान्तकृतजान। अरु दूजी परियान्तकृत नेमनाथ परिमान॥ आउमान जिननाथ को अब सब करौं बखान। बरस तीनसै नेमजिन रहे कुमार सुजान॥ छदिन ऊनद्वै मास पुनि रहे नाथ छदमस्त। बरस सातसै तिनसहित केवल ग्यान समस्त॥

अथ श्रीनेमनाथ मोक्ष कल्यानक॥

बरस सहस सब आउ के पूरन करि जिनराय। तिथि असाढ़ सुदि अष्टमी चित्राजुत ससि पाय॥ मध्यरात गिरनार पर उद्यंतक गिरटूक। चौबिहार उपबास जुत धरिसुभ ध्यान अचूक॥ मुकत पधारे नेमप्रभु तदनन्तर तहं जान। सहस असी अरु चार पर महाबीर निरबान॥ सहस पचासी बरस पर नवसै बरस बितीत। और असी बीते लिख्यो कल्पसूत्र करिप्रीत॥ नेम चरित पूरन भयो छठो बाचना मूल। होउ सकल कल्यानजुत जिनजन मन अनुकूल॥

अथ सातवीं बाचना॥

चौबिस तीरथ नाथ के मुक्तान्तर को काल। सो बरनौं संछेप करि परम पुन्य को जाल॥ अरु तिन जिन चौबीस के तात मातको

नाउं । चिन्ह कायमित तनबरन उमर जनम थित गाउं ॥ तिथ पांचौ कल्यान की मुकत थान कुल गोत । चवे जासु सुरलोक तैं ताकौं नांव सजोत ॥ साध साधवी सकल अरु गनधर देवी जच्छ । चौबीसौं जिननाथ के कहौं प्रथम परतच्छ ॥ नेमनाथ मुनि सुब्रत के कुल जदुकुल हरिबंस । गोतमगोत सजोत ये प्रगटे कुल अवतंस ॥ अरु सबको इक्ष्वाक कुल कश्यपगोती जान । मुक्तथान जिन बीस को सिषर समेत बखान ॥ शेष चारि के मुक्तिथल प्रथक प्रथक सुनि सार । महावीर पावापुरी नेमनाथ गिरनार ॥ बासपूज चम्पापुरी अष्टापद शुभथान । आदि जिनेसर नारवर रिषभदेव निरबान ॥ अब सबको संक्षेप करि सुनिये सब बिस्तार । बरन चिन्ह परिवार बपु थित थल अन्तरसार ॥ तहां प्रथम बरनौं बिदित महावीर अधिकार । परम पुनीत प्रतापजुत आगम मत अनुसार ॥

अथ महावीर अन्तराला ॥

चरम तिर्थंकर स्वामिवर महावीर भगवान । बर्द्धमान जिनसौं कह्यो त्रिसला मात निदान ॥ सिद्धारथ जिनके पिता हाथ सात मितिकाय । सुबरन बरन बखान तन लच्छण सिंह सुनाय ॥ बरस बहत्तर आउथित तजिकै बिजय बिमान । खत्रिकुण्ड चवि औतरे कश्यपगोत निधान ॥ चवन साढ़ सित छठ असित आसिन तेरस सार । देवानन्दा कूष तैं भयो गर्भ अपहार ॥ चैत सिता तेरस जनम बर चारित अरु ग्यान । अगहनबदि बैसाषसुदि दसमीक्रम करि जान ॥ कातिकबदि मावस सुदिन दीपमालि जिहिं नांउ । महावीर निरवान लहि पावापुर को गांउ ॥ बीर साध चौदह सहस सुभग साधवी सार । सोरह सहस बखानिये जैनागम निरधार ॥ देवी जहं सिद्धायका ब्रह्मशान्त जहं जच्छ । ग्यारहगनधर जानिये गौतमादि परतच्छ ॥

अथ श्रीपारसनाथ अन्तराला लिख्यते ॥

महावीर निरबान तैं श्रीपारस निरबान । बरस अढ़ाई सै प्रथम भयो सुजानि सुजान ॥ अस्वसेन पारस पिता बामा देवी

निधि गजपुर प्रगटे आय ॥ चवि फागुन सित दूज सित कातिक बारस ग्यान। अगहन सुकला दसमि को जनम और निरबान॥ ग्यारस अगहन सुकलमें तज्यो गृहस्थाबास। सिषरसमेती मुकत थल कुल इक्ष्वाकी तास॥ अरहनाथ के साधु सुभ कहे पचास हजार। साठ सहस जिहिं साधवी जैनागम अनुसार॥ बरनी देवी धारनी जच्छराज जहं जच्छ। अरहनाथ जिननाथ के गनधर तीस प्रतच्छ॥

अथ श्रीकुंथनाथ अन्तराला॥

अरहनाथ तें प्रथम श्रीकुंथनाथ निर्बान। लष इक्यानवे बरस कम पाव पल्य मैं जान॥ पल्योपम सागर प्रमित पहिले कही बखान। आरन के अधिकार में काल मान परवान॥ श्रीमति कांता मात के कुंथनाथ सुत जान। सूरसेन जिनके पिता छाग चिन्ह पहिचान॥ पैंतिस धनु कंचन बरन तन हजार सत मांह। पांच सहस कम आउ थित छांडि सर्बसिध छांह॥ हस्तनपुर चवि औतरे कुल इक्ष्वाक मझार। सावन कृष्णा नवमि तिथ चवन तासु निरधार॥ पहिली बदि बैसाष की पंचम चैादस फेर। क्रम करि मोष बखान अरु दिच्छा जनम सुहेर॥ ग्यान चैत सुदि तीज कों पायो केवल ज्ञान। पांचैा तिथ कल्यान की येई जान सुजान॥ साठ सहस मुनि कुंथ के और साधवीसार। जानैा साढ़े तीनसै साठरु पांच हजार॥ बालादेवी भाषिये अरु गंधर्ब सुजच्छ। कुंथनाथ गनधर कहे सुभ पैंतीस प्रतच्छ॥

अथ श्रीशांतिनाथस्वामी अन्तराला॥

कुंथनाथ तें प्रथम श्रीशांतिनाथ निरबान। पल्योपम को अर्द्ध मिति ताही के परमान॥ विश्वसेन जिनके पिता अचिरा मात बखान। म्रग लंछन चालीस धनु कनक काय पहिचान॥ लाख बरस थित आउ की तजि सर्बारथ सिद्ध। हस्तनपुर चवि औतरे कुल इक्ष्वाक प्रसिद्ध॥ असित सत्तमी भादवो चवन जेठ बदि फेर। तेरस जनम बखान सुनि मोषौ तामें हेर॥ जेठ बदी चैादस लियो

वान ॥ शांत साध बासठ सहस और साधवी सार। इकसठ सहस रु दोयसै जैनागम अनुसार ॥ बानी देवी जासु की गवड़ नाम वर जच्छ। शांतनाथ गनधर कहे तीसरु छह मैरतच्छ ॥

अथ श्रीधर्मनाथस्वामी अन्तराला ॥

शांतनाथ तैं प्रथम श्री धर्मनाथ निरवान। पौन पल्य मिति ऊनकरि सागर तीन बखान ॥ धर्मनाथ श्री भानु पितु जासु सुव्रतामाय। वज्र चिन्ह कंचन बरन पैतालिस धनु काय ॥ आउ बरस दस लाख थित तजि सर्वारथ सिद्ध। रतनपुरी चवि औतरे कुल इक्ष्वाक प्रसिद्ध ॥ सित सातैं बैसाख चवि जनम माघ सुदि तीज। ताही की तेरस रहे सुभ चारित रसभीज ॥ केवल पून्यो पोस सित जेठी पंचम मोख। सुभ समेत गिरि सिखर पै पायो परम संतोख ॥ धर्मसाध चौसठ सहस और साधवी सार। बासठसहस रु चारिसै जैनागम बिस्तार ॥ जहं देवी कन्दर्प्पिनी कहिये किन्नर जच्छ। गनधर जासु बखानिये तैंतालीस प्रतच्छ ॥

अथ श्रीअनन्तनाथ अन्तराला ॥

धर्मनाथ तैं प्रथम पुनि जिनअनन्त भगवान्। मुक्तिमान तिनकौ कह्यो सागर चारि बखान ॥ सिंघसेन जिनके पिता सुजसा जिनकी माय। चिन्ह सिचानरु कनक तन धनु पचास मिति काय ॥ तीस लाख बरसो उमर लोक सोलहों त्याग। अवधि बंस इक्ष्वाक मैं चवि औतरे सभाग ॥ असिता सातैं सावनी चवन बदी बैसाख। तेरस चौदस चौदसरु ये तीनौं क्रम साख ॥ प्रथम जनम दिच्छा बह्नर तीजै केवल ग्यान। बह्नर चैत सित पंचमी सिखर सुथल निरवान ॥ मुनि अनन्त छासठ सहस और साधवी सार। बासठ सहसरु चारिसै जैनागम निरधार ॥ जिनकी देवी चाकुशा पाताला जिहिं जच्छ। गनधर नाथ अनन्त के कहे पचास प्रतच्छ ॥

अथ श्रीविमलनाथअन्तराला ॥

जिन अनन्त तैं विमल जिन मुक्त्यन्तर परमान। नव सागर पूरो कह्यो लेहु सुजानि सुजान ॥ बिमल पिता कृतवर्म अरु स्यामा जिनकी माय। कनक बरन सूकर लछन साठ धनुष मिति काय

आयु साठलष बरस चवि लोक बारहों त्याग । कंपिलपुर अवतार लै कीने लोक सभाग ॥ बारस सित बैसाख चवि पोससुदी छठग्यान। तीज चौथ सित माघ की जनमरु चारित जान ॥ पुनि असाढ़ सातैं असित ध्याय पाय सुख ध्यान । सुभ गिरि सिखर समेत पर पायो पद निरबान ॥ बिमल साध अडसठ सहस और साधवी सार । एक लाख परी कही जैनागम अनुसार ॥ बिदिता देवी बरनिये षनमुख जिनके जच्छ । बिमलनाथ गनधर बिमल कहि पचपन परतच्छ ॥

अथ श्रीबासपूजस्वामी अन्तराला ॥

बिमलनाथ तैं प्रथम जिन बासपूज निरबान । अन्तर दोनों मुकत कौ सागर तीस बखान ॥ बासपूज बसुपूजि पितु जया माय रङ्गलाल । धनु सत्तर तन थित बरस लाख बहत्तर काय ॥ महिष चिन्ह चंपा पुरी छांड़ि दसम सुरलोक । जेठ सुकल नौमी चवे हरे जनन के सोक ॥ फागुन बदि चौदस जनम मावस दिच्छा तोष। ग्यान माघ सुदि दूज सित साढ़ी चौदस मोष ॥ चंपापुर मैं साध सुभ सत्तर दोय हजार । तीनसहस अरु एकलष सुभग साधवी सार ॥ चन्द्रा-देवी बरनिये अरु कुमार जहं जच्छ । बासपूज गनधर कहे बर छासठ परतच्छ ॥

अथ श्रीश्रेयांस अंतराला ॥

बासपूज तैं प्रथम पुनि जिन श्रेयांस सुजान । मुक्तान्तर दून दुन्नन कौ चौव्वन सागर जान ॥ बिष्णुसेन जिनके पिता बिष्णा जिनकी माय । खडग चिन्ह कंचन बरन असी धनु की काय ॥ चौरासीलष बरस थित तजि सुरगांतकलोक । सिंघपुरी चवि औतरे कीने लोक असोक ॥ जेठ बदी छठ चव जनम असिता बारसफाग । ताही की तेरस तहां चारित लह्यो सभाग ॥ माघी मावस ग्यान बदि तीज सावनी मोष । सिषरसमेतहि मैं भयो जनम मरन संतोष ॥ कहे साध श्रेयांस के असीचारहजार । छहहजार दूकलख कही सुभग साधवी सार॥ बरनी देवी मानवी जच्छराज जहं जच्छ । [illegible] गनधर कहे जिनश्रेयांस प्रतच्छ ॥

सत [illegible]

अथ श्रीसीतलनाथ अंतराला ॥

अब श्रेयांसजिनेसतैं श्रीसीतल निरबान। घटवढ़ करि संख्या कहौं सो सुनिलेहु सुजान ॥ छासठलष छब्बिससहस तीस बरस वसु मास। पन्द्रह दिन गनि जोरि सब दससागर मैं तासु॥ सब संख्या यह ऊन करि सागर कोटि मझार।सो सीतल श्रेयांसकौ मुक्त्यन्तर निरधार॥ सीतल के दृढ़रथ पिता नन्दा जिनकी माय। श्रीवत्सी लंछन कनक तन धनु नब्बे काय॥ एकलाख पूरब उमर तजि सुरआंतक लोक। भद्दलपुर चवि औतरें हरे जनन के सोक॥ चवन बदी वैसाख छठ जनमन चारित दोय। माघबदी बारसहि कौ सुतिथ एकही सोय॥ चौदस असिता पोसकी दूज बदी वै-साख। ग्यान और निरबान तहं क्रम करि राखी साख॥ एकलाख पूरे कहे सीतल साध सुढार। कहिये तिनकी साधवी इकलख बीसहजार॥ कही असोका देवि जहं ब्रह्मा जिनके जच्छ। श्री सीतल गनधर कहे इक्यासी परतच्छ॥

अथ श्रीसुबुधनाथस्वामी अंतराला ॥

जिनसीतल निरबान तैं प्रथम सुबुधि निरबान। कहि सागर नवकोटि मिति बरआगम परमान॥ सुबुधि तात सुग्रीव अरु रामा जिनकी माय। मकर चिन्ह सित बरन तन सौ धनु ऊंची काय॥ दोय बरष पूरब सुथित तजि प्रानत सुरलोक। काकन्दी चवि औतरे हरे सकल जनसोक॥ फागुन वदि नौमी चवन जनम माघ बदि पांच। ग्रह तजि अगहन छठ बदी लीनौ दिच्छा सांच॥ का-तिक सुकला तीज सुदि नौमी भादवमास। ग्यान और निरबान पद पायो क्रम करि तासु॥ लाखदोय मुनि सुबुधि के और साधवी सार। तीनलाख पूरी कही जैनागम अनुहार॥ देवी कहीसुता-रिका अजित नाम जहं जच्छ। सुबुधिनाथ गनधर कहे अट्ठासी परतच्छ॥

अथ श्रीचन्द्राप्रभु अंतराला ॥

सुबुधिनाथकी मुक्ति तैं चन्दाप्रभु निरबान। सागर नब्बेकोटि क-हुं मुक्त्यन्तर परमान॥ महासेन जिनके पिता और लछमना माय।

ससि लंछन सित बरन अरु धनुक डेढ़ सै काय॥ दसलष पूरब आउ थित तजि जयन्त सुरलोक।पुरी चन्देरी औतरे हरे जनन के सोक॥ चवन चैतबदि पंचमी पोसबदी के मांह। बारस तेरस जनम अरु चारित की क्रमछांह॥ फागुन अरु भादौं बदी असित सत्तमी जोय। ग्यान और निर्बान की क्रम करि तिथि सो होय॥ सहस पचासरु दोयलष चन्द्राप्रभु के साध।तीनलाख असीसहस सुभ साधवी अवाध॥ भ्रकुटि देवि जिनकी कहो बिजय नाम बरजच्छ। गनधर कहे तिराणवे चन्द्राप्रभु परतच्छ॥

## अथ श्रीसुपारसनाथस्वामी अंतराला॥

चंद्राप्रभु की मुक्ति तैं प्रथम सुपारसनाथ। सागर नवसै कोटि मिति मुक्त्यन्तर की गाथ॥ सुप्रतिष्ठ जिनके पिता प्रथ्वीसेना माय। कनक बरन स्वस्तिक लछन द्वैसै धनु की काय॥ बीसलाष पूरब उमर पंचग्रीव तजि लोक। पुरी बनारस औतरे हरे सकल जन सोक॥ भादौंबदि आठैं चवन जेठबदी के मांह। बारस तेरस जनम अरु दिछा की क्रम छांह॥ छठ सातैं फागुनबदी ग्यान और निरबान। यथासंख्य कल्यान की क्रम करि लीजै जान॥ साध सुपारसनाथ के तीनलाख मिति जान। तीनसहस अरु चारिलष सुभ साधवी बखान॥ बरनी देबी शानता अरु मातङ्ग सुजच्छ। बर गनधर पंचानवे जिनके परम प्रतच्छ॥

## अथ श्रीपद्मनाथस्वामी अंतराला॥

मुकत सुपारसनाथ तैं पद्मनाथ निरबान। नवहजार जे कोटि मित सागर पहले जान॥ पद्मपिता श्रीधर कहे और सुसीमा माय। अरुन बरन पंकज लछन धनु ढाईसै काय॥ तीसलाष पूरब उमर अन्तग्रीव तजि लोक। कौसंबी चवि औतरे हरे जनन के सोक॥ माघबदी छठ चवन अरु कातिकबदि के मांह। बारस तेरस जनम अरु दिच्छा की क्रम छांह॥ चैती पून्यौ ग्यान बदि ग्यारस अगहन मोष। सुभगिर सिषरसमेत पर कह्यौ पद्मजिन तोष॥ तीस सहस अरु तीनलख पद्म साध निरधार। बीससहस अरु तीनलष

कही साधवीसार ॥ स्यामादेवी बरनिये कुसमनाम जहं जच्छ । गनधर पद्मजिनेस के इकदससत परतच्छ ॥

अथ श्रीसुमतिनाथस्वामी अंतराला ॥

पद्मनाथ तैं सुमतिजिन मुक्ति मान परमान । सहसकोटि नब्बे दूते सागर पहले जान ॥ सुमतिनाथ पितु मेघरथ और मंगला माय । क्रौंच चिन्ह कंचन बरन धनुष तीन सै काय ॥ चालिसलख परब उमर छांडि जयंतबिमान । अवधि पुरी चवि औतरे ग्यान अवधि भगवान ॥ दूज सुदी सावन चवन सुकलपच्छ वैसाख । आठैं अरु नौमी जनम चारित को क्रम साख ॥ ग्यारस नौमी चैत की शुक्ला क्रम करि जान । सुमतिनाथ भगवान को परमग्यान निरबान ॥ तीन लाख दससहस कहु सुमतिनाथ के साथ । तोससहस अरु पांचलख सुभसाधवी अबाध ॥ महाकालि देवी कही तुंबर नाम सुजच्छ । सुमतिनाथ गनधर कहे सतदस छह परतच्छ ॥

अथ श्रीअभिनन्दनस्वामी अंतराला ॥

सुमतिनाथ तैं प्रथम पद अभिनन्दन आनन्द । सागर नवलख कोटि मिति कह्यौ परम निरदन्द ॥ सुमतिनाथ तैं आदि दै ह्यांलौं अंतर काल । छह जिननायक को कह्यो दसदसगुन को चाल ॥ संवर अभिनन्दन पिता सिद्धारथा सुमाय । कनक बरन कपि चिन्ह धनु साठतीनसै काय ॥ लख पचास पूरब उमर तजि कै विजय विमान । पुरी अयोध्या औतरे अभिनन्दन भगवान ॥ चवन चौथ वैसाख सुदि माघ शुक्ल के मांह । दूज और बारस जनम दिच्छा की क्रम छांह ॥ ग्यान पोस चौदस सिता आठैं सित वैसाख । सुभगिर सिखरसमेत पर मोख परम पद साख ॥ अभिनन्दन मुनि तीनलख और साधवी सार । कहि छलाख छत्तिस सहस जैनागम निरधार ॥ देवी काली बरनिये जच्छ नायकन जच्छ । अभिनन्दन गनधर कहे इकसत तीन प्रतच्छ ॥

अथ श्रीसंभवनाथ अंतराला ॥

अभिनन्दन तैं प्रथम पद संभव जिनको जान । सागर कोटि सुबीस लख ताकी संख्या मान ॥ संभव तात जितारिनृप और सुसेना

माय। हय लंछन कंचन बरन धनुष चारिसै काय॥ साठलाख पूरब सुथित छांडि आदिग्रीवेक। सावसती चवि औतरे राखि धरम की टेक॥ फागुन सित आठैं चवन अगहन सित के मांह। चौदस पांचैं जनम अरु चारित की क्रम छांह॥ कातिक बदि अरु चैत सुदि सुतिय पंचमी जोय। लह्यो ग्यान निरबान यह संभव क्रम करि सोय॥ जिनसंभव मुनि दोयलख और साधवी सार। तीनलाख छत्तिस सहस जैनागम निरधार॥ बरदेवी दुरितारिका और त्रिमुख जहं जच्छ। जिनसंभव गनधर कहैं पांचरु सत परतच्छ॥

अथ श्रीअजितनाथ स्वामी अंतराला॥

संभव ते जिनअजित लूं तिन कौं अंतर काल। कह्यौ तितोई बीसलख कोटि सागरै हाल॥ अजित तात जितसत्रु अरु विजया-देवी माय। कनक रंग गज चिन्ह धनु साढ चारिसै काय॥ लाख बहत्तर पूर्ब थित तजि के विजय बिमान। पुरीअयोध्या औतरे अजितनाथ भगवान॥ तेरस सित बैसाख चव माघ सुदी के मांह। आठैं नौमी जनम अरु दिच्छा की क्रम छांह॥ ग्यारस शुक्ला पोस सित चैत पंचमी जोय। लह्यौ ग्यान निरबान पद अजितनाथजिन सोय॥ अजित नाथ मुनि एकलख और साधवी सार। तीनलाख आगम कहे तापर तीस हजार॥ देवी बाला अजित जहं और महाजस जच्छ। अजित नाथ गनधर कहे नब्बे परम प्रतच्छ॥

अथ श्रीआदिनाथस्वामी अंतराला॥

अजितनाथ तैं प्रथम अरु ऋषवदेव जिननाथ। सागर कोटि पचासलख लखि लिखि होऊ सनाथ॥ एई प्रथम जिनेस तें चौबिस जिन लौं सार। सुतयंतर भाखे सकल प्रथक प्रथक बिस्तार॥ चरमतिर्थंकर लौं कह्यो जो सबको परमान। प्रतिजिन इकइक जोरि कै लेऊ सुजानि सुजान॥ ऐसैं जो सबजोरिये अंतरकाल नि-दान। रिषवदेव मुक्तादि तें महावीर निरबान॥ कोटिकोटि सागर अवधि मांह ऊन करि तासु। सहस बयालिस त्रय बरस अरु साढ़े बसु मास॥ तापर नवसै अरु असी बरस जोरि जौं लेऊ। कलपसूत्र पुस्तक चढ्यो तासु मान कहि देऊ॥ नाभिराय जिनके पिता अरु

मरुदेवी माय। वृषभ चिन्ह कंचन बरन धनुष पांचसै काय॥ लख चौरासी पूर्व थित सर्बारथ सिधि लोक। छांडि अयोध्या अवतरे हरे जनन के सोक॥ असित असाढी चौथ चव जनम रु चारित जोग। चैतवदी आठैं भयो दोनों को संजोग॥ असिता ग्यारस फागुनी माघी तेरस श्याम। कह्यो ग्यान निरबान क्रम अष्टापद अभिराम॥ मुनि चौरासी सहस अरु सुभग साधवी सार। तीन-लाख पूरी कही आदिनाथ परिवार॥ देवी वर चक्केसरी गोमुख नामा जच्छ। आदिनाथ गनधर कहे चौरासी परतच्छ॥

अथ श्रीआदिनाथस्वामी अधिकार लिख्यते॥

अब कछु विस्तर कै सुनौ ए पांचौं कल्यान। तीजे आरे के रहे इते बरस जब आन॥ लखचौरासी पूर्व तब भयो रिषभ औतार। जिनके अब बिस्तार करि कहौं सकल अधिकार॥ जिनके चारि कल्यान ते उत्तरषाढा माहि। अभिजित मैं पद पांचवैं कल्यानक की छांह॥ असित असाढी चौथ तिथ तजि सुर थित बिवहार। जंबुदीप थल भरथभुव कुल इच्छाक मझार॥ उत्सर्पनि जो काल जिहिं तीजौ आरौ जोय। कोड़कोड़ सागर कह्यौ सुखम दु:खमी सोय॥ पल्योपम अष्टांश मैं नगर अजोध्या जोय। गुरुकुल उपजे सात तहं प्रथम जुगलिया सोय॥ दूजो चक्षुष्मान ये दोनों नीति-हकार। पुनि तीजौ जसमिंत्र अरु अभिनंदा जे चार॥ इन दोउन के पाट लौं नीति कही मकार। चारि पाटलौं यह कही नीत मकार हकार॥ पुनि प्रसेनजित पांचवौं अरु छठवौं मरुदेव। नाभ-राज जे सातवैं इन तीनौं के भेव॥ नीति कही धिक्कारनो धनुष पांचसै देह। सातौं गुरुकुल की कही सकल बिवस्था एह॥ नाभ नाम गुरुकुल विषैं मरुदेवी की कूष। निसिनिसीय कैं काल श्री ऋषभदेव अनूप॥

अथ श्रीआदिनाथ च्वन कल्यानक॥

सुरसंबंधी आयु तजि अरु अहार बिवहार। छांडि चवे सुरलोक तैं गर्भबास आधार॥ अब इन जिन श्रीऋषभ के तेरह भव बपु नाम। बरनि बखानौं प्रथम धनसारथवाह ललाम॥ भये जुगलिया

दूसरे तीजे सुरबर फेर। चौथे राजामहाबल फेर पांचवैं हेर॥ भये देवललितांग पुनि बज्रजंघन्नृप फेर। छठैं सातवैं जुगलिया पुनि सुर अठयें हेर॥ जीवनदायक नाम पुनि बैद्य नवैं भव सोय। दसवैं भव बरदेवता जनम होय सुख मोय॥ चक्र बर्त्ती पुनि ग्यारवैं बज्रनाभ इहिं नाम। सर्वारथ सिधि बारवैं भये परम अभिराम॥ जनम तेरवैं रिषव प्रभु आदि जिनेसर सार। तिन जिनके अधिकार अब कहौं सकल बिस्तार॥ तीन ग्यानसह चवन जिन कीनौं गर्भ निवास। कुंजरादि चौदह सुपन मरुदेवी लखि तासु॥ ऐसें ही बाईस जिन जननि प्रथम गज देखि। और लखै नहिं वृख लखै प्रथम कह्यौ याले खि॥ रहे नहीं तिहि काल मैं जे पण्डित सुपन-ग्य। यातैं सुपन बिचार तहं कियो नाभिसरवग्य॥

अथ श्रीआदिनाथ जन्मकल्यानक॥

गर्भकाल बीत्यो जबै सकल सवानव मास। चैतबदी आठैं नखत उत्तरखाढ प्रकास॥ मरुदेवी की कूख तैं जनमें श्रीभगवान। रिखबदेव भगवंत बर आदि जिनेसर जान॥ आदितिर्थंकर आदि-नृप भिच्छाचर पुनि आदि। आदि केवली रिखब ए पांचौं नाम अनादि॥ छप्पन दिसाकुमारि अरु चौंसठ इन्द्रन आय। कियो महोच्छौ प्रथमवत धन बरखा बरषाय॥ तोलन तोला सेर मन बाटन गज तिहिं काल। रीति जाति करमादि नहिं और दसूठन चाल॥ ते सब अब नव रीत करि सब अचार बिवहार। करे हरे दुखदुंद सब श्रीजिनराज कुमार॥ दीन दुखी दारिद्र जुत हीनन को तिहिं काल। बंद न कोऊ बंदि मैं सब अनन्द सुखहाल॥ एक बरस के जब भये आदिनाथ भगवान। इन्द्र आय इक ऊख तहं लायो जिन हित जान॥ अरु जिन करअंगूठ मैं अम्रत कियो संचार। चारित समयावधि लियो सुरसंबंधि अहार॥ एक समय नर जुगलिया लहि फलतालअघात। मरयो तासुको जुगलतिय लई नाभिन्नृप तात॥ लै राखी निज महल मैं रिखभ ब्याह कै हेत। अति सुंदरि मरि जरि मनो रति छाडो झखकेत॥ कोटि लाख सत्तर बरस सहस छपन के मान। संख्या पूरब की कही इते

बरस पहिचान ॥ बीसलाख के अंक सौं गुनि यह अंक सुजान।
बीसलाख पूरब ऋषभ रहे कुमार सुजान॥ जोबन बय मय समय
बर बिषयभोग रससार। जोग भये जिननाथ जब तिहिं बरबय
कौमार ॥ इन्द्र इन्द्रतिय धारि चित जिनवर ब्याहँ बिचार। आय
अवासनिबास हित रचैः ब्याह बिस्तार॥ धुज तोरन मंगल कलस
रंभा खंभ बितान। तानि सुबंस सगाय कै चौरी रचो सुजान॥
बहिन सुनंदा ऋषभ की अरु सुमंगला दोय। जुगल धर्म करि
इन्द्र तिहिं जुगल ब्याहि हित सोय॥ पीठी उबटि नहाय पुनि
सकल सिंगार सिंगारि। कोरौ बसन पहिराय तिन चौरी माहिं
बिठारि॥ पुनि सुरपति भगवन्त कौ पीठी उबटि नहाय। तास
बास बासे अतर बरबागौ पहिराय॥ सुर समूह सब साथलै सजि
सब साजि बरात। हय चढ़ाय जिनराय बर मुद बढ़ाय बिख्यात॥
मोर मौर सिर सेहरा चामर छत्र डुलाय। मिलि इन्द्रानी इन्द्र
जिन मड़ड़े तर पधराय॥ सुरतिय मंगल गाय मनि मानिक चौक
पुराय। हथलेवा मिलिवाय पुनि चारौं फेर फिराय॥ सकलकर्म
करि चाय सौं बिधिवत ब्याह कराय। पाय सकल सुख सुर स-
हित सुरपति भये बिदाय॥ छहलख पूरब अवधि लगि बिषयभोग
गृहबास। बिलसि सुनन्दा कै भयो प्रसव जुगलिया जासु॥ भरत
ब्रिरामो नाम तिहिं अरु सुमंगला नारि। जनी बाहुबल सुन्दरी
प्रथम जुगलिया सार॥ पुनि जनमो यह जुगल सुत दोइ ऊन
पंचास। यह सन्तत भगवंत की भई गृहस्थाबास॥ तीजे आरे के
रहे जब थोरे दिन आय। कल्पवृक्ष थोरे रहे भव मैं जुगलि न
पाय॥ लरन लगे ते परसपर इक तरु तर है बैठि। हक मक
धिक्कार ते तिहुं तीनि मैं पैठि॥ तिनके न्याव निबेरहीं नाभि
नृपति चितचाहि। चह्यो राज के पाट पर सुतहि बिठावन ताहि॥
आय इन्द्र सुरलोक तें कियो महोच्छौ चाय। राजपाट अभि-
षेक को सौंज समारो आय॥ पुरी अजोध्या आय कैं धनदकरी
नृपकाज। राजसाज सुरपति सजे बाजि ताज गजराज॥ त्रेसठ
लख पूरब बरस ऋषभदेव करिराज। सकल कला तिनहीं करी

प्रगट जगत के काज ॥ लिखनपढ़न अरु गिनन पुनि सुगुन सुपन कौ ग्यान। शस्त्रशास्त्र धनुबान की बिद्या आदि सुजान ॥ गान ग्यान गुन मान मिति तानताल के भेद। न्टत्य नाट्य अरु बाद्यके चारौं भेद अखेद ॥ कामकला रसरमगिता सोरह सजनसिंगार। बसीकरन मोहन कला आदि अमित परवार ॥ जोतक बैदक अश्व गज रथ आरोहन ग्यान। चित्रचितेरन चतुरई अरु बिचित्रता जान ॥ सकल सिल्प की खल्पता सूछम थूल प्रकार। सब सिखराई जनन कौं सजि तिनके हथियार ॥ त्रेसठलख पूरब बरस जब यों भये बितीत। दिच्छासमय चितावने आये सुर करि प्रीति ॥

अथ आदिनाथस्वामी दिच्छाकल्यानक ॥

जैजैनंदा कहि कह्यो जैभद्रा जिन जान। कोउ न लें तिहिंकाल पै दियो समच्छरीदान ॥ चैत बदी आठैं सुदिन पहिर पाकले पाय। बैठि सुदरसन पालकी सुर मनु सह समुदाय ॥ पुरी बिनीता बीच ह्वै निकसि बाहरैं आय। तरु असोक तर सोक तजि भूषन बसन बढ़ाय ॥ सुरपति हित इक मूठ तजि चारि सुष्टि करि लोच। चैाबिहार ह्वै बास जुत तजि संसारी सोच ॥ उत्तर षाढ़ा जोग ससि चारि सहस नरसाथ। देवदूष पटजुतलियो चारित जिन जगनाथ ॥ तदनन्तर जिन आदिप्रभु लागे करन बिहार। पै बिहरावन बिधि न कोउ जाने देन अहार ॥ फिरे गोचरी करत जिन बीत गये षटमास। भिच्छालाभ न होय कछु सहैं भूष अरु प्यास ॥ साध संग भगवन्त के जे हैं चारि हजार। सहि न सके प्यासरु छुधा पायैं बिना अहार ॥ जाय सुरसरी तीर तब बन तरु दल फल फूल। पाय खाय बन छाय कै गह्यो तपस्या मूल ॥ एकाकी जिन होय तब तहँतैं कियो बिहार। पालकसुत ह्वैनमि बिनमि तहां मिले हित धार॥ परे पाय सुद छाय पुनि लगे करन जिन सेव। जिन तन मांहि समाय तब कह्यो सुरन के देव ॥ बर दै पुनि दीनैा तिन्हैं बैतढ पर्बत राज। गैारि आदि बिद्या दई अड़तालिस सुख साज ॥ तातैं बिद्याधर भये छये

महा सुख चैन । उत्तर दच्छन श्रेय के भये घनी घन चैन ॥ पुरमताल नगरी गये तहंतैं श्रीभगवान । छुधा पिपासा सहनकरि रहे तहां जिन जान ॥ मनि मोती रथ गज तुरग कन्या सबकोउ देय । पै अहार बिहरायबौ काहू कौं नहिं गेय ॥ पिछलैं भव इक बरद मुख बारह पहर जिनेस । छींका बांध्यो हो सु तिहिं कर्म उदै अवधेस ॥ लह्यो न बारहमास लौं ताहो देत अहार । अन्तराय परैं भये तब अहार बिवहार ॥ रिषभ पौत्र श्रेयांस तहं देखि साधकैं रूप । जिनबर कौं घर लैगयो भिच्छा हित हित भूप ॥ अब जब जिन माड़न लगे करि भिच्छाकैं हेत । दहनौ बायेंसौं लग्यो कहने भाई चेत ॥ हैं पूजा जप जग्य अरु जीमन दानहि जोग । यातैं तूंहीं इह समय लेहि प्रतिग्रह भोग ॥ दहने सैं कहने लग्यौ सुनि बायैं यौं बैन । भलो नहीं ऐतो गरब चुप रहि कहै बनैन ॥ तूं ज्वारी तू चोर तूं करत कुकर्म अनेक । जुद्ध मांहि पीछैं भनै हैं ही राखैं टेक ॥ सुन झगरो कर दुहुन को श्रेयंस बोले बैन । भलो न जिन पारन समैं यह झगरो दुष ऐन ॥ यातैं तुम दोऊ मिलो मिलि बिहरो आहार । सुनि जिन दोऊ कर मिले सनमुख दये पसारि ॥ तब बिहराये ऊख रस श्रेयंस सरस जिनेस । सुर दुंदुभि नभ बजि करी अति धनवृष्टि सुरेस ॥ ताही दिन तैं यह भयो अखयतीज तिहिबार । बिहराबन लागे तबै जिन बर कौ आहार ॥ तच्छसिलानगरी गये बिहरत आदि जिनेस । काउसग्ग तप करि रहे तहां रिषब ग्यानेस ॥ तहां बाहुबल जिनसुअन आयो बंदन हेत । करी यापना प्रीत करि जिनपद को तिहिं खेत ॥ मरुदेवी जिनजननि जब सुमरै जिनके हाल । भूख प्यास तप कष्ट को सहन होय बेहाल ॥ रोय कहे सुत भरत सौं राज काज बस तात । क्यौं भूली सुधि तात की भली नहीं यह बात ॥ रोय रोय यौं रैनदिन दीनै नैना खोय । होत जात छिनछीन तन मरुदेवी दुखमोय ॥ सहस बरस सहिसहि सकल सुरमनुजकृत उपसर्ग । तज्यौ जिनेसर गेह अरु देहनेह सुखबर्ग ॥

—o—

अथ श्रीआदिनाथस्वामी ग्यानकल्यानक ॥

फागुनबदि एकादशी नखत उत्तरासाढ। तीन बास पानी रहित चौविहार करि गाढ ॥ दुपहर दिन पुर तैं निकसि बन बसि बटतरु हेठ। पायो केवल ग्यान पद परम सिद्ध में पैठ ॥ भरत करी महिमा महत आदिनाथ की आय। पुनि मरुदेवी माय कौं हाथी पर बयठाय ॥ तिन पूछी तब भरत सौं देवबाद्य सुनि कान। भरत सुनायो लाभ बर आदिनाथ कौ ग्यान ॥ सुनि अति छायो मोद मन मरुदेवी कै सोय। उघरि गये दृगपटल जे खोये दुख करि रोय ॥ मरुदेवी हू कौं तहां उपज्यो केवल ग्यान। एक मुहूरत मांहि पुनि पायो पद निरबान ॥ सुरन आय तहं समुद्रमैं दीनी काय बहाय। भरत कियो अति सोक पुनि हरषे मोदबढ़ाय ॥ भरत जाय छह खंड मैं राजनीत दरसाय। चक्रबर्त की रिद्धि लै फिरे अजोध्या आय ॥ भरत भ्रात अट्ठानवै तेऊ बोधहिं पाय। चारित लीनौ तिन सबन ऋषभदेव तैं चाय ॥ सुन्दरियादिक तियनहूं पुनि लीनौ चारित्र। एक बाहुबल बिन सकल सेवक भये पवित्र ॥ सुमुख नाम इक दूत तहं भरथ पठायो जाय। तक्षसिलापुर बाहुबल निकट संदेस सुनाय ॥ कह्यो बुलायो प्रीत करि तुमहिं भरत भूपाल। मिलन हेत उतकंठ अति औ-सेरत अरिसाल ॥ सुनि संदेसो बाहुबल कह्यो बाहु बल जोर। सब भाइन कौ राज लै अब आये इहिं ओर ॥ सोतो ह्यां बनिहै नहीं कहो रहैं चुपसाधि। नतौ बेग सजि होइ कहूं उठिहै बड़ी उपाधि ॥ दूति बिदा ह्वै चलि पहुंचि निज पुर कही सुनाय। सुनि कोप्यो चकवै भरत सहसेना समुदाय ॥ चल्यौ बल्यौ चतुरंग लै संग निसान बजाय। उत तैं बहुज बाहुबल चढ़ि चलि आयो धाय ॥ मिले मध्यमग मैं दुऊ जुरे जुद्ध समुहाय। सुभट भिरे घिरि दिसन मैं तनतैं मोह छुड़ाय ॥ मच्यौ घोर संग्राम अति लख्यौ जुद्धबरसोय। ऐसेही बीते बरस बारह लख्यौ न कोय ॥ लरे मरे दुहु ओर के भट गज तुरंग अनेक। पै दोउन भाईन मैं किनहूं तजो न टेक ॥ तब सुरपति तहं आय कैं समझाये दोउभाय

जीवन कौ क्यौं छैकरै लरत न दुंद बनाय ॥ पांच भेद है दुंद के एक बचन दृग दृष्ट । दण्ड बाहुकी जुद्ध पुनि कही पांचवीं मुष्ट ॥ सुनि मानी मानी दुहुन बल के मद उमहाय । पर पांचौं बिधि मैं थक्यौ भरतै अति श्रम पाय ॥ तब मारन हित बाहुबल मूठ उठाई जोर । समझि फेर तिहि समय मा धिक्कार्यौ मुह मोर ॥ राजहेत राच्यौ कलह धिकधिक जीवन हाय । यौं पछ-ताय बिहाय सब दुंघ बिरागहिं पाय ॥ चारित लीनौ तुरत तब तजि सब सुख संसार । भरत आय परि पाय पुनि दोष खिमाये हारि ॥ पै थोरौ सौ अहमती रह्यौ बाहुबल मांह । लघु भाई पग लगन मैं मनमच्छर की छांह ॥ करन लग्यौ तातैं तबै का-उसग्ग तप घोर । पग पर दीमक घर कियो श्रुति मैं पंछी ठौर ॥ आदिनाथ लहि ग्यान मग बाहुबली कौ मान । भेजी ब्रामी सुन्दरी बहिन बोध हित जान ॥ गज तैं उतरौ तिन कह्यो दुहुं साधवी आय । सुनि बिसमय ह्वै तिहिं समै तप तजि सोच्यौ चाय ॥ बहु दिन बीते गज तजै यह कैसौ गज कौन । मानमतंग सो बूझिये अबलौं समझ्यो हौन ॥ हैं या गज पर चढ़ि रह्यौ कै यह सांपै मान । भ्राता पग लागन चल्यौ तजि तिहि काल गुमान ॥ तिहिं थल केवलग्यान तिहिं उपज्यौ लहि सुख छांह । आदिनाथ पग परसि कै बसे केवलिन मांह ॥ अब श्रीआदि जिनेस कौ कहैं सकल परिवार । चौरासी गनधर तिते साध सहस निरधार ॥ तीनलाख बर साधवी स्रावक साढ़ेतीन । पांचलाख चव्वन सहस सुभ स्राविका प्रवीन ॥ चारि सहस अरु सात मैं साढ़े पूरब जान । अवधिग्यान ग्यानी भये नवहजार परमान ॥ बीस सहस पदकेवली लबध बयक्री बान । बीस सहस छहसै भये बहुर बिपुल मतिग्यान ॥ साढ़ छहसै अरु सहस बारह संग्या सोय । तेतेई बादी भये साध संख्य यह जोय ॥ साध मुक्ति पद कौं गये बीससहस लहि बोध । लह्यौ साधवी हूं मुकत चालिस सहस प्रबोध ॥ ऐसैं आदिजिनेस की साधु संपदा मान । दुऊ प्रकार भुव जिन कहै एक अंतकृत जान ॥ अरु दूजी परियांतकृत मुकत राह निरबाह । रह्यौ असंख्या

पाटलौं जिनबर पाछे चाह ॥ अब सब आउ जिनेस कौ कहै सुनौ चित लाय ॥ बीसलाख पूरब रहे पद कुमार मैं छाय ॥ त्रेसठ पूरब लाख पुनि बरस राज पद भोग। च्यासी पूरब लाख कुल गृह सुख भोग संजोग ॥ एकसहस छद्‌मस्त अरु सहस ऊन दूकलाख। पूरब केवल ग्यान पद पाय रहे निज साख।

अथ श्रीआदिनाथस्वामी मोक्ष कल्यानक ॥

चौरासी पूरब सकल आयु मान प्रतिपाल। मास आठ साढ़े बरस तीन हुतौ जबकाल ॥तीजे आरे के रहे माह माहके मांह। सुभ तिथ असित तिरोदसी अभिजित ससि की छांह ॥ अष्टापद परबततहां दस हजार संग साध। छह उपास पानीरहित चौवि-हार ब्रत साध ॥ दुपहर दिन पहले लह्यो आदिनाथ निरबान। कालमान भाख्यो प्रथम महावीर लौं मान ॥ आदिजिनेसर जनम तैं महावीर निरबान। चौरासी पूरब सहित इनकी आयुप्रमान ॥ कोटि कोटि सागर अवधि मैं घट करि यह तासु। सहस बया-लिस त्रयबरस अरु साढ़े बसु मासु॥ ता पाछे बीते नवै नौसै असी प्रमान। बरस लिख्यौ यह ग्रन्थ तब कल्पसूत्र सो जान ॥

अथ थविरावली ॥

महावीर जिननाथ के ग्यारह गनधर सार। जे चौदह पूरब निपुन द्वादशांग गुनधार ॥ तिनमैं द्वै कौ शिष्य नहिं नवही कौ बिस्तार। नवही गच्छ भये तहां महावीर के बार ॥ ते सब मा-सिक बरत करि चौविहार धरि ध्यान। नव तिनमें जिनवर छतै लह्यो मुक्त निरबान ॥द्वै पाछैं सबके कहौं अब मुनि नाम बखान। इन्द्रभूत पहिलैं भये गोतम गोती जान॥ अग्निभूत दूजे भये तेऊ गोतम गोत। बायभूत तीजे तेऊ गोतम गोत सजोत ॥ आर्यब्यक्त चौथे भये भारद्वाज सगोत। थविर सुधरमो पांचवें अग्नि गोत सुभजोत॥ पांचपांचसै साध कौं पांचौं बाचन देइ। द्वादशांग आ-गम सकल पढ़ैं पढ़ावैं तेइ ॥ छठवें मंडितपुत्र ते गोतम गोती जान। मौरीसुत सप्तम भये कौसक गोत निधान॥ येद्वै साढ़े तीनसै साधहि बाचन देय। थविर अकंपति आठवें गोतम गोती

तेय ॥ थबिर अचलभ्राता भये हारयानि जिहिं गोत। थबिर भये मेतार्य जे कौड़िन गोत सजोत ॥ थबिर ग्यारवैं गोत सुभ कौड़िन नाम प्रभास । तीनतीनसै साध कै बाचन दै अग्नियास ॥ अब क्रम करि पट्टावली थबिरन की सुनि लेय । महावीर के पाट पर गोतम बैठे तेय ॥ महावीर को मुक्ति तैं बारह बरस बितीत । भये गये ते मुक्तिपद जिहिं सब आउ प्रतीत ॥ भई बानबै बरस की तब पायो निरबान । पुनि सुधर्मस्वामी भये तिनके पाट सुजान ॥ चारित बरस पचासवैं लियो बरस पुनि तीस । महावीर सेवा करी बारह गोतम कीस ॥ आठ बरस पद केवली पालि पाय निरबान । ग्रतंजोव ह्वै मुक्तिपद परम लह्यो सुग्यान ॥ शिष्यनही इन दुहन के रहे तबै तिहिं पाट । जंबूस्वामी तैं तहां रही धरम की बाट ॥ रिषभदत्त बिवहारिया तिया धारिनी तासु । जिन तैं जनमैं नाम सुभ जंबूस्वामी जासु ॥ सुनि सुधर्म बानी लह्यो सब संसार असार । आठ तिया ताके तऊ राग रहित बिवहार ॥ इक दिन ताके सदन मैं प्रभव नाम इक चोर । आय पांचसै जन सहित चोर बिपुल धन जोरि ॥ चल्यो गेह चलि नहिं सक्यौ सासन देव प्रभाव । तब जंब के पग पर्‍यौ सो तस्कर कौ राव ॥ कह्यो खापनी सीखिये हमतैं बिद्या सार । अपनी हमैं सिखाइये थंभन बिद्या चार ॥ तब जंबू ता चोर कौं सब चोरन के साथ । धरमकथा उपदेश कहि बोधे सब मुनिनाथ ॥ आय आठ तियके सहित अरु उनके पितुमात । सब तस्कर मिलि पांचसै सत्ताइस जनजात ॥ इन सब मिलि चारित लियो अति अगिनित धनवान । महावीर तैं साठवैं बरस जंबु निरबान ॥ भये तहां तिहिं समय तैं ये दस बोल बिछेद । मनपरजाई ग्यान इक परमावधि पुनि बेद ॥ लब्धपुलाकी तीसरी आहारक तन फेर । पुनि चारित त्रय भांति कौ कह्यौ पांचवौं हेर ॥ इक परिहार बिसुद्धता ताकौं पहिलौ भेद । संपराय सूछम बहुर यथा ख्यात पुनि बेद ॥ छपकस्रेन छह पुनि कही उपसम स्रेनी सात । जिनकल्पी कहि आठ नव केवलग्यान बिख्यात ॥ दसवौं मोष पधारनौ ये दसबोल

बखान । कहे भये बिच्छेद ये जिन जंबू निरबान ॥ जिनजंबू के पाट पुनि प्रभवस्वामि थिर होय । यौं बिचार चित मैं किया पाट जोग नहिं कोय ॥ तब सिय्यंभव बिप्र इक राजगृही के मांह । जग्य करत लखि तासु मैं साध जोगता छांह ॥ तिहिं परमोदि प्रबोधिकैं सब दिज कर्म छुड़ाय । दई शांति जिननाथ की प्रतिमां ताहि दिखाय ॥ गुरुमुख सुनि उपदेस पुनि चारित लीनौ जानि । प्रभवस्वामि के पाट पर बैठे सो सुग्यान ॥ पाछैं तिनकैं सुत भयो तिय के गर्भाधान । ताहूकौं लघु आयु लखि पितु परबोध्यो जान ॥ महाबीर निरबान तैं प्रभव म्यु कौ काल । भयो बरस अट्ठानवै जब बीते तिहिं हाल ॥ पुनि सुयंभव पाट पर जिनकौं बच्छस गोत । जसोभद्र तुंग्यायनी गोत सुरबर जोत ॥ पुनि तिनके द्वै शिष्य इक माढर गोती जोय । आर्यविजय संभूति पुनि दूजे कहिये सोय ॥ भद्रबाहुआरजथबिर जासु गोत प्राचीन । थविरबिजय संभूति के थूलभद्र आधीन ॥ पट्टनपुर द्विज पुत्र द्वै लीनौ चारित चाह । भद्रबाहु तामैं अनुज अग्रज मिहिरबराह ॥ अनुजैं लखिकैं जोग गुरु दीनो अपनौ पाट । अग्रज अति दुख पाय कै कियो नृपति पै काट ॥ जोतिस बल जो २ कह्यो नृपसौं मिहर बराह । गुरुप्रताप तैं सब भई झूठी ताकी चाह ॥ लाज पाय मरि मिहर फिर ब्यंतर ह्वै दुखदाय । मरी करी जिनजनन मैं प्रकट निपट अधिकाय ॥ सो गुरु अपनी शक्ति करि दुखहर तवन बनाय । संतेवानी जल छिरकि दीनौ दोस मिटाय ॥ थूलभद्र की सुभकथा अब सुनिये चितलाय । शिष्य बिजय संभूत के जिनजन कौ सुखदाय ॥ गोतमगोती ते भये कहौं सुनौ ते कौन । पाटलपुर मैं नन्द नृप ताकौ मंत्री जौन ॥ नाम कह्यो सिकड़ाल तिहिं द्वै सुत जाके जान थूलभद्र पहिलैं भयो दूजौ सिरया मान ॥ सात सुता ताके निपुनि स्रुतिधर तिन करि सोय । जीत्यो पण्डित बररुचा राजसभा मे कोय ॥ तिन पण्डित सिकड़ाल कौ दीनो दोष जगाय । नृप कोप्यो तब मंत्रिपै मंत्रि मस्यो बिष खाय ॥ तब सिरयहि बोल्यो नृपति देन मंत्रिपद ताहि ॥ तेन अग्रज कौं बात यह जाय सुनाई चाहि ॥

सो हो गणिका गेह में कामकोस जिहि नाम । जाका जुग बात तहां फस्यौ बिखय बिसधाम ॥ साढ़ेबारह कोटि धन सुहर ख-रचि करि पाय । बस कीनो हो बिबस ह्वै सुबस बसो तहं जाय ॥ पाय खबरि नृप चहन को पहुंच्यो राज हजूर । पहुंचि सोचि कछु समझि पुनि भयो बिरति भरपूर ॥ लई बिजय संभूति तें चारित दिच्छा जान । सिरिया पुनि मंत्री भयो नृप आग्या पर-मान ॥ बोधन गणिकाकोस कौं थूलभद्र तहं जाय । चतुरमास तिहिं पर रह्यो जल जलजन के न्याय ॥ भाख्यौ साढ़ेतीन कर इम तें रहि कौं दूरि । मन आवै भावै सुकर सरस भाव रसपूरि ॥ तैसें ही औरौ तबै तिहिं गुरु भाई तीन । लगे करन तप तीन थल आप आपने मति लीन ॥ सिंघ सदन सुख इक बसो एककूप मुख आय । इक अहिगृह मुख सदन यों बरषा दई बिताय ॥ थूलभद्र कीनौ कठिन पै सब तें तप जान । खड़गधार तीछन अनी घनी बनी दुषखान ॥ इक बरषा रित रस भरी घनघुमड़नि चहुं ओर । सरसनि बरसनि परसपर कल कूकनि पिक मोर ॥ झमकनि चमकनि चंचला गरजनि सरजनि काम । महीमही आकास सब भयो उद्दीपन धाम ॥ अरु युवती नवजोबना भूषन बसन बनाय । हावभाव दृगभौंह के अरु अनुभाव बिभाव ॥ नृत्य नाट्य गुणगान के तान ताल मिलि मान । बाजनि बीन प्रवीन कर सुर लैलीन निदान ॥ एते सब बाधक अधिक साधक साधनसार । डिग्यौ न डग भरि अचल मति थूलभद्र निरधार ॥ बरषा बीतें गुरु निकट निपट बिनयजुत सोय । ल्यायो गनिका बोधि संग कृपा दीठ गुरु जोय ॥ कहो अहो दुक्करदुलभ तुव तप यौं द्वैबेर । एक बेर तिन सौं कह्यो तीन शिष्य तन हेर ॥ तेमन में दुख पाय अति कोप गोप मुख फेर । सिंघ गुफा बासी जती दूजो बर्षा फेर ॥ उपकोस्या बेस्या सदन पावस करन निवास । आस धारि मनमें चह्यो आग्या बर गुरु पास ॥ ज्यावि न दीनौ गुरु जबै जती सु तब तिहिं काल । बिनुही गुरु आग्या गयो गणिकागेह सभाल ॥ धर्मलाभ तासौं कह्यो तिन चाह्यौ धनलाभ । बसीकरन मोहन-

भस्यो गुनमय गनिका गाम ॥ चितवतही तनमन लियो धन बिन सस्यो न काम । न्हपनेपाल सुदेस तब गयो साध धन काम ॥ भरि बरषा रितु मेह मैं नेह बिबस बस काम । नदी भील भेलत चल्यो छल्यो छबीली बाम ॥ तहां जाय जाच्यो न्हपति तिन सनमानि बुलाय । दियो रतनकांबल सु लै आयो तिय पै धाय ॥ उपकोश्या बेश्या निकट कियो निबेदन सोय । तिन लै पग सौं पोंछि पुनि फेंक्यो कादव मोय ॥ अरु भाख्यो ता साध सौं अपनौं कंबल देख । देखि साध दुख पाय अति कहन लग्यो सबिसेख ॥ केतो दुख सहि यह लह्यो तुव हित लायो जान । सो तैं यों त्याग्यो तुरत यह बहु मोल अजान ॥ सुनि गणिका लागी कहन सुनरे मूरखमूढ़ । यह कंबल बहु मोल तें मान्यो जान्यो गूढ़ ॥ अति अमोल त्रय रतन जे ज्ञान दरस चारित्र । हाथ गवाये आपने क्यों पछिताय न मित्र ॥ सुनि मन कौं धिक्कार करि बिरति भयो सो साध । छाड़ि राग ताकौ तुरति गहि बैराग अबाध ॥ बेग जाय गुरु पाय परि दोष खिमाय खजाय । गह्यो ग्यान पथ परमपद लह्यो बढ्यो सुभ भाय । गणिका समकित धारनी कोस नाम अभिराम । थूलभद्र जिहिं बोधि दै लाये हु सो बाम ॥ सभा मांहि न्हपनंद कै इक दिन इक रथकार । धनुबिद्या कर आंब फल दियो गरब उर-धार ॥ न्हप परसंस्यौ ताहि सुनि कोश गरब के भार । नाची सूची अग्रपै कनठेरी पर धार ॥ देखि सभा जन तिहिं समय बिस्मेमय सब होय । अति परसंसी न्हप सहित हिय हित हेत समोय ॥ तब गणिका बोली बिदित यह कछु बड़ो न बात । महा पुरष ह्वैबो कठिन कामादिक तजि तात ॥ सुनि यह राजा नंदहूं बोध पाय सुख छाय । थूलभद्र के साथ ह्वै भद्रबाहु पै जाय ॥ चारित लै पूरब पढे दस सुख हो तै सोय । चारि पढ़े पुनि सूत्र तैं पूरब पूरे होय ॥ महाबोर की मुक्तितैं थूलभद्र परलोक । द्वै सै पन्द्रह बरस पर लीजै जान असोक ॥ प्रभवरु सिय्यंभव जसोभद्र बिजय संभूत । भद्रबाहु पुनि थूल यह छह सुत केवल पूत ॥ थूलभद्र के शिष्य द्वै थबिर महागिरि एक । भये प्रभाविक गात जिहि एला

पुत्य बिबेक ॥ हस्तिसूर दूजे धस्यौ जिन बासिष्ट सुगोत। तिनकी अब संक्षेप कछु कहैं। बिवस्था पोत ॥ इक दिन पुरी उजैन मैं पहुंचि गोचरी हेत। शिष्य गये तिन के तहां जिनजन हेत निकेत ॥ लखि भोजन मिष्टान्न तहं रंक एक लगि साथ। आयो उत्तम जीव तिहिं जान्यौ गुरु लखि हाथ ॥ खीर षाण्ड कौ तिहिं दियो भोजन अति भरपूर। खाय अफरि करि बमन सो मस्यो कष्ट लहि भूर ॥ मरि फिर जनम्यो न्रपति घर जातिसुमर ह्वै सोय। गुरु सौं भाखी बिनय जुत अग्या दीजै जोय ॥ सोई हैं। माथे धरौं इक चारित नहिं होय। सुनि गुरु ताके हेत जिन धर्म बिचास्यो सोय ॥ सुनि गुरु श्रावक धर्म सुभ तिहिं कीनौ उपदेस। तिन न्रप संप्रत नाम सो मान्यो गुरु आदेस ॥ सवाकोटि प्रतमा करी सवालाख प्रासाद। जीरन उद्धारे सकल तेरह से अबिखाद ॥ करी दान साला बिपुल मिति सत सात सुधार। कर छुड़ाय सब देस के सुखी किये नरनार ॥ सुस्थित और सुप्रत्त बुध हस्ति सूर शिष दोय। कोटिक गछ काकंद पुर बासी जानौ सोय ॥ तिनके शिष्य सु इन्द्रदिन गोतम गोती जान। तिनहूं के पुनि सिंघगिर गोतम गोत निधान॥ तिनहूं के पुनि शिष भये बइर गोतमी गोत। तिनकौ कछु बिस्तार करि कहैं। बिवस्था पोत ॥ धनगिर इक बिवहारिया तासु सुनंदा तीव। तासु गर्भ मैं चवि बस्यो तिर्यक जंभक जीव ॥ धनगिर साध संजोग तैं चारित लीनौ जाय। पाछै तिनकै सुत भयो जननी कौ दुखदाय ॥ इक दिन धनगिर निज घरै करन गोचरी आय। तिय सुत दुख तैं लखि कह्यो यह आपनी बलाय ॥ लेहु मोहि दुख देत अति रोय रोय दिन रात। आंखि लगी न छमास तैं जागत भयो प्रभात ॥ जहां गये तुम आप तहं याहू को ले जाय। यह कहि झोली मैं दियो सुअन हठीलो लाय ॥ लै आये गुरु निकट तिहिं गुरु भाख्यो हो जोय। सचित अचित जोई मिलै जाय बिहरियोसोय ॥ आय सासुहैं सिंघगिर झोली लीनी हाय। भारबज्र सम जानि तिहिं बैर कह्यो गुरु नाय ॥ पालन लालन हेत तिहिं एक श्राविका हाथ। गुरु दीनों

लीनोंसु तिन पोस्यो जिय के साथ ॥ तहां पालने माहिं तिन सुनि सब सूत्र सुअर्थ। कहत साधवी बदन तैं सीख्यौ गयो न व्यर्थ ॥ तीन बरस बय जब भई सुमिर सुनन्दा साथ। खेलत लखि सुत और के चावन आई धाय ॥ बालक मांग्यो गुर निकट गुर नहिं दीनौ सोय। जाय पुकारी नृपति पै सो धर्नगिरि की जोय ॥ नरपति तब गुरु बोलि सुनि सिगरी पिछली बात। कह्यो वस्तु लै तासु की सुत तौ ताकी मात ॥ नाना बिधि के मात तब धरे खिलौना ल्याय। उन एकौ सो ना छुयो ओघा लियो उठाय ॥ नृप दीनौ गुरु कौं सुअन माय हारि पछताय। लै चारित गुरु तैं रही बैरस्वा-मिढिग जाय ॥ आठ बरस कौ जब भयो बैर भयो तब साध। इक दिन गुरु तिहिं चेत दै बाहर गये अबाध ॥ पाछैं सब साधन लग्यौ बइर बाचना दैन। आये जब गुरु सुनि चह्यो दैन पाट सुख येन ॥ जानि जोग दीनौ पस्यो सो दस पूरब सूत। बैठि पाट गुरु-देव के सो धनगिर को पूत ॥ श्रावक तन धरि एक सुर तहं आयो छल साधि। लाग्यो बिहरावन गुरहिं पेठापाक अबाधि ॥ पै उन ग्यान बिचार तिहिं बिहस्यौ नहिं लहि सोय। रीझि होय परतछ दई लबध बइरकी जोय ॥ लबध महानस हूं दई लई बइर सो ताहि। चतुर संघ दुर भिच्छ तैं लये बचाय निबाहि ॥ अन्त आउ निज जानि पुनि अनसन करन बिचार। बज्रसेन निज शिष्य सौं भाख्यौ गुरु तिहं बार ॥ रह्यो सेठ जिनदत्त इक श्रावक पाछै जोय। चढ़ै रसोई तासु की लाख द्रव्य जब होय ॥ सो या काल अकाल में मिलै न नित इहि काज। मरन चहत तिहिं जाय तुम बरजौ आनौ बाज ॥ बज्रसेन सुनि गुरु बचन चलि पहुंच्यौ तिहिं देस। मिल्यो सेठ जिनदत्त सौं भाख्यौ गुरु उपदेस ॥ तिन मन मैं चिंतन कियो जो इहिं काल दुकाल। लहैं भच्छ दुरभिच्छ तैं बचै छुटै जंजाल ॥ तो चारित हम लेहिं यह चिंतन आई ज्वार। नाज समाज जहाज बहु भरि भरि आये द्वार ॥ भयो सुभिच्छ सुदेस सब सुखी भये नरनार। सांचि प्रतिग्या आपनी मन मैं करि निर धार ॥ चास्यौं पुत्र कलत्र जुत सो श्रावक

जिनदत्त । चारित लै संसार तजि साध भयो छदमत्त ॥ तिनकी साखा चारि तैं तीन गई बिच्छेद । एक रही तिन चारि मैं साखा इन्द्रसुबेद ॥ वैरस्वामि बज्र साध संग करिकै तप संथार । देह त्यागि गिरमूलतट लह्यो सुर्ग निरधार ॥ ग्रही रहे बज्र बर्ष अरु जती चवालिस बर्ष । छत्तिस गुरु पद पाय पुनि सुर्ग गये जुत हर्ष ॥ मनपरजाई ग्यान अरु अर्द्ध नराच संघैन । गये भये बिच्छेद ये तबही तैं जग ऐन ॥ चारि शिष्य तिन के भये तागिल पोमिल फेर । तापस श्रौर जयंत तैं साखा चारि सुहेर ॥ भद्रबाहु के चारि शिष एक थबिर गोदासु । अग्निदत्त पुनि जन्हदत सोमदत्त पुनि जासु ॥ भये थबिर गोदास के चारि शिष्य बर फेर । चारि साख तिन तैं चली इक तामलसी हेर ॥ दुतिय कोड़बरसी कही पंडबर्धना तीन । दासीपव्वडिका बहुर भूतबिजय गुरु पीन ॥ तिनके बारह शिष्य भये नंदभद्र तहं एक । भद्र कह्यो उपनंद पुनि तीसभद्र सबिबेक ॥ पांडभद्र जसभद्र अरु सुमनिभद्र कहि फेर । पूर्नथूल दोउभद्र जुत सयलमती पुनि हेर ॥ जंबूदीह सुभद्र पुनि सूरभद्र इहि नाम । भये बारहैं शिष्य ये इनको संख्य तमाम ॥ भई शिष्यनी सात पुनि भूतबिजयकी श्रौर । थूलभद्र को बहिन हैं ते सातौं इक ठौर ॥ जक्खाजक्ख दिनारु पुनि भूता भतदिना सु । सेना अरु बेना बहुर रतना सातौं पास ॥ थबिर महागिरि साध के आठ शिष्य पुनि जान । उत्तर बल सहधनढ पुनि कहिसि रिद्धि सन मान ॥ पुनि कौडिन्नरु नाग कहि नागमित्र पुनि जान । छलुक रोहगुप्त कहे आठौं शिष्य बखान ॥ अंतरंजिका नगर मैं थबिर महागिरि आय । तहां एक दंडी मिल्यौ अद्भुत भेष बनाय ॥ धरै कमंडल हाथ मैं दूजे हाथ कुदाल । कांधै अंकुस धरि चहत बाद कियो तिहिं काल ॥ दई महागिरि गुरु तबै रोहगुप्त कौं बोलि । जातैं उपजैं जीव ते बिद्या सात अतोलि ॥ बीछी मोररु सर्प पुनि नौल मूस मंजार । म्रग म्रगराज बराह अरु सारदूल निर धार ॥ घूघू कागहिं आदि दै जेजे जौनि नवीन । जो चाहै सोई बनै ऐसो बिद्या दीन ॥ राज

सभा मैं जाय पुनि रोहगुप्त तिहि काल। जीत्यौ दंडी सो तहां करि बिवाद के जाल॥ विद्या बाद चुक्यौ तबै कीनौं ग्यान बिचार। दंडीजीव अजीव द्वै कहै भेद बिस्तार॥ रोहगुप्त तब तीसरो तिन भाख्यो नोजीव। दंडी बोलो सो कहां अब लौं दरस न कीव। रोहगुप्त तब डोर इक बटि डारी भुव मांह। हिलन लगो सो डोर तब बलकेवल तिहिं ठांह॥ जुक्ति उक्ति सों बादकरि रोहगुप्त तिहिं काल। दंडी दियो हराय कै राजसभा मैं हाल॥ जीति जाय गुरु निकट जब भाख्यो सकल बिबाद। गुरु भाखी भगवन्त के बचन बिरुद्ध सुबाद॥ जद्यपि समझायो बहुत गुरु कुशिष्य पै सोय। नैक न समझ्यो कोपि गुरु तिरस्कास्यो तिहिं जोय॥ निकसी साख चिरासनी रोहगुप्त तैं जान। उत्तम बल-सह तैं भई चारि साख परमान॥ कोसबिका सुतबतिका कौडं-बानी जान। चंदनागरी चारि ये साखा संख्या मान॥ अब सुनि थबिर सुहस्त के बारह शिष्य प्रमान। रोहग अरु जसभद्र पुनि मेहगनित अरु जान॥ कामर्द्धी सुस्थित सुप्टत वड्डरु रच्छत जान। ईशगुप्त श्रीगुप्त तिम रोहिगुप्त परमान॥ गनितबंभ पुनि तिमि गनित सोम बारहैं धार। रोहन गच्छ उदेह ते छह कुल साखा चार॥ उदंबरीका एक अरु मासपूरिका जान। मतिपूरन जुत पचिका साख चारि परमान॥ नागभूति पहिले कह्यौ सोमभूति पुनि जान। उल्लगच्छ तीजो कह्यो हत्थलिज्ज पनिमान॥ नंदिद्या पुनि पांचवीं परि हासक छह खच्छ। हरि गोतो श्रीगुप्त तैं चारन नामा गच्छ॥ प्रगटे तातैं सात कुल साखा चारि प्रतच्छ। थविर भद्रजस तैं कह्यौ उड़वाड़क सुभ गच्छ॥ साख चारि अरु तीन कुल ताके प्रगटे फेर। एक भद्रजस नाम कुल भद्र-गुप्त पुनि हेर॥ तीजौ है जसभद्र पुनि चार्‍यौं साखा जान। चंपद्या भद्रजिका काकंदिका प्रमान॥ मिहिलजिका चौथी कही अब कामड्ढका तासु। गच्छ वेसवाटिक कह्यौ चारि चारि पुनि जासु॥ साखा अरु कुल नीपजे सावत्थिका तहं एक। राजपालका दूसरी अंतरंजिका टेक॥ चौथी खेम मलिद्यका एक गणित

कुल फेर। मेहक कामर्द्धक बज्जर इन्द्रमुरग पुनि हेर ॥ ईसगुप्त तैं पुनि भयो बरमानव गन गच्छ। चार साख कुल तीन पुनि तिनके भए प्रतच्छ ॥ कासवर्तिका गोतमी वासिष्ठित ए तीन। साखा चौथी सोरठी सुनि कुल तीन प्रवीन ॥ ऋषिगुप्त ऋषिदत्त पुनि अभिजयंत कुल स्वच्छ। सुस्थित सुप्रति बुद्ध तें भयो कोटि गन गच्छ ॥ चारि साख कुल चारि पुनि तातें प्रगटे जान। उच्चनागरी एक अरु विद्याधरी बखान ॥ तीजी वज्री मध्यमा चौथी साखा जान। ब्रह्मन एक बच्छल्य है वानिज तीजो जान ॥ प्रश्नवाहना तासु कौ चौथौ कुल पहिचान। येई चास्यों साख अरु चारों कुल परमान ॥ अरु सुस्थितप्रतिबद्ध के पांच सुशिष्य सुचाल। इन्द्रदिन्न प्रियग्रंथ अरु विद्याधर गोपाल ॥ अर्हद्दत्त ऋषिदत्त ये पांचौ शिष्य सुचाल। विद्याधर तैं साख पुनि विद्याधरी बिसाल ॥ इन्द्रदिन्न के शिष्य दिन तिनकें शिष पुनि दोय। संतसेन अरु सीहगिरि संतसेन तैं सोय ॥ उच्चनागरी नाम तहं साखा निकसी जान। संतसेन हूं तैं भये चारि शिष्य पहिचान ॥ आर्जसेनता पद्म अरु थविर कुबेर बखान। ऋषिपाली चौथे यही साखा चारि प्रमान ॥ इनही चारौं नाम तैं साखा चारि बखान। थविर सीहगिर के भये धनगिरि शिष्य प्रधान ॥ वैरस्वामि दूजे भये सुमतिसूर पुनि जान। और अरहद्दिन सुमति पुनि गोतम गोती मान ॥ तिनके शिष तापस भये तिन तैं निकसी साख। ब्रह्म दीपका नाम जिहिं जाको जग में साख ॥ ब्रह्मदीपवासी तहां तापस आयो एक। पानी पर गति जासु की ऐसी देखि विसेक ॥ नगर लोक श्रावक सकल भए तासु के दास। एक वृद्ध श्रावक रह्यो गयो सुमनि गुरु पास ॥ तापस की करनी कही गुरु सुनि कह्यो सुनाय। नहीं तपस्या शक्ति यह लेप शक्ति सुनि भाय ॥ सुनि सो तापस को भयो कपट शिष्य घरल्याय। चरनोदक ताको लियो धोय वारि तैं पाय ॥ पुनि जल पर चालन कह्यो तपसिहिं बिनय सुनाय। पैठि बार बूड़न लग्यो कर गहि लियो बचाय ॥ तब गुरु हूं तहां आय कै उतरन चाह्यो बार। नदी फाटि

मारग दियो गये बार तैं पार॥ ऐसो अचरज देखि सब भये शिष्य करि प्रीत। तापस सो यल तजि भज्यो भयो भरि भय भीत॥ वैरस्वामि के और पुनि तीन शिष्य त्रय साख। बज्रसेन अरु पद्म पुनि आरजरथ सुभ साख॥ आरजरथ के पूसगिर तिनके थविर न छत्र। तिनके रच्छित शिष्य पुनि तिनके नागल तत्र॥ तिनहूं के जेहल भये तिनके बिस्नु वखान। तिनहूं के कालिक भये तिनके द्वै शिष मान॥ इक संपति तैं भद्र पुनि तिन के सेवक इद्ध। संघपालि तिनके भये तिनके हस्त सुसिद्ध॥ तिनके धर्म रु धर्म के संडलसूर बखान। फल्गुमित्र तिनके भये गोतम गोती जान॥ धनगिर गोत वशिष्ट है कालिक गोतम गोत। गोतम गोती सोहगिर बिस्न माढरो गोत॥ हस्ति सूर अरु धर्मप्रिय जंबूनंद सुप्रीय। काश्यप गोती ये कहे चास्यों उत्तम जीय॥ छमा श्रमन पुनि देस गनि माठर गोत बखान। बच्छस गोती थिर गुपत धर्मकुमार सुजान॥ देवढ़गनि सिद्धांत जिन राख्यो जात बिछेद। इन सब साधन कों करौं बंदन तजि मन खेद॥ पुनि साखा बिद्याधरी तामैं बादी एक। इद्ध तासु कौ शिष्य पुनि सिद्धसेन सबिबेक॥ भये दिवाकर जिन कियो स्तत्र मंदिर कल्यान। जिन पर बोंधे बोध दै बिक्रम न्रपति सुजान॥ महावीर तैं चारसै सत्तर बरस बितीत। भये भये ते थविर जिन लही जनम को जीत॥ बरस पांचसै अरु असी पांच औरहूं सोय। बिक्रम तैं हरिभद्र मुनि सूर भये पुनि जोय॥ फेर शिष्य तिनके भये हंस और परहंस। जैनागम गुरु तैं सबै पढ़े जोग परसंस॥ पुनि छल करिकै भेष धरि बोधन कौं तिहिं काल। जाय देस तिनके पढ़ी तिनकी बिद्या हाल॥ सो बोधन जान्यो कपट लहि भाजे तजि देस। मग मैं पाछै आय उन मारे करि निःसेस॥ गुरु सुनि कोपे कोपि पुनि कीनी छमा छमाल। मानतुंग आचार्ज पुनि प्रगटे तेही काल॥ जिन भक्तामर तवन बर कस्यौ हस्यौ अग्यान। बरस आठसै तब गये बिक्रम न्रप तैं जान॥ पादलिप्त आचार्ज हूं भये तिही दिन आय। पगलेपन करि करत जे तीरथ पंच बनाय॥ तीन कालकाचार्ज

पुनि भये थबिर गन मांह। प्रथक प्रथक तिनकी कथा सुनिये अति दुति छांह॥ प्रथम कालिकाचार्ज के शिष्य प्रमादी होय। गुरु अग्या मानी नहीं गुरु तजि गये बिगोय॥ आन देस मैं शिष्य इक सागर चन्द्र सुजान। तहां गये गुरु तिनऊ नहिं जाने गुरु पहिचान॥ बाद कियो करि हारि पुनि जान्यो बड़ो प्रभाव। पाछे तैं सब शिष्य तहं पऊंचे ढूंढत पाव। तब उन हूं पहिचानि कैं सब मिलि पकरे पाय। चूक आपनी मानि कै लीने दोष खिमाय॥ एक समै सुरपति सुन्यो सीमंधर उपदेस। सुनि पूछ्यो ऐसो कोऊ सुख्य भरतथल देस॥ दियो कालिकाचार्ज तब सीमंधर बतलाय। इन्द्रहृद्ध वपु धरि तहां पऊंच्यो करि चितचाय॥ आय पूछि संदेह सब पाय यथारथ ज्वाब। मुदित होय आनंद अति ओपी आनन आब॥ पुनि पूछी निज आरबल सुरपति हाथ दिखाय। द्वै सागर की जानि कहि सुर पति दियो बताय॥ तब सुरपति निज रूप धरि प्रगट होय गुरु पास। मांगि सीख तहं तैं गयो अपने सुरपुर बास॥ महाबीर जिननाथ तैं सवा-तीनसै वर्ष। प्रथम कालिकाचार्ज मुनि जग मैं भये सहर्ष॥ दुतिय कालिका चार्ज अब तिनकौ सुनौ बखान। वैरिसिंघ नर-पति निपुन मालव देस निधान॥ ताकौ सुत कालिककुंअर सुता सरसुती जान। कुंअर पधास्यो एक दिन बन खेलन चौगान॥ स्रमित होय बनतैं कियो उपबन मैं बिस्राम। तरु छाया तर स्रांत ह्वै सकल निवारी घाम॥ करत बखान तहां सुने गुनकर-सूर सुजान। सुन उपदेस बिरक्त ह्वै चारित लियो निदान॥ बहिन सरसुती हूं लियो तदनंतर चारित्र। कुंअरै जान्यो जोग गुरु दीनौ पाट पवित्र॥ ते क्रम करि बिहरन गयो पुरी उजैनी मांहि। गर्द्द भिल्ल राजा जहां राज करै छबि छांहि॥ गई सुर-सुती साधवी बिहरन नरपति गेह। रूपवती तिहिं देख नृप मोह्यो बढ्यो सनेह॥ ताहि घेर घर मांहि नृप बाहर दई न जान। जदपि बऊत उपदेस गुरु समझायो दै ग्यान॥ गुरु मन मारि बिचारि चित हारि क्रोध संघारि। गच्छ भार दै सिष्यशिर

धरि अवधूत सिंगार ॥ सिंधदेस चलि कैं गये साखी नृप कै राज । तुरक बादश्याही करै तहं राजन सिरताज ॥ साखी नृप सुत खेल कौ मनिमै कंचन दंड । गिस्यो कूप मैं गुरु तहां लीनौ कर कोदंड ॥ धनुविद्या करि गुरु तहां बान बान सौं सांधि । काढि दियो ता कूप तैं दंड बान सौं बांधि ॥ नृप सुनि गुन गुरु नाथ के महिमा कीनी भूर । बिपुलमान सनमान करि राखे आप हजूर ॥ काहू एक संजोग करि नृप पै कोप्यो साह । परवानौ पढ़ि समझि तिहिं अति डरप्यो नरनाह ॥ सोच ग्रस्त लखि नृपहिं गुरु पूछ्यो अंतर भेद । साह लिख्यो सो सब कह्यौ अपने मन कौ खेद ॥ अपनौ सिर दै भेजि कै त्यागि देहि यह देस । नातौ मारौं जनसहित सुनि गुरु यह संदेस ॥ धीरज दै नृप सौं कह्यौ नैक न करि संकोच । पुरी उजैनी राज तुहिं देऊं लेहु तजि सोच ॥ यह कहि जोरि अनीक गुरु चढ़े नृपहिं लै संग । मारग मैं ग्रीषम बदलि बरखा कीनो रंग ॥ धर परसौहैं घन भये भार बरसौहैं मेह । घर दरसौहैं पथिकदृग करि सरसौहैं नेह ॥ घिरि घुमड़ि घन घोर घर रैन द्योस कौ ग्यान । कुमुद कमल तैं पाइयत कै चकवी चकवान ॥ झपकि झपकि झमकै झरी लपकि लपकि लपि बीज । टपकि टपकि ओलो करै छपकि छपकि मग भीज ॥ दंपति अंक निसंक भरि लूटत धन ज्यौं रंक । माननि तज्यौ अतंक अरु मारग छायो पंक ॥ मारग रित अवरोध तैं नृपति रहे तहं छाय । भई छावनी कटक की रितु सुहावनी पाय ॥ चतुरमास बीत्यौ जबै सरद आगमन आय । अमल अभ्र आकाश ह्वै मारग दियो बताय ॥ तऊ कटक बिन धन नहीं चल्यौ रह्यो तहं छाय । तब कालिक गुरु जान यह कीनौ पौन उपाय ॥ करि सुदृष्ट की दृष्ट तैं सब ईंटका पजाय । करि दीने सुबरन मई छुई रिद्ध निधि आय ॥ साजि बाज गज राज बर संगर साजि निनाद । जुरे जंग दुहुं ओर तैं मुरे न समर बिवाद ॥ मची घुमड़ि घमसान अति बचो न एकौ मार । तोप तीर तरवार के बार भये तन पार ॥ रुधिर नदिन के परतैं

भरे कूप सर कुंड । जामैं जलचर ज्यौं जगे रुंड भुंड गज सुंड ॥ भाज्यौ गर्द्दभसेन भजि गह्यो कोटकी वोट । परन लगी ता कोट पर सकल कटक की चोट ॥ साधी बिद्या गर्द्दभी गर्द्दभसेन बनाय । सो लखिलीनी ग्यानबल गुरुस्वामी सुखदाय ॥ बोलिएकसौ आठ भट सबद बेध जिहिं साख । रह्यो घातकरि सकल मिलि यौं तिनसौं गुरु भाख ॥ कह्यौ जबै सो गर्द्दभी सबद करै मुख फार । सब मिलि त्यागौ बान तुम सबद रोध अनुसार ॥ त्यौंही कीनौ सबन मिलि गई गर्द्दभी भाग । गर्द्दभन्टप मुख पैकियो गधीमूत्र मल त्याग ॥ बांधि लियो गर्द्दभ न्टपति दुर्ग तोरि तिहिं काल । जीव दया पुनि पालितिहिं दीनौ देस निकाल ॥ गुरु साखी न्टप कौं दियो नगर उजैनो राज । सरसुति बहिनहि पुनि दई दिच्छा तिन मुनि राज ॥ दुतियकालिका चार्ज कौ कह्यौ इतौ परभाव । त्रितिय कालिका चार्ज गुन कहिवे कौ अब दाव ॥ त्रितिय कालिका चार्ज तें क्रम करि करत बिहार । आये भरवच नगर जहं भानुमित्र सिरदार ॥ सो गुरु कौ भानेज अरु बालमित्र तिन जान । गुरु आगम महिमा महत कियो मान सनमान ॥ अति आग्रह करि गुरु चरन राखे भर चौमास । पै ताकौं बिहरैं नहीं ते गुरु परम उदास ॥ तातैं न्टप दुख पाय निज प्रोहित लियो बुलाय । तासौं सब मन की कथा दीनी बिथा सुनाय ॥ तब प्रोहित न्टप सौं कह्यौ सब स्राव-कौं बुलाय । देऊ बिबिधि भोजन जहां सुनि बर बिहरैं जाय ॥ त्यौंहीं कीनो न्टप सकल स्रावक लीने बोल । भोजन नाना भांति के दीने तिनहिं अतोल ॥ तिन घर गुर के शिष्य सब नित बिहरैं सब जाय । नाना बिधि मिष्ठान सब लावैं आवैं खाय ॥ तब गुरु पूछी नित्य प्रति कौन देत मिष्टान । नित कारन घर कौन के शिष्यन कह्यो निदान ॥ हम कछु जानैं नाहि प्रभु आज पूछि सब बात । आय निवेदैं आपके चरन मांहि सो प्रात ॥ दूजै दिन शिष्यन सकल पूछी समझि वृत्तान्त । कह्यो आय गुरु सौं सकल सुन्यो शांत प्रभु दांत ॥ राज पिंड अनुचित लख्यौ बिनुही भाखे सोय । थल तजि कियो बिहार तहं पुर पठान है जोय ॥ जहैं

सालवाहन नृपति श्रावक धर्मी बास । भयो पजूसन पर्व सित पंचमि भादौं मास ॥ इंद्र महोच्छौ हूं तहां ताही दिन बिवहार। तो [illegible]यो गुरु सौं नृपति कीजै कौन बिचार ॥ पोस करौं तौ लोकचित रहै न लोक प्रचार । करौं रहै नहिं पोस बिधि करौं कौन आचार ॥ इंद्रमहोछौ पंचमी छठकौं पोसहि धार । रहौं होय जो आपकी अग्या यों निरधार ॥ तब भाखी गुरु होय नहिं यह क्योंहूं करि जोय । अधिक पंचमी दिवस तैं पर्व पजूसन सोय ॥ तब नृप भाखी होय जो अग्या प्रभु की आज । चौथ तुतिय पोसह करौं कालि महोछौ साज ॥ यह सुनि गुरु राजी भये दीनी अग्या मान । थापी ताही दिवस तैं चौथ पजूसन जान ॥ सात ऊन दस सौ बरस महाबीर तैं जोय । बीते प्रगटे कालिका चारज जग मैं सोय ॥ भई आठवीं बाचना संपूरन यह जान । समाचारि की बाचना नवमी सुनौ निदान ॥

अथ नवमी बाचना ॥

कहियत नवमी बाचना अब सब सो सुनि येह । साध समाचारी सकल अट्ठाइस गनि लेह ॥ खानपान संचार अरु रहनि बहनि है आदि । अनुचित उचित बिचार सौं जेते बिवहारादि ॥ चतुरमास बरसात मैं क्रिया बिबेक बिचार । सदाचार जे साध के समाचार निरधार ॥ बरषा रितु आरंभ मैं छाड़ि सकल आरंभ । चारि मास के नेम गहि साध अलोभ अदंभ ॥ रहै एक थल माहिं कौं मिति अहार बिवहार । सो थल तिनके हित सनै ग्रहवासी साचार । स्वच्छ सुद्ध दृढ़ भूमि करि लीपि पोति धवलाय । छात छैानि चिन छान करि छाय बिछौनि बिछाय ॥ नाल प्रनालन की निपट सुचि करि गच ढरवाय । साध साधवी कौं ग्रही ऐसैं थल पधराय ॥ रहै साध तिहि स्वच्छ थल भर चौमासा छाय । सुमन सुबच सुभ कर्म कौं स्वच्छ सुसील सुभाय ॥ तहां प्रथम इक मास पर जब बीतै दिन बीस । भादौं सुकल पंचमी सकल तियन मनि सीस ॥ आसाढी पून्यौं हि तैं दिन पचासवैं जोय । बढ़ै न तामैं एक दिन घटै तो घटती होय ।

ता दिन पर्व पजूसना महाबीर जिन कीन । गौतमादि गनधरन हू त्यौंही कियो प्रबीन ॥ त्यौं शिष्यन आचारजन थविरन हूं मिलि सर्ब । उपाध्याय कीनौ करैं त्यौं हमहूं सो पर्व ॥

अथ दूजी समा चारी ॥

औखध अरु आहार हित गमना गमन विचार । सब दिस ढाई कोस मिति साधन कौं संचार ॥ पै निस अपने ठौरहीं आय रहैं सो साध । आन ठांउं निसि बसि रहन होत साध कौं बाध ॥

अथ त्रतिय समाचारी ॥

बहैं निरंतर जो नदी जल सब काल प्रवाह । साध गमन आगमन तहं अति अनुचित अवगाह ॥ होय जानु तैं हेठ जल तिहिं सरिता मैं सोय । वगपगडगमग मांहिं जिम अध ऊरध गति जोय ॥ ऐसैं जो जन चलि सकै सूधो पाय उठाय । अल्प अंभ मैं साध यौं जाय सकैं तौ जाय ॥

अथ चतुर्थ समाचारी ॥

ऋजुजड अरु जडवक्र जे दोय भांति के साध । तिनसौं गुरु जिहिं बिधि कह्यो तिहिं बिधि बाढि उपाध ॥ ग्लान साध आहार अरु ओषध हिततजि बास । अथवा निज आहार हित विहरै ग्रहपति पास ॥ गुरु निदेश तैं तनकहू घटबढ़ चहै न सोय । लैनदैन अनुचित उचित गुरु वचनन तैं होय ॥ ग्लान साध निज हित बिहरि बिहराबन बिवहार । गुरु निदेश तैं तनकहूं न्यूनाधिक न बिचार ॥

अथ पंचम समाचारी ॥

तरुन समर्थ अरोग जे साध तिन्हैं दूहिं काल । बरषा मैं बरजे इते नवरस गुरु वच पाल ॥ दूध दही नवनीत घ्रत तिल गुड़ मधु मद मांस । साध खान मैं उचित नहिं जौं लौं तन मैं सांस ॥

अथ छठी समाचारी ॥

ग्लान दुखी हित साध जो ग्रही गेह चलि जाय । लेइ तितोई जो कहै रोगी अरु जो खाय ॥ जदपि ग्रही दे अधिक अरु कहै जती तुम लेऊ । उबरै तौ तुम बिहरियो अथवा औरन देऊ ॥

तऊ उचित नहिं साधकौं लैनौं अधिक अहार । ग्लानसाध हितहुं न लै बिना कहै ग्रहधार ॥

अथ सातवीं समाचारी ॥

थविर कल्पि श्रावक सुखद साध सेव परबीन । चौरासी गछ तास मैं भेद न मानै दीन ॥ सब साधन सौं यौं कहै जो चाहो सो लेऊ । तदपि अनलखी बस्तु कौं कहै न तिनसौं देऊ ॥ अति उदार दातार घर जो न होय सो बस्त । कष्ट होय दीवो चहै जिंह किंह भांति ग्रहस्त ॥ पै जो अनदेखी चहै बस्तु छपन पै जाय । तौ कछु तैसौ दोष नहिं जैसौ कह्यो सुनाय ॥

अथ आठवीं समाचारी ॥

प्रति दिन लेत अहार जो साध निरन्तर कोय । एकै बार ग्रहस्त घरकरै गोचरी सोय ॥ पाधा तपी अचार जरु ग्लान बाल हित जोय । ग्रही गेह द्वै बारहूं जाय न अनुचित होय ॥ ब्रतीइकंतर जो जती ताहि गोचरी हेत । अनुचित नहिंद्वै बार जौ जाय ग्रही ग्रह खेत ॥ एकै विहरन मांहिं सो जो जानै संतोष । धोय पोंछि कै पाच फिर चहै न जाचन दोष ॥ नाहीं तो ते पाच सब अनधोये ही फेर । लै ग्रहस्त घर जाय कै जाचै दूजी बेर ॥ द्वै उपास साधन करै जे पारन दिन सोय । दोय बेर जाचै तऊ अनुचित तिन्हैं न होय ॥ साधक तीन उपास के ग्रही गेह त्रय बार । जाचै तो अनुचित नही एही क्रम निरधार ॥ पांच सात दिन पाख के बास करैं जे कोय । तिन्हैं नेम नहिं जब चहै चहैं ग्रही घर सोय ॥ पै मद माया कोप अरु लोभ मान तजि साध । ग्रही गेह मैं गोचरी बिधवत करै अबाध ॥

अथ नवमीं समाचारी ॥

नित मितभोजी साधकौं-सब बिधि कौ जो बार । बिधवत लै अनुचित नहीं यों भाख्यौ निरधार ॥ एकांतर बासी जती त्रय बिधि कौ जल लेय । करधोवन अरु पाच कौ सात मांड़ पुनि जेय ॥ तिल तुस जव धोबन सलिल तीन भाँति कौ जोय । दोट उपासी साध कौं उचित कहावै सोय ॥ तीन उपासी साध कौं तीन भांति कौ

बार। कांजी मांडरु उष्णजल पीवै उचित विचार ॥ तीनवास तैं अधिक तप करै जहां लौं साध। तिनहूं कौं केवल उचित उष्णोद-कै अबाध ॥ सीत चिकनई रहित जल तीन उबालि उबालि। तीनबार तिहिं छानि पुनि स्वच्छ पात्र मैं ढालि ॥ अधिक नून-ता करि रहित मित जल ऐसो जोय। साध यमी नियमी ब्रती इहि विधि साधै सोय ॥

अथ दसमी समाचारी ॥

ग्रही जती के पात्र मैं दे अहार तिहिं काल। कौर गिरै कौ गीत इक दात नाम सो हाल ॥ ऐसे जौलौं पात्र मैं टूटै नाहिं जल धार। एक बूंद वा घूंट इक सो जल दात विचार ॥ भोजन जल के दात को नेम करै नित साध। चार पांच तैं अधिक नहिं अन्नजल दात अबाध ॥ नेम करै तेतो चहै न्यून अधिक नहिं होय। भूख रहै तो साध फिर जाय न जाचन सोय ॥

अथ ग्यारहवीं समाचारी ॥

बिवाहादि सुभ काज मैं जहां मिलैं नरनारि। भीड होय तासों कहैं संखड नाम बिचारि ॥ सो संखड पोसाल तैं सात सदन के मांहि। होय जहां तो तिहि सदन उचित न साधै जांहि ॥

अथ बारहवीं समाचारी ॥

जिन कल्पी कर पातरी साध मेह के मांहि। उचित नहीं आहार हित ग्रही गेह तें जांहि ॥ गमनांतर अथवा तहां विहरनसमै अहार। जो बरसै बरसात मैं न्हानी बड़ी फुहार ॥ कांख कूख तर हाथ सौं ढांपि अहार छिपाय। छानि छात छित रुहतरै जाय बचाय सुखाय ॥ थविर कल्पि जे पात्र धर ते बरखा रितु मांहिं। कामरि चादर ओटि ते अल्प दृष्टि मैं जांहिं ॥ ग्रही गेह मैं पहुंचि जो बरसत खुलै न मेह। तहां न रहनौ साधकौ उचित बिना संदेह ॥ आनथानवा वृच्छ तर वा अपने थल आय। रहै रहै नहिं पै तहां साध ग्रही ग्रह छाय ॥ जो कदाचि थित थान मैं करै रसोई कोय। अरु बिहरावै

साध कौं प्रीत पूरवक सोय ॥ साध पहुंचि पहिलैं जितौ जो अन सीझ्यौ होय। सोई बिहरे अरु न ले पाछैं सोझ्यौ सोय ॥ अरु जौ बिहरनकाल मैं खुलै न क्यौंहूं मेह। पच्छर पाछलैं जाय कै खाय तहां पुनि तेह ॥ धोय पोंछि कै पात्र तब रबि रहतें घर आय। रहै रहै नहिं रात तहं ग्रहीगेह मैं छाय ॥

अथ तेरहवीं समाचारी ॥

मेह अछेह न देह जौ जान साध कौं आय। ग्रहीगेह तें तौ तहां ठाढ़ौ रहै सुभाय ॥ एक साध इक साध्वी कौ है कै इक होय। त्योंही साधरु श्राविका मिलि नहिं ठाढ़े होय ॥ संगबाल वा बालिका जऊ पांचवौं होय। तऊ एक थल मिलि रहन अनुचित जानौ सोय ॥ जौ वा घर के द्वार बहुत अरु बहु नरकी दीठ। निकट वृद्ध वृद्धा किधौं तौ नहिं अनुचित डीठ ॥ पै तिहिं घर निसि नहिं बसै उठआवै निज गेह। सांझ समय लौं राह लखि बरसैं मेह अछेह ॥

अथ चौदहवीं समाचारी ॥

खान पान खादिम अशन चारि भांति आहार। आन साव हित हेत जो साधै साध बिहार ॥ ताकी रुचि पहिचानिकै पूछि सुभाव बिचार। तातैं अधिक न जन सो बिहरै साध अहार ॥

अथ पन्द्रहीं समाचारी ॥

तन कौ तनके अंग सब जौं जल भीजे होय। भोजन चास्यो भांति कौ साध न कल्पै कोय ॥ तिन मैं तन मैं सातये अंगप्राय जहं बार। चिर थिर रहि नहिं सूकई ताकौ अधिक बिचार ॥ कर काररेखा दोय ये नख नख सिखा सुचार। भौंह अधर अरु वोठ ये सातौं जल आधार ॥

अथ सोलहीं समाचारी ॥

प्रान नील बीजरु हरित फूल अण्डज ये नेह। उबरं तेजबारि ये आठौं सूछम देह ॥ प्रान जीव सूछम जिते बिंद्री तिंद्री देह। पांच रंगके जिन कहे ते अब सब सुनि लेह ॥ नील पीत सित श्याम अरु अरुन बरन बपु जोय। तिनमैं सूछम कन्थुआ उबरे जायनसोय ॥

बालन श्रालन तासु कौं नजर न श्रावै कोय। ग्यानदीठ लहि नजर लखि साध उधारै सोय ॥ पाच श्रादि उपगरन सब याते बार-बार। श्रारि पोंछि पडलेह हरि राखे साध बिचार ॥ नील सूछ-मी जीव सब त्यौंही पचरंग जान। पडलेहै उपगरन सब जैनी धरम निधान ॥ त्यौं श्रन्नादिक बीजमैं सब रंग सूछम जीय। जानि ग्यान दृग साध तिहि लहि पडलेहन कीय ॥ हरित जीव सूछम जिते पचरंग भुवरंग होय। तिनहूं तै उगरन सबन पडलेहन सुभ सोय ॥ फूल जीव सूछम सकल पचरंग हूं तिहि रीत। उपगरनादिक थल सकल पडलेहै करि प्रीत ॥ पुनि पिपीलिका श्रादि के सूछम श्रंड जितेक। तिनहूं तैं पडलेहिये उपगरनादि तितेक ॥ लैन सूछमी जीव जे भवमैं करैं निवास। तिनहूं तैं पडलेहिये पाचवास श्ररु बास ॥ नेह जीव सूछम कहे हिमकर काहल श्रोस। इनतैं पडलेहन बिना लगत जैन मत दोस ॥ सुमत पांच जे जिन कही तामें इर्या एक। मग पग धरिबे मांहि जो रच्छा जीव बिबेक ॥ साध एक बरदत्त तिहिं इर्या सुमति पिछानि। लेन परिच्छा सुरग तें सुर श्रायो इक जानि ॥ द्वै उपजाई मेडकी पग मग श्रागमन श्राय। पाछैं द्वै गज होय कैं प्रेरन कीनै धाय ॥ करिन पकरि कर सौं लयो साध उठाय श्रकास। फिर भुव पटक्यो तउ न सो भूल्यो जीव बिनास ॥ तब मन में परनाम लहि सो सुर सिर पग नाय। गयो श्रापने सदन कौं सब श्रपराध खिमाय ॥ सुमत दूसरी जिन कही भाखा सुमति बखान। बाक बिबेक बिचार जिहिं भाषत सुमति सुजान ॥ तहां एक दृष्टांत नृप पुर घेरयो रिपु श्राय। साध एक तिहिं नगर तैं बाहर निकस्यो धाय ॥ कटक लोग तासौं लगे पूछन सुनो सुजान। या पुर मैं केतिक कटक हमसौं कहो बखान ॥ सुनि मन श्रनुचित जानकै बोलनि बोल्यो सोय। कटक सुभट पूछ्यो जिनन तिनके सनमुख होय ॥ सुननहार देखत नहीं लखैं सुनैं नहिं तेह। सुनैं लखैं बोलैं न ते कहि गुप कियो श्रछेह ॥ जानि बावरो ताहि तब लोगन तज्यो निदान। बाक बिबेकी साध को भाषा

सुमति पिछान ॥ तीजो कहिये ईषणा साध भक्ति चितधार। षिन
जिनके मन सहि रहै सुमति ईषणा सार ॥ नंदषेन द्विज सुवन
तिन साध समागम पाय। चारित लै तप आदस्यौ अमर एक तहं
आय ॥ लैन परिच्छा साधकी मन मैं कपट बढाय। साधरूप
अनुरूप तिन धरे देह द्वै चाय ॥ इक रोगी बनि रहि तहां
दूजहिं प्रेस्यौ जाय। कही बात नंदषेन सौं ताकी बिथा सुनाय ॥
सो सुनि संग अहार लै बन मैं पहुच्यौ जाय। धरि सनमुख सो
साध कौं बोल्यौ बिनय सुनाय ॥ पूज नगर मैं आइये सेवा नीकैं
होय। उन भाखी सो पग न मग सकैं चलन गति खोय ॥ नंद-
षेन सो साध तब लीनौं कंध चढाय। मारग मैं मल मूत करि
दीनौ ताहि न्हवाय ॥ नंदषेन मन तनक हूं मान्यौ नाहि
सुखेद। तन मैं चंदन लेप तैं जान्यौ आन न भेद ॥ धन्य भाग्य निज
जानि अरु तन पवित्र अनुमान। अमर ग्यान करि जानि धरि
दिव्यरूप सुखदान ॥ नंदषेन के पाय परि सब अपराध खिमाय।
जस गावत आवत चल्यौ सुर पुर पहुच्यौ जाय ॥ चौथी सुमति
निखेवनी वधन सहत प्रतिकूल। करी साध पडलेह पै गयो
समय तहां भूल ॥ जब घन तैं निकस्यौ लस्यौ रवि तव जानो
चूक। फिरि पडलेहन शिष्य कौं कह्यौ पूज नै कूक ॥ शिष्यवक्र
बोल्यौ कहा झोली मैं हैं सांपि। सुनि सहि चुप रहि मौन
गहि रहे ओठ मुख ढांपि ॥ शिष्य गोचरी हेत जब झोली लई
उठाय। दोय सांप तामैं लखे रह्यौ चकित भै पाय ॥ करन गुरन
के बचनकौं सांचौ सासन देव। झोली मैं द्वै अहि असित उप-
जाये तब खेव ॥ पस्यौ पाय गुरुराय कैं बार बार पछताय।
अति दीनता दिखायकैं लीने दोष खिमाय ॥ अब उच्चार सुपा-
सवन सुमति पांचवीं जोय। भेद न चौथी सुमति तैं होय तु
किंचित होय ॥ सुव्रत नाम गुरु शिष्य सौं पात्र मारजन हेत।
कह्यौ सह्यौ नहिं तिन कह्यौ उलटि निपट अनुचेत ॥ नित प्रति
कैसौ मारजन कहा ऊंट ढकजोय। गुरु गुरुता करि सुनि रहे
सासन सुर लहि सोय ॥ ऊंट बुलायो पात्र मैं गुरु बच सत्य

निमित्त। शिष्य देखि भय पायकै गुरु महिमां धरि चित्त॥ पांच सुमति येई कही साध साधवी जोय। तिन्हैं उचित ऐसी रहनि सहनि चहनि बरसोय॥

अथ सत्तरहीं समाचारी॥

साध गोचरी कै लियै ग्रही गेह जौ जाय। बिन अग्या गुरुजनन के कोहू जाय न आय॥ दिछा गुरु बय गुरु बङर विद्यागुरु जे होय। तिनको बिधि सौं जाय अरु नहिं तौं जाय न सोय॥ उचितरु अनुचित साध के सब जानैं गुरुदेव। यातैं तिनके बिनु कहैं चहै न एकौ टेव॥ खानपान जपतप सकल मलमूचादिक कर्म। जैसो जिहिं थल काल जो तितो कहै गुरु मर्म॥

अथ अठारहीं समाचारी॥

खानपान मलमूच कै तप दरसन के हेत। अनत गमन चाहै कियो साध तजै निज खेत॥ आन साध थल माहिं जो पाछे रहै निदान। ताहि सौंपि उपगरन सब पाछैं करै पयान॥ जौ पूनो घट पाच दै आदि अनेरी वस्त। कहै अनेरे साध सौं रहियो लखत समस्त॥ जब वह भाखै बैन करि हम लखिहैं तुम जाउ। तब अपनै थल तजि कहू जाय न आन उपाउ॥

अथ उन्नीसवीं समाचारी॥

चौकी पीढा तखत जे आसनादि तिहिं साध। ग्रही साध अग्या बिना बर्तै नही अबाध॥ बर्तै तासौं पूछिकैं जाकी है सो बस्त। झाडैं पोछैं धूपदै राखै ताहि समस्त॥ बिन पडलेहैं जौ पडैं खटमल आदिक जीव। त्यौंत्यौं संजम नहिं पलै लागै दोष अतीव॥ यातैं नाहीं अति बडे नहिं अति छोटे लेय। तखत आदि पडलेहि ये रुहजें मांही जेय॥

अथ बीसवीं समाचारी॥

मल मूचादिक त्याग कौ चतुर मास मैं साध। नेमकरैं थल कौ तहां निसदिन मांहि अबाध॥ तीनतीन मंडल करै स्वच्छ भमि दिन देखि। तहं त्यागै मल मच कफ साध साधवी लेख॥

अथ इकीसवीं समाचारी ॥

साध साधवी मूत्रमल कफत्यागन कै काज। तीन पात्र राखै निकट अपने अपने साज ॥

अथ बाईसवी समाचारी

साध शीस गोलोम कै मान न राखैं केस। रहैं लोचकीने सदा यही जती कौ भेस ॥ जो न सकैं तो मास प्रति कतरैं प्रतिद्वै-मास। मुंडन करि छहमास प्रति करैं लोच आयास ॥ छठैं मास हू जो जती सकैं न करने लोच। करैं अवश्य पजूसना माहिं लोच तजि सोच ॥

अथ तेईसवीं समाचारी ॥

रोस न राखै साध मन भखै न बोल कुबोल। क्रोध विरोध करै न कछु काहू सौं अनडोल ॥ जो कौनऊ संजोग करि काहू सों दुख पाय। रोस आन उपजै तऊ तातैं लेइ खिमाय ॥ बा-रहमासरु दुगुन पख दिवस तीन सै साठ। कह्यौ सुन्यौ कीन्यौ जु कछु होय दोष कौ ठाठ ॥ सो सब अपनी चूक कहि सबसौं द्वै कर जोरि। करि निहोर सिर ढोरि कैं लै खिमाय निज खोर ॥ भादौं सुकला पंचमी तदनंतर जो कोय। साध साधवी श्राविका श्रावक जिन मत होय ॥ तजै न मनवचकाय तैं क्रोध विरोध विचार। अनाचारि तासौं कहैं तजि तासौं विवहार ॥ जैसैं चंड प्रद्योत तैं उद्दायन नरराय। खिमत खामना रीति करि लीने दोष खिमाय ॥ सो अब कछु संछेप करि बरनो सुनिये सोय। स्वर्ननंदि सोनार इक चंपापुर मैं होय ॥ तिय ताकैं सौ पांच सो अति तियलोलप जान। हास प्रहास देवि तिहिं दई दिखाई आन ॥ सो मोह्यो लखि ताहि तिन कह्यौ चहै जो मोहि। द्वीप पंच सैली तहां ऐहौ मिलिहौं तोहि ॥ यह कहि चहि दृगकोर तैं निज पुर गई सुनार। बढ्यो बिरह ताकैं बिपुल सुबरननंदि सुनार ॥ बहु धन दे बहु बिनय करि इद्द मलाहिक प्राय। चल्यौ नाव चढ़ि चाव सौं बिरह घाव हिय छाय ॥ मधि जल निधि बट इच्छुतट टटन लगी सनाव। चल्यो साख गहि

वृच्छ पर स्वर्नकार लहि दाव ॥ पंछी एक लख्यो तहां जिहि भारंडव नाम। ताके पग गहि रहिगयो सो लै उड्यो उदाम ॥ द्वीप पंच सैली तहां उतर्यो चोगाहेत। स्वर्ननंदि तब ताहि तजि ढूंढ्यो तिया निकेत ॥ हास प्रहासा तहं लखी तिन भाख्यौ सुन मूढ। हैं देवी तूं मनुज यह बनै संजोग न गूढ ॥ जौ तूं जरि मरि फिरि इहां होय देवता रूप। तौ तो सौं मो सों बनै जोग भोगगुन भूप ॥ तब उन भाख्यो हे प्रिये सकौं न निज घर जाय। देवी तब ताकौं दियो चंपापुर पहुंचाय ॥ तहां जाय तिन बिरहवस चह्यो जरावन देह। नागल नामा मित्र तब तिहिं बरज्यो करि नेह ॥ तऊ न कामी कामबस नैकौं मानी सीख। बिरहभाल उरसाल ह्वै मन मैं लागी तीख ॥ सब तन बस्त्र लपेटि अरु तामैं भिजै सनेह। पंचसैलि मैं सुर भयो मर्यो जारि सब देह ॥ नागल स्रावक हूं मर्यो मन सुभध्यान लगाय। भयो देव सुरलोक मैं सिगरे सोक मिटाय ॥ इंद्रसभा मैं एक दिन नृत्यनाट्य कौ डौल। स्वर्नकार सुर कै गरै देवन डार्यो ढोल ॥ जदपि तज्यो उन बाद्य सो गलतैं जानि अरिद्धि। फिरफिर ले डार्यो गरैं परैं बनाये सिद्धि ॥ यह कहि नागल देव तब सब पिछली सुधि ध्याय। महाबीर प्रतिमा दई चंदन की बनवाय ॥ तीनकाल तिहिं पूजि पुनि अंतकाल निज जान। नाव चढाय पठाय सो दई तहां सुनि कान ॥ सिंध देस सौबीर मैं नगर बीतिभय नाम। नृपति उदायन निकट सो प्रतिमा गई ललाम ॥ प्रभावती नृप तिय तहां तब सो प्रतिमा पाय। लहि देवाधिपदेव सों लीनो सीस चढाय ॥ तीनकाल बिध तबसकल पूजन अरचन साज। साजि भक्ति सुभ भाव करि पूजै जिनवरराज ॥ रानी मांग्यौ एक दिन दासी सौं सितबास। तिन देख्यौ भ्रमदृष्टि करि पचरंग बसन सुपास ॥ तब रानी निज आउ कौं जानि अंत अनियास। चारित लैबौ धारि चित गई नृपति कै पास ॥ नृपति कह्यो तेरौ तहां ह्वैहै देवीरूप। मम सहाय कीजौ सुकहि आज्ञा दीनो भूप ॥ तब तिन चारित पाल पुनि मरि धरि देवीरूप। नृपन जतिन तपसीन कौं बोधन लगी अनूप ॥ कुबजा

दासी पुनि करै ता प्रतिमा कौ सेव। तहां देस गंधार तैं स्रावक आयो एव ॥ दुखी पस्यौ सो आइकै कीन्हीं कुवजा सेव। है अरोग गुटिका दए है दासी कौ एव ॥ एक भखै तौ नारि कौ होय कुरूप सरूप। दूजै इष्ट अभिष्ट तिहिं मिलै अदोष अनूप ॥ यह कहि सो स्रावक गयो दै गुटिका निज देस। तामैं दासी खाय इक भई कनकरंग भेस ॥ ता दिन तैं ताकौ पस्यौ सुवरनगुटिका नाम। नृपति चंडिप्रद्योत पुनि चित मैं चिंति सुवाम ॥ दूजौ गुटिकाहूं भख्यौ मन मैं होय सकाम। आयो चढ़ि गज अनल गिर सो नृप ललित ललाम ॥ दासी कौ प्रतिमा सहित गयो लेय निज देस। दूजो प्रतिमा धरि तहां चंडप्रद्योत नरेस॥ नृपति उदायन जानि सो कोपि सेनले संग। चल्यौ कल्यौ पुर तैं वल्यौ रल्यौ क्रोध अंग-अंग ॥ उत तैं चंडप्रद्योत नृप चढि धरि धायो आय। मारग मैं सन्मुख दुहूं मिले परस्पर धाय ॥ मच्यौ जुद्ध अति घोर करि सोर सुभट दुहुं ओर। लरे मरे पै नहिं मुरे जुरे जंग करि जोर ॥ अंत उदायन जै लही सही पराजय आनि। जीवत लीनौ बांधि नृप चंडद्योत बलवान॥ प्रतिमा लोप भई तहां फिरे आपने देस। मगमैं वरषा काल के रितु कौ भयो प्रवेस ॥ छौनि छावनी सौ छई कटकि अटकि तिहिं ठौर। जसकर लकासरपरिगयो जाय छयो छतिछौर॥ तहां पजूसन पर्व नृप चाह्यो करन उपास। असन हेत बोलन गयो लोग चंडनृप पास ॥ उन बिच संका भीति करि कही जनन सौं बात। मैंहूं कीनौं आज इत भूलै भखौं न भात॥ नृप उदायन सुनि सुबच तिहिं साधर्मी जान। खिमतखामना सुद्धमन करि कीनी तजि मान ॥ पग तैं निगड़ छुड़ाय तिहिं भूखन वसन पिन्हाय। नव निधि रिधि सिधि संग दैदीनौ देस पठाय ॥ ऐसैं स्रावक स्राविका साध साधवी जोय। छांडिकपट मिल परसपर दोख खिमावैं सोय॥ गुरुजन हूं तैं शिष्य प्रति दोष खिमावैं जान। ताहूकौ दृष्टांत अब सुनिलीजैदैकान ॥ सो कौसंबीनगरि जहं समोसरे भगवान। चंदसूर आये तहां चढि निज मूलविमान। मृगावती अरु चंदना सुभग साधवी सार। जे जिनबानी सुनि

तहां चलिआई पगधार ॥ चंदसूर निज थलगये प्रथम सांझ तैं सोय। म्टगावती जिनवचन करि मोहिरही तहं जोय ॥ गई गेह निज चंदना रही जाय तहं सोय। म्टगावती हूं चेति पुनि गई तहां तिहि जोय ॥ कह्यो भली कीनी न तैं रही तहां चित लाय। सुनि सो सहि निजचूक कहि लीनो खोरि खिमाय ॥ तातैं तत छिन तासुकैा उपज्यौ केवलग्यान। लख्यो चंदना निकट अहि तिमिर मांहि तिहिं थान ॥ लगी निवारन ताहि तब पूछ्यो चंदन बाल। काहि बिडारत को निकट कह्यौ भयानक व्याल ॥ ऐसैं निबिड तमिस्र मैं पस्यो कैान बिधि दीठ। भाख्यो केवलग्यान करि क्यों पायो सो ईठ ॥ दोषारोपन तुम कियो बिना दोषहूं मोहि। यों सहि कहि निज चूक कर जोरि खिमायो तोहि ॥ ताही तें पायो परम पद यह केवलग्यान। सुनि चंदना खिमाय पुनि तिनहू लह्यौ निदान ॥ ऐसैं कीजै सुद्धमन खिमतखामना सार। कपट कूड नहिं राखिये ज्यौं गुरुशिष्य कुम्हार ॥ कुंभकार ढिग साध कैां बालशिष्य इक जाय। नित फोडै घट तासु के कुंभकार दुख पाय ॥ बरजै तरजै तासुकैां पै नहिं हारै सोय। नित्त खिमावै दोष पुनि नित अपराधी होय ॥ ऐसो कपट खिमायवो कैान कामकौ होय। सासु जमाई ज्यों कियो त्यौं मिलि कीजै सोय ॥ इक तिय बिधवा लोभिनी क्टपनि बडी धनवंत। तिहिं संतत एकै सुता व्याही सुंदर कांत ॥ जमीजमाई निधिन सो क्टपन जमाई हेत। तनक लेसहू देय नहिं बडो प्रकत की प्रेत ॥ लोगन बहु दोषी तबै एक दिना धरिधीर। आमंत्र्यो जमआयहै जानि जमाई बीर। षीर खांड तिहिं परसि पुनि घीउ तनक सौ डारि। आप गई कछु काजकैां तिन लीनैा सब ढारि ॥ आय सास दुख पाय लखि बैठो जैवन संग। आप अपने मन मेंदुहूं भरे कपट रसरंग ॥ सास कहै जामात सैां बलि मो बेटी हेत। कबहुं बसनभूषन न तुम लाये करि हितहेत ॥ कहत जात यों बात अरु खैंचै घृत निजओर। वहऊ ऐसी बात कहि निज दिस लेय बहोर ॥ तुम काहू ति हिवार मैं मोहित न्यौता माय। यों कहि खैंचै दुऊ घृत निज

निज कहि दिस चाय ॥ जामाता तव समझिकैं लीनै दोष खिमाय ।
अलियागलिया कहि दयो सिगरो घीव मिलाय ॥ खीर खांड
छूत एक करि थालो सु कर उठाय । गयो पीय मुंह तकिरही
सास हिये पछिताय ॥ ऐसैं जिहिंकिहि भांति करि कपट छांडि
तजि क्रोध । अलियागलिया करि तजे कै तव कूड विरोध ॥

चौवीसवीं समाचारी ॥

तैसेंही गुरुदेव तैं शिष्य खिमावै दोष । थविर साध तैं साध-
लघु त्यौं ही लेय संतोष ॥ षिमै षिमावै और सौं करै न क्रोध
विरोध । सहै उपसमै सवन सौं जिनवर वचन प्रबोध ॥

पचीसवीं समाचारी ॥

तीन काल पोसाल निज पूजै करि पडलेह । दोयबार पूजै
तहां जाय साध के गेह ॥

छवीसवीं समाचारी ॥

दिसविदिसनकौ जान जौ साधहिं होय जरूर । थान जातीहिं
जताय तव जाय निकट कै दूर ॥ क्योंकि कदाचित साध सो तप-
करि निरबल देह । कै रुजकर मग मैं गिरै सोधि साध सो लेह ॥

सत्ताइसवीं समाचारी ॥

काहू काज विशेष करि वैद होत जो साध । जाय थान तजि
अवधि तिहिं जोजन पांच अवाध ॥ तहां जाय आवैं बहुर अपने
ही थल फेर । जौ न सकैं मग मैं रहैं ह्वां न रहैं निसबेर ॥

अठाईसवीं समाचारी ॥

समाचारि ये जे कहीं सत्ताइस तिन मांह । जे बिचार आचार
सब कहे धरम की छांह ॥ सूत्र अर्थ जिनवर बचन जिहिं बिधि
कियो बखान । थाप आचरै और जे तिनहि करावै जान ॥ दुहूं
लोक सोभा लहै महिमा बढै अपार । अंत मुक्ति तदभव लहै करै
सुद्ध विवहार ॥ दूजै वातीजै सुभव अधिक सात तैं नांह । करमबंध
सब तजि लहै परम मुक्ति की छांह ॥ ऐसैं जिनवर श्रीश्रमन महा-
बीर भगवंत । राजग्रही नगरी जहां सिगरी सभा सुसंत ॥ साध
साधवी श्राविका श्रावक देवी देव । साध सभा सुभ सजि तहां